RNI No. :BIHHIN/2013/53084

संपादक
अभिजीत कुमार, 9431006107
समाचार संपादक
अखिलेश कुमार, 9431089053
विशेष संपादक
मुकेश कुमार सिंह
सहायक संपादक
कोमल सुल्तानिया
राजनीतिक संपादक
प्रो. नीरज कुमार सिंह, 9431049337
संपादकीय सलाहकार
राजीव कुमार सिंह 9431210181
कॉन्सेप्ट एडिटर
अनूप कुमार शर्मा, 7004821433
राजनीतिक ब्यूरो
अमरेंद्र शर्मा 9899360011
प्रभाकर कुमार राय
प्रबंधक
अविनाश कुमार 8287266244
विधि सलाहकार
वीणा कुमारी जयसवाल, पटना हाई कोर्ट
बिहार ब्यूरो
अनूप नारायण सिंह 9546224277
क्राइम ब्यूरो
एसएन श्याम
मुख्य संवाददाता
सोनू सिन्हा,9431006189
आशीष कुमार
जिला ब्यूरो
बेगूसराय : विरेश कुमार सिंह, 9430415316
अमित सिंह, 9430595995
भागलपुर प्रमंडल : राजेश पंजिकार, (ब्यूरो चीफ), 9334114515
समस्तीपुर : राजेश कुमार
चांदन : अमोद कुमार दूबे : 8578934993
मुंगेर : सिद्धांत
कटोरिया : दीपक चौधरी, विशेष संवाददाता 9973077043
सुईया : चन्द्रशेखर मिश्र (संवाददाता)
बिहार-झारखंड : अभिनव कुमार 7903292877
दिल्ली : नवल वत्स, 9818901841
स्वाति, रंजीत कुमार
ग्रेटर नोएडा : गौरीशंकर, 8920215318
प्रधान कार्यालय
गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली मंदिर रोड़ नं.- 7, पटना - 800 020 (बिहार)
मो.- 9431006107, 9939815347
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक : अभिजीत कुमार गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली मंदिर रोड़ नं.- 7 पटना - 800 020 (बिहार) से प्रकाशित व एस. एम. ऑफसेट पंडुईकोठी लंगर टोली, डीएन दास लेन, पटना-800 004,से मुद्रित।

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के विवाद के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे। इसके लिए संपादक से सहमति जरूरी नहीं। पत्रिका से संबंधित सभी विवादों का निबटारा पटना उच्च न्यायालय से होगा।

संरक्षक

डॉ. संजय मयूख
राष्ट्रीय सह मीडिया प्रभारी भाजपा

जय जयराम सिंह
JJRS CONSTRUCTION PVT. LTD.

चर्चित बिहार

वर्ष : 9, अंक : 7, मार्च 2022, मूल्य : 25/- राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

17 क्यों नारी का उत्पीड़नक्यों नारी का उत्पीड़न

सृजन एवं समभाव के स्वामी हैं शिव 20

नदी के आंचल में है प्राचीन... 22

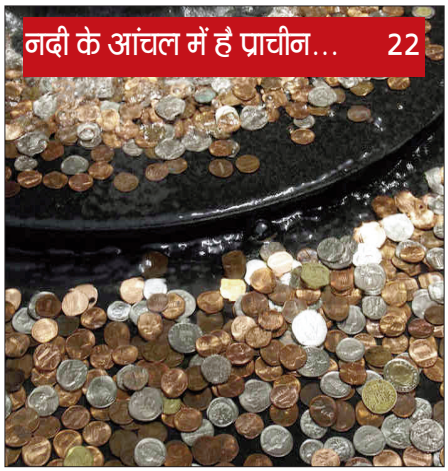

लैंगिक समानता बनाम सामाजिक... 24

फिलहाल मुश्किल है जस्ट... 26

लोकतंत्र का रंग

अभिजीत कुमार
संपादक
9431006107
cbhindi.news@gmail.com

बेहद लंबे और कर्कशभरे चुनाव मंथन के बाद जो परिणाम सामने आये हैं, वे इस देश में तमाम विसंगतियों के बावजूद लोक की लोकतंत्र में आस्था को दशार्ते हैं। मोदी व केंद्र सरकार के भविष्य के लिये निर्णायक माने जा रहे उत्तर प्रदेश में अपनी पूरी ताकत झोंकने के बाद भाजपा ने मनमाफिक परिणाम पाया है। जनता ने योगी की झोली फिर पांच साल के लिये भर दी है। साथ ही देश के सबसे बड़े राज्य ने 2024 के लिये मोदी की उम्मीदों को नई परवाज दी है। इसी तरह उत्तराखंड में तमाम मिथकों को किनारे कर भाजपा की वापसी हुई है, लेकिन एक बार फिर मौजूदा मुख्यमंत्री चुनाव हारा है। बहरहाल, इस छोटे पर्वतीय राज्य में राजनीतिक अस्थिरता की आशंकाएं खत्म हुई हैं। वहीं कांग्रेसी दिग्गज हरीश रावत के राजनीतिक भविष्य पर विराम चिन्ह लग गया है। ये चुनाव परिणाम कहीं न कहीं मोदी के कांग्रेस मुक्त भारत के जुमले को हकीकत में बदलते नजर आये हैं। कमोबेश, गोवा व मणिपुर में भी भाजपा के मनमाफिक हुआ है। उत्तराखंड के हिमालय से मणिपुर के पहाड़ों तक तथा समुद्रतट पर गोवा तक कामयाबी से भाजपा प्रफुल्लित है। मगर पंजाब के नतीजों ने आम आदमी पार्टी को नई ताकत और अरविंद केजरीवाल के राष्ट्रीय कद को नई ऊंचाई दी है। जैसा कि मतदान के बाद के सर्वेक्षणों में कहा जा रहा था कि पंजाब में आप की सरकार बन रही है, वैसा ही हुआ। लेकिन कामयाबी का संख्याबल इतना बड़ा होगा, इसका अनुमान चुनाव पंडितों को भी नहीं रहा होगा। वर्तमान व निवर्तमान मुख्यमंत्रियों को पंजाब के जनमानस ने जिस तरह सिरे से खारिज किया, उससे साफ है कि जनता बदलाव का मन बना चुकी थी। कांग्रेस में सत्ता संघर्ष का जैसा विद्रूप सामने आया उसने जागरूक पंजाबी मतदाताओं को बदलाव के लिये बाध्य किया। सही मायने में पंजाब के जागरूक मतदाता वर्ग ने परंपरागत राजनीतिक दलों को सिरे से खारिज कर दिया। कांग्रेस की अंदरूनी कलह ने पंजाब के संवेदनशील मतदाता को खासा खिन्न किया। महत्वाकांक्षाओं के आत्मघाती कदम ने कांग्रेस को कहीं का नहीं छोड़ा। तमाम विज्ञापनबाजी, आसमान से तारे तोड़ लाने के वायदे तथा मुफ्त के तमाम वायदों से भी नाराज मतदाताओं का मन नहीं बदला। जाहिर बात है कि देश के आम मिजाज से अलग प्रतिक्रिया देने वाले पंजाब का जनमानस देश के परंपरागत राजनीति दलों से लंबे समय से खिन्न चला आ रहा था। एक-आध बार के अपवाद को छोड़ दें तो वह हर पांच साल में बदलाव के पक्ष में फैसला देता रहा है। वर्ष 2014 में जब पूरे देश में मोदी लहर थी पंजाब के जनमानस ने आप को सार्थक प्रतिसाद देकर अपने प्रतिक्रियावादी रवैये से अवगत करा दिया था। यह स्पष्ट था कि पंजाब का मतदाता कांग्रेस को फिर से सत्ता में लौटाने के लिये बिल्कुल तैयार नहीं था। अकालियों की कारगुजारियां भी उसे रास नहीं आ रही थीं। साल भर चले किसान आंदोलन का झंडा पंजाब के किसान व सामाजिक संगठनों ने उठाये रखा। केंद्र सरकार के प्रति उनकी नाराजगी तीन विवादास्पद कृषि कानूनों को वापस लेने के बाद कम होने की कोई गुंजाइश नहीं थी। खेती संस्कृति में रचे-बसे पंजाब ने किसान आंदोलन में बड़ी कीमत चुकायी थी। उसके जख्म अभी हरे थे। ऐसे में भाजपा व कैप्टन अमरेंद्र के गठबंधन को वोट देने का तो सवाल ही नहीं था। वैसे भी भाजपा की नैया उसके सबसे पुराने सहयोगी अकाली दल के साथ ही पार उतरती रही है। ऐसे में आम आदमी पार्टी को आजमाने के लिये एक मौका देना मतदाताओं ने मुनासिब समझा। आम आदमी पार्टी के चुनावी एजेंडे ने भी किसी हद तक जनमानस को उद्वेलित किया। हकीकत यही है कि नशे के दलदल में धंसते पंजाब व युवा पीढ़ी के भटकाव की वजह ने पंजाब के जनमानस को राजनीतिक बदलाव के लिये प्रेरित किया। बेरोजगारी बड़ा मुद्दा रहा है, कोरोना काल के संकट ने इसे और विकराल किया। पंजाब के आर्थिक हालात से खिन्न होकर और खेती से होते मोहभंग ने बड़ी संख्या में युवाओं को पलायन के लिये बाध्य किया है। ऐसे में पंजाब के प्रतिक्रियावादी जनमानस ने परंपरागत राजनीतिक दलों से निराश होकर राजनीतिक परिदृश्य में कमोबेश नये राजनीतिक दल आम आदमी पार्टी पर भरोसा जताया। पंजाब के जनमानस का मिजाज रहा है कि वह अपने मनोभावों के अनुकूल बदलाव चाहता है। इस बार उसने पंजाब की बेहतरी के लिये एक नया कदम बढ़ा दिया। वहीं इस विशाल जनादेश ने आम आदमी पार्टी की जिम्मेदारी भी बढ़ा दी है।

उत्तरप्रदेश की सत्ता पर दोबारा काबिज हुए योगी

कोमल सुल्तानिया

पांच राज्यों के चुनावी नतीजे में कई संदेश छिपे हैं। इनमें यूपी, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर में बीजेपी सत्ता में वापसी कर रही है, जबकि पंजाब में आम आदमी पार्टी (आप) ने ऐतिहासिक जीत दर्ज की है। इन नतीजों का पहला संदेश तो यही है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता और बीजेपी की चुनावी मशीनरी का कोई मुकाबला नहीं है। दूसरा, 2014 लोकसभा चुनाव से मोदी के नेतृत्व में देश की राजनीति में बदलाव का जो सिलसिला शुरू हुआ, वह अभी तक जारी है। बीजेपी हिंदी पट्टी की पार्टी नहीं रही। वह मणिपुर से लेकर गोवा तक में अपना प्रभुत्व बार-बार स्थापित कर रही है। तीसरा, इस जीत में शीर्ष स्तर पर दमदार नेतृत्व के साथ केंद्र, राज्य स्तर पर कल्याणकारी योजनाओं, विकास के दावे, हिंदुत्व और ध्रुवीकरण बीजेपी के औजार साबित हुए हैं। चौथा, बीजेपी की वैचारिकी के सामने विपक्ष एक मजबूत आइडिया नहीं रख पाया है। यानी बीजेपी जिस तरह से देश की राजनीति बदल रही है, उसका विपक्ष के पास कोई जवाब नहीं है। पांचवां, पार्टी के पास व्यापक सामाजिक समर्थन और जनाधार है। खासतौर पर महिलाओं और पिछड़ी जातियों से उसे व्यापक समर्थन मिल रहा है। वह सिर्फ अगड़ी जातियों या ब्राह्मण-बनिया की पार्टी नहीं है। छठा, ममता बनर्जी, के चंद्रशेखर राव, एम के स्टालिन और कांग्रेस 2024 लोकसभा चुनाव से पहले विपक्षी दलों की जिस गोलबंदी के अभियान में लगे थे, अब वह कमजोर पड़ सकता है।

सातवां, यूपी में बहुमत के साथ सत्ता में वापसी से योगी आदित्यनाथ का कद पार्टी में बढ़ेगा। यह बात इसलिए दिलचस्प है क्योंकि चुनाव से कुछ समय पहले उन्हें मुख्यमंत्री पद से हटाए जाने की चर्चा ने काफी जोर पकड़ा था। एक वर्ग उन्हें पहले से राष्ट्रीय राजनीति में मोदी का उत्तराधिकारी मानता आया है। इस जीत के

बाद यह बात भी जोर पकड़ेगी। आठवां, आम आदमी पार्टी के दिल्ली में गवर्नेंस मॉडल को पंजाब के लोगों ने मंजूर किया है और पार्टी को उसे राज्य में लागू करने का मौका दिया है। पांच राज्यों के नतीजे यह भी बताते हैं कि बीजेपी के चुनावी आइडिया के बरक्स कम से कम पंजाब में लोगों ने आप के आइडिया को मंजूर किया, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली और पानी जैसी बुनियादी चीजें समाज के हर वर्ग तक पहुंचाने पर जोर है। इससे राष्ट्रीय राजनीति में आप का कद बढ़ेगा और वह गुजरात और हिमाचल प्रदेश में होने वाले आगामी चुनावों में भी अधिक ताकत के साथ उतरेगी। नौवां, लोग बार-बार कांग्रेस को नकार रहे हैं। क्या वाकई गांधी परिवार को अब पार्टी नेतृत्व छोड़ देना चाहिए? आने वाले दिनों में यह बात भी फिर से जोर पकड़ सकती है। यह भी लगता है कि कांग्रेस और अखिलेश यादव जैसे नेता अपनी पार्टी की पुरानी छवि से पीछा नहीं छुड़ा पा रहे। आखिरी बड़ा संदेश इन नतीजों का यह है कि 2024 लोकसभा चुनाव में फिलहाल बीजेपी का पलड़ा भारी लग रहा है। यानी मोदी तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री बन सकते हैं।

पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव के नतीजे बताते हैं कि बीजेपी के चुनावी आइडिया के बरक्स कम से कम पंजाब में लोगों ने आप के आइडिया को मंजूर किया, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली और पानी जैसी बुनियादी चीजें समाज के हर वर्ग तक पहुंचाने पर जोर है। इससे राष्ट्रीय राजनीति में आप का कद बढ़ेगा।

उत्तर प्रदेश समेत 4 राज्यों में भारतीय जनता पार्टी ने अपनी सत्ता बरकरार रखी है। उत्तर प्रदेश में पहली बार किसी पार्टी ने पूर्ण बहुमत के साथ सत्ता में वापसी की है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बड़े अंतर से जीत गए, लेकिन केशव प्रसाद मौर्य को हार मिली है । यूपी चुनाव में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एक लाख से अधिक मतों से चुनाव जीते हैं। ईसी के मुताबिक, यूपी सीएम ने गोरखपुर शहर विधानसभा क्षेत्र में निकटतम प्रतिद्वंद्वी सुभावती उपेंद्र शुक्ला को 1,03,390 मतों के भारी अंतर से हराया। इस बीच, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता के रथ पर सवार होकर भाजपा ने गुरुवार को दो तिहाई बहुमत के साथ उत्तराखंड में सत्ता में वापसी कर एक नया इतिहास रच दिया। यूपी में 37 साल बाद कोई सरकार लगातार दूसरी बार आई है।

साल 2017 में मुख्यमंत्री बनने के बाद योगी आदित्यनाथ विधान परिषद के सदस्य चुने गये थे। इसके पहले वह गोरखपुर संसदीय क्षेत्र से 1998 से लगातार पांच चुनावों में लोकसभा सदस्य निर्वाचित होते रहे। पहली बार गोरखपुर शहर से विधानसभा का चुनाव लड़ने वाले योगी आदित्यनाथ को 1,65,499 मत मिले जबकि सपा की सुभावती शुक्ला को 62,109 मत मिले। यहां योगी के खिलाफ आजाद समाज पार्टी के प्रमुख और भीम आर्मी के संस्थापक चंद्रशेखर आजाद को महज 7,640 मतों से संतोष करना पड़ा।

निर्वाचन आयोग की वेबसाइट से प्राप्त जानकारी के अनुसार विधानसभा चुनाव 2022 में समाजवादी पार्टी ने 111 सीटों, सहयोगी दल राष्ट्रीय लोकदल ने आठ सीटों, सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी (सुभासपा) ने छह सीटों पर जीत हासिल की है। भारतीय जनता पार्टी ने 255 सीटों पर जीत हासिल कर राज्य में सत्ता में शानदार वापसी की है। 2017 विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी ने 47 सीटों पर जीत हासिल की थी।

हार-जीत से मिली सीख

भाजपा गठबंधन दो-तिहाई बहुमत से सरकार बनाने की ओर बढ़ चला है। 37 साल बाद देश के सबसे बड़े सूबे में कोई पार्टी दोबारा सत्ता हासिल करने में सफल रही है। यह चुनाव उनके लिए आसान नहीं था। पांच साल आप कितना भी काम कर लीजिए, कुछ न कुछ कमी रह जाती है। उनके विपक्षियों को लगता था कि कोरोना की दूसरी लहर के समय नदियों में बहती लाशें और उनके किनारे दफनाए गए शव मतदाता के मन में रिसते हुए नासूर की तरह रच-बस गए हैं। वे इसका बदला चुकाएंगे।

यही नहीं, महंगाई, बेरोजगारी और खेतों को रौंदते छुट्टा जानवर विपक्ष को मुद्दा देने के लिए काफी लग रहे थे। अपनी ही पार्टी के तीन मंत्रियों और लगभग एक दर्जन विधायकों का विद्रोह घातक साबित हो सकता था।

हालांकि, यह यक्ष-प्रश्न तब भी कायम था कि क्या इतना भर भाजपा को हराने के लिए पर्याप्त है?

इसकी वजह यह थी कि पिछले सात वर्षों में भगवा दल के रणनीतिकारों ने अति-पिछड़ों के साथ दलितों के

बीच खासी दखल बनाई थी। उनमें टूट-फूट तो हो सकती थी, पर वे एकतरफा कहीं जाएंगे, इसकी संभावना शून्य थी। यही नहीं, कानून-व्यवस्था के मामले में योगी से सियासी रार रखने वाले लोग भी उनकी आलोचना करने से कतराते थे। वह अपने काम से ही नहीं, बल्कि चोले से भी बहुसंख्यक मतदाताओं के बड़े समूह को प्रभावित करते हैं।

क्या इतना दो-तिहाई बहुमत के जादुई आंकड़े तक पहुंचाने के लिए पर्याप्त था?

यह सब शायद इतना कारगर न होता, अगर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने खुद उत्तर प्रदेश की कमान न संभाली होती। आप काशी विश्वनाथ धाम के लोकार्पण से वहां के रोड-शो तक के दिन-रात याद कीजिए। इस शानदार जीत का तिलिस्म खुलता चला जाएगा। प्रधानमंत्री की टीम ने सूक्ष्मतापूर्वक अभियान को गढ़ा था। उन्होंने 32 सार्वजनिक चुनावी रैलियां कीं और 12 वर्चुअल सभाओं के माध्यम से लोगों को संबोधित किया पर परदे के पीछे बड़ी टीम काम कर रही थी। अमित शाह, जे.पी. नड्डा, धर्मेन्द्र प्रधान और अनुराग ठाकुर की गहरी नजर हर ओर थी।

उत्तर प्रदेश में मोदी का साथ देने के लिए योगी थे पर उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर में उतने कद्दावर नेताओं का अभाव था। उत्तराखंड में मुख्यमंत्री की हार के बावजूद दो-तिहाई बहुमत का श्रेय ह्यमोदी मैजिकह्न को जाता है। भाजपा गोवा और मणिपुर में भी सरकार गठित करने जा रही है।

अखिलेश यादव की मुसीबत भी यही थी। भारतीय जनता पार्टी के पास चेहरे, संसाधन, कार्यकताओं और आनुषंगिक संगठनों का सहयोग था। इसके उलट वह अकेले थे, फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी। उन्होंने अल्पसंख्यकों, अति-पिछड़ों और जाटों में ऐसा तालमेल बनाया, जिसने भगवा दल के कर्ताधताओं को शुरूआती दौर में हैरान कर दिया। उनके कंधों पर अपने वरिष्ठों द्वारा किए गए कुछ कामों का ऐसा बोझ था, जिससे हानि होने की संभावना थी। उन्होंने यह संदेश देने की हरचंद कोशिश की कि अब मैं दबाव-मुक्त हूं। यही नहीं, भाजपा के राष्ट्रवाद और हिंदुत्व के चक्रव्यूह में फंसने के बजाय उन्होंने कर्मचारी, कृषक, कामगार महिला और छात्र-वर्ग पर जोर दिया। अखिलेश यादव की सभाओं में उमड़ने वाली भीड़ से उनके प्रशंसक समझ बैठे कि ह्यभैयाह्न की बातें लोगों के दिल को छू रही हैं। तमाशा-पसंद हिन्दुस्तानियों के देश में सिर्फ भीड़ जीत की गारंटी नहीं हो सकती।

यहां मायावती की चर्चा जरूरी है। 2014 से लेकर अब तक जैसे-जैसे भाजपा चढ़ी है, वैसे-वैसे मायावती गिरती गई हैं। अब तक वह अपना वोट बैंक 20 से 25 प्रतिशत के बीच में रखने में कामयाब रहती थीं। इस बार इसमें फैसलाकुन गिरावट आई और वह महज एक सीट पर सिमट गई हैं। ऐसा अकारण नहीं हुआ। आगरा के एक नौजवान जाटव ने मुझे बताया था कि वह हमारे वोटों से वहां तक पहुंची हैं, पर टिकट सिर्फ अमीरों को देती हैं। हमारा उनकी पार्टी में कोई भविष्य नहीं है। मायावती चाहें, तो सबक ले सकती हैं, पर अब शायद देर हो चुकी है।

अब प्रियंका गांधी की बात। पार्टी का संगठन जर्जर और संसाधन सीमित हैं। इसके बावजूद वह लड़की हूं, लड़ सकती हूं के नारे के साथ जूझ पड़ीं। रणनीतिक तौर पर फैसला गलत नहीं था। सीएसडीएस और हिन्दुस्तान ने एक सर्वे के दौरान पाया है कि पिछले चार चुनावों के दौरान ग्रामीण महिलाओं के मत-प्रतिशत में शहरी महिलाओं के मुकाबले लगभग 15 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। औरतें अब हुक्मरानों की भाग्य विधाता हैं पर कांग्रेस यह नहीं समझ सकी कि चर्चा और चुनाव-विजय में फर्क होता है। समूचे देश में कांग्रेस की दुर्दशा इसका सबूत है।

पंजाब में आम आदमी पार्टी की धुआंधार जीत के बिना यह बातचीत निरर्थक होगी। अफसरी से सियासत में आए अरविंद केजरीवाल ने साबित कर दिया है कि वे राजनीतिक धूमकेतु नहीं, स्थायी नक्षत्र हैं। भाजपा और कांग्रेस के बाद आम आदमी पार्टी भी अब सत्तारोही दलों के उस क्लब में शामिल हो गई है, जो एक से अधिक राज्यों में हुकूमत करते हैं। पार्टी ने गोवा में भी दो सीटों के साथ खाता खोलने में सफलता हासिल की है। दस साल पुरानी पार्टी की यह यात्रा सम्मोहक है।

तय है, इस जनादेश ने सभी पार्टियों के समक्ष कुछ चुनौतियां, कुछ सबक रखे हैं। देखते हैं, वे इनसे क्या सीखते हैं।

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2022 के नतीजों से साफ है कि प्रदेश की जनता ने भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) पर एक बार फिर भरोसा जताया है. राज्य की 403 सीटों पर सात चरणों में मतदान के बाद अब प्रदेश की किस विधानसभा सीट पर किस उम्मीदवार ने जीत दर्ज की है तो हम आपको सभी सीटों की लिस्ट दे रहे हैं।

सीट	जीतने वाले प्रत्याशी	पार्टी	जीत का अंतर
आगरा कैन्टोनमेंट	डा0 जी एस धर्मेश	बीजेपी	48697
आगरा उत्तर	पुरूषोत्तम खण्डेलवाल	बीजेपी	112370
आगरा ग्रामीण	बेबी रानी मौर्य	बीजेपी	76608
आगरा दक्षिण	योगेन्द्र उपाध्याय	बीजेपी	56640
अजगरा	त्रिभुवन राम	बीजेपी	9160
अकबरपुर	राम अचल राजभर	सपा	12336
अकबरपुर-रनिया	प्रतिभा शुक्ला	बीजेपी	13417
आलापुर	त्रिभुवन दत्त	सपा	9383
अलीगंज	सत्यपाल सिंह राठौर	बीजेपी	3810
अलीगढ़	मुक्ता राजा	बीजेपी	12786
इलाहाबाद उत्तर	हर्षवर्धन बाजपेयी	बीजेपी	54883
इलाहाबाद दक्षिण	नन्द गोपाल गुप्ता नन्दी	बीजेपी	26182
इलाहाबाद पश्चिम	सिद्धार्थ नाथ सिंह	बीजेपी	29933
अमॉपुर	हरिओम	बीजेपी	43329
अमेठी	महाराजी प्रजापति	सपा	18096
अमृतपुर	सुशील कुमार शाक्य	बीजेपी	44686
अमरोहा	महबूब अली	सपा	71036
अनूपशहर	संजय कुमार शर्मा	बीजेपी	77623
आंवला	धर्मपाल सिंह	बीजेपी	18424
आर्य नगर	अमिताभ बाजपेई	सपा	7924
असमोली	पिंकी सिंह	सपा	25206
अतरौली	संदीप कुमार सिंह	बीजेपी	39324
अतरौलिया	डां0 संग्राम	सपा	17247
औराई	दीनानाथ भाष्कर	बीजेपी	1647
औरैया	गुड़िया कठेरिया	बीजेपी	22447
अयाह शाह	विकास गुप्ता	बीजेपी	13006
अयोध्या	वेद प्रकाश	बीजेपी	19990
आजमगढ़	दुर्गा प्रसाद यादव	सपा	16036
बाबागंज	विनोद कुमार	जेडीएल	15767
बबेरू	विशम्भर सिंह यादव	सपा	7393
बबीना	राजीव सिंह पारीछा	बीजेपी	44529
बछरावां	श्याम सुन्दर	सपा	2812
बदायूँ	महेश चन्द्र गुप्ता	बीजेपी	11179
बदलापुर	रमेश चन्द्र मिश्र	बीजेपी	1326
बागपत	योगेश धामा	बीजेपी	6733
बाह	रानी पक्षालिका सिंह	बीजेपी	24235
बहेड़ी	अताउर रहमान	सपा	3355
बहराइच	अनुपमा जायसवाल	बीजेपी	4078
बैरिया	जयप्रकाश अंचल	सपा	12951
बक्शी का तालाब	योगेश शुक्ला	बीजेपी	27788
बालामऊ	रामपाल वर्मा	बीजेपी	26244
बलदेवपूरन	प्रकाश	बीजेपी	25255
बलहा (अ.जा.)	सरोज सोनकर	बीजेपी	16573
बलिया नगर	दया शंकर सिंह	बीजेपी	26239
बलरामपुर	पल्टूराम	बीजेपी	10971
बांदा	प्रकाश द्विवेदी	बीजेपी	15214
बांगरमऊ	श्रीकान्त कटियार	बीजेपी	15793
बांसडीह	केतकी सिंह	बीजेपी	21352
बासगावं	डा0 विमलेश पासवान	बीजेपी	32309
बांसी	जय प्रताप सिंह	बीजेपी	20340
बारा	वाचस्पति	अपना दल (एस)	12524
बाराबंकी	धर्मराज सिंह यादव	सपा	35050
बरौली	ठाकुर जयवीर सिंह	बीजेपी	90645
बड़ौत	कृष्णपाल मलिक	बीजेपी	315
बरेली	डा0 अरुण कुमार	बीजेपी	32320
बरेली कैन्टोनमेंट	संजीव अग्रवाल	बीजेपी	10768
बरहज	दीपक कुमार मिश्र	बीजेपी	16861
बढ़ापुर	कुँवर सुशान्त सिंह	बीजेपी	14345

बरखेड़ा	जयद्रथ उर्फ प्रवक्तानन्द	बीजेपी	81472
बस्ती सदर	महेंद्र नाथ यादव	सपा	1779
बेहट	उमर अली खान	सपा	37880
बेल्थरा रोड	हंसु रामएस	बीएसपी	5514
भदोही	जाहीद	सपा	4885
भगवन्त नगर	आशुतोष शुक्ल	बीजेपी	43010
भरथना	राघवेन्द्र कुमार सिंह	सपा	7559
भाटपार रानी	सभाकुंवर	बीजेपी	18082
भिनगा इ	न्द्राणी देवी	सपा	13574
भोगनीपुर	राकेश सचान	बीजेपी	11893
भोजीपुरा	शहजिल इस्लाम अंसारी	सपा	9409
भोजपुर	नागेन्द्र सिंह राठौर	बीजेपी	27458
भोगॉव	रामनरेश अग्निहोत्री	बीजेपी	4767
बिधूना	रेखा वर्मा	सपा	7765
बिजनौर	सुचि	बीजेपी	1445
बीकापुर	अमित सिंह चौहान	बीजेपी	5560
बिलारी	मौहम्मद फहीम इरफान	सपा	7610
बिलासपुर	बल्देव सिंह औलख	बीजेपी	307
बिलग्राम-मल्लांवा	आशीष कुमार सिंह	बीजेपी	24890
बिल्हौर	मोहित सोनकर	बीजेपी	42351
बिल्सी	हरीश चन्द्र	बीजेपी	25115
बिन्दकी	जय कुमार सिंह जैकी	अपना दल	3797
बीसलपुर	विवेक कुमार वर्मा	बीजेपी	50409
बिसौली	आशुतोष मौर्य उर्फ राजू	सपा	1834
बिसवां	निर्मल वर्मा	बीजेपी	10478
बिथरी चैनपुर	डॉ० राघवेन्द्र शर्मा	बीजेपी	15841
बिठूर	अभिजीत सिंह	बीजेपी	21073
बुढ़ाना	राजपाल सिंह बालियान	आरएलडी	28310
बुलंदशहर	प्रदीप कुमार चौधरी	बीजेपी	25830
कैम्पियरगंज	फतेह बहादुर	बीजेपी	42656
चायल	पूजा पाल	सपा	13209
चकिया	कैलाश	बीजेपी	9251
चमरव्वा	नसीर अहमद खां	सपा	34290
चंदौसी	गुलाब देवी	बीजेपी	35367
चाँदपुर	स्वामी ओइमवेश	सपा	234
चरखारी	ब्रजभूषण राजपूत	बीजेपी	41881
चरथावल	पंकज कुमार मलिक	सपा	5334
चौरी-चौरा	सरवन कुमार निषाद	बीजेपी	41127
छानबे	राहुल प्रकाश कोल	अपना दल	38113
छपरौली	अजय कुमार	आरएलडी	29508
छर्रा	रवेन्द्र पाल सिंह	बीजेपी	24327
छाता	लक्ष्मी नारायण	बीजेपी	48948
छिबरामऊ	अर्चना पाण्डेय	बीजेपी	1111
चिल□लूपार	राजेश त्रिपाठी	बीजेपी	21645
चित्रकूट	अनिल कुमार अनिल	सपा	20876
चुनार	अनुराग सिंह	बीजेपी	47614
कर्नलगंज	अजय	बीजेपी	35472
ददरौल	मानवेन्द्र सिंह	बीजेपी	9701
दादरी	तेजपाल सिंह नागर	बीजेपी	138218
दरियाबाद	सतीश चन्द्र शर्मा	बीजेपी	32402
दातागंज	राजीव सिंह	बीजेपी	9476
डिबाई	चन्द्रपाल सिंह	बीजेपी	68025
देवबन्द	ब्रिजेश बीजेपी	7104	
देवरिया	शलभ मणि त्रिपाठी	बीजेपी	40655
धामपुर	अशोक कुमार राणा	बीजेपी	203
धनौरा	राजीव कुमार	बीजेपी	11425
धनघटा	गणेश चंद्र बीजेपी	10553	

धौलाना	धर्मेश सिंह तोमर	बीजेपी	12628
धौरहरा	विनोद शंकर	बीजेपी	24610
दिबियापुर	प्रदीप कुमार यादव	सपा	473
दीदारगंज	कमलकान्त	सपा	13561
डुमरियागंज	सैय्यदा खातून	सपा	771
दुद्धी	रामदुलार	बीजेपी	6297
एटा	विपिन कुमार डेविड	बीजेपी	17247
इटावा	सरिता	बीजेपी	3984
एत्मादपुर	डा० धर्मपाल सिंह	बीजेपी	47924
फरीदपुर	प्रो0 श्याम बिहारी लाल	बीजेपी	2921
फरुर्खाबाद	मेजर सुनील दत्त द्विवेदी	बीजेपी	39316
फतेहाबाद	छोटे लाल वर्मा	बीजेपी	53235
फतेहपुर	चन्द्र प्रकाश	सपा	8601
फतेहपुर सीकरी	बाबूलाल	बीजेपी	47269
फाज़िलनगर	सुरेन्द्र कुमार कुशवाहा	बीजेपी	45014
फिरोजाबाद	मनीष असीजा	बीजेपी	32955
गैंसड़ी	डा0 शिव प्रताप यादव	सपा	5837
गंगोह	किरत सिंह	बीजेपी	23449
गरौठा	जवाहर लाल राजपूत	बीजेपी	33662
गढ़मुक्तेश्वर	हरेन्द्र सिंह	बीजेपी	26306
गौरा	प्रभात कुमार वर्मा	बीजेपी	22974
गौरीगंज	राकेश प्रताप सिंह	सपा	6963
घाटमपुर	सरोज	अपना दल	14474
गाजियाबाद	अतुल गर्ग	बीजेपी	105537
गाजीपुर	जैकिशन	सपा	1692
घोरावल	डा० अनिल कुमार मौर्य	बीजेपी	23922
घोसी	दारा सिंह चौहान	सपा	22216
गोकरननाथ	अरविन्द गिरि	बीजेपी	29294
गोंडा	प्रतीक भूषण सिंह	बीजेपी	6699
गोपालपुर	नफीस अहमद	सपा	24307
गोपामऊ	श्याम प्रकाश	बीजेपी	7998
गोरखपुर ग्रामीण	विपिन सिंह	बीजेपी	24070
गोरखपुर शहर	आदित्यनाथ	बीजेपी	103390
गोशाईगंज	अभय सिंह	सपा	13079
गोवर्धन	मेघश्याम	बीजेपी	42507
गोविन्दनगर	सुरेन्द्र मैथानी	बीजेपी	80896
गुन्नौर	रामखिलाड़ी सिंह	सपा	29529
ज्ञानपुर	विपुल दुबे	निषाद पार्टी	6231
हैदरगढ़	दिनेश रावत	बीजेपी	25691
हमीरपुर	डा0 मनोज कुमार	बीजेपी	25485
हण्डिया	हाकिम लाल बिन्द	सपा	3543
हापुड़	विजयपाल (आढ़ती)	बीजेपी	7034
हरचंदपुर	राहुल राजपूत	सपा	14489
हरदोई	नितिन अग्रवाल	बीजेपी	42411
हरगांव	सुरेश राही	बीजेपी	38160
हरैया	अजय सिंह	बीजेपी	18329
हसनपुर	महेन्द्र	बीजेपी	22382
हस्तिनापुर	दिनेश	बीजेपी	7312
हाटा	मोहन	बीजेपी	59365
हाथरस	अन्जुला सिंह माहौर	बीजेपी	100856
हुसैनगंज	ऊषा मौर्या सपा	25181	
इगलास	राजकुमार सहयोगी	बीजेपी	59163
इसौली	मो0 ताहिर खान	सपा	269
इटवा	माता प्रसाद पाण्डेय	सपा	1662
जगदीशपुर	सुरेश कुमार	बीजेपी	22824
जहानाबाद	राजेन्द्र सिंह पटेल	बीजेपी	18192
जखनिया	बेदी	एसबीएसपी	36865

जलालाबाद	हरि प्रकाश वर्मा	बीजेपी	4572
जलालपुर	राकेश पाण्डेय	सपा	13630
जलेसर	संजीव कुमार	बीजेपी	4441
जंगीपुर	विरेन्द्र कुमार यादव	सपा	35063
जसराना	सचिन यादव	सपा	836
जसवन्तनगर	शिवपाल सिंह यादव	सपा	90979
जौनपुर	गिरीश चन्द्र यादव	बीजेपी	8052
जेवर	धीरेन्द्र सिंह	बीजेपी	56315
झांसी नगर	रवि शर्मा	बीजेपी	76353
कादीपुर	राजेश कुमार गौतम	बीजेपी	25723
कायमगंज	डा० सुरभी	अपना दल	18543
कैराना	नाहिद हसन	सपा	25887
कैसरगंज	आनन□द कुमार	सपा	7711
कालपी	विनोद चतुर्वेदी	सपा	2816
कल्याणपुर	नीलिमा कटियार	बीजेपी	21535
कन्नौज	असीम अरूण	बीजेपी	6090
कानपुर कैन्टोनमैंट	मोहम्मद हसन	सपा	19987
कांठ	कमाल अख्तर	सपा	43178
कपिलवस्तु	श्यामधनी राही	बीजेपी	30939
कप्तानगंज	कविन्द्र चौधरी	सपा	24179
करछना	पियूष रंजन निषाद	बीजेपी	9328
करहल	अखिलेश यादव	सपा	67504
कासगंज	देवेन्द्र सिंह	बीजेपी	46265
कास्ता	सौरभ सिंह	बीजेपी	13817
कटेहरी	लालजी वर्मा	सपा	7696
कटरा	वीर विक्रम सिंह	बीजेपी	357
कटरा बाजार	बावन सिंह ब	ीजेपी	18457
केराकत (अ.जा.)	तुफानी सरोज	सपा	9844
खड्डा	विवेकानन्द पाण्डेय	निषाद पार्टी	41451
खागा	कृष्णा पासवान	बीजेपी	5509
खैर	अनूप सिंह	बीजेपी	74341
खजनी	श्रीराम चौहान	बीजेपी	37101
खलीलाबाद	अंकुर तिवारी	बीजेपी	12622
खतौली	विक्रम सिंह ब	ीजेपी	16345
खेरागढ़	भगवान सिंह कुशवाहा	बीजेपी	36497
खुर्जा	मीनाक्षी सिंह	बीजेपी	67084
किदवई नगर	महेश कुमार त्रिवेदी	बीजेपी	37760
किशनी	इंजी0 बृजेश कठेरिया	सपा	19151
किठौर	ाहिद मंजूर	सपा	2180
कोल	अनिल पाराशर	बीजेपी	5028
कोरांव	राज मणि	बीजेपी	24487
कुण्डा र	घुराज प्रताप सिंह	जेडीएल	30315
कुन्दरकी	जियाऊर्रहमान	सपा	43162
कुर्सी	साकेन्द्र प्रताप	बीजेपी	217
कुशीनगर	पंचानन्द पाठक	बीजेपी	34790
लहरपुर	अनिल कुमार वर्मा	सपा	13155
लखीमपुर	योगेश वर्मा	बीजेपी	20578
लालगंज	बेचई	सपा	14733
ललितपुर	रामरतन कुशवाहा	बीजेपी	107215
लम्भुआ	सीताराम वर्मा	बीजेपी	9533
लोनी	नन्दकिशोर	बीजेपी	8676
लखनउ कैन्टोनमेंट	ब्रजेश पाठक	बीजेपी	39512
लखनऊ मध्य	रविदास मेहरोत्रा	सपा	10935
लखनऊ पूर्व	आशुतोष टंडन	बीजेपी	68731
लखनऊ उत्तर	डॉ. नीरज बोरा	बीजेपी	33953
लखनऊ पश्चिम	अरमान खान	सपा	8184
मछलीशहर	डॉ रागिनी	सपा	8484

माधौगढ़	मूल चन्द्र सिंह	बीजेपी	34974
मधुबन	राम बिलाश चौहान	बीजेपी	4448
महादेवा	दूधराम	एसबीएसपी	5495
महराजगंज	जयमंगल	बीजेपी	76903
महराजपुर	सतीश महाना	बीजेपी	82261
महसी	सुरेश्वर सिंह	बीजेपी	42684
महमूदाबाद	आशा मौर्य	बीजेपी	5222
महोबा	राकेश कुमार गोस्वामी	बीजेपी	43447
महोली	शशांक त्रिवेदी	बीजेपी	12172
मैनपुरी	जयवीर सिंह	बीजेपी	6766
मझवां	डा0 विनोद कुमार बिन्द	निषाद पार्टी	33587
मल्हनी	लकी यादव	सपा	17527
मलिहाबाद	जय देवी	बीजेपी	7745
मानिकपुर	अविनाश चन्द्र द्विवेदी	अपना दल (एस)	1048
मंझनपुर	इन्द्रजीत सरोज	सपा	23878
मनकापुर	रमापति शास□त्री	बीजेपी	42349
मांट	राजेश चौधरी	बीजेपी	9580
मारहरा	वीरेन्द्र सिंह लोधी	बीजेपी	17609
मड़िहान	रमा शंकर सिंह	बीजेपी	62911
मडियाहूं	डा० आर०के० पटेल	अपना दल (एस)	1206
मटेरा	मारिया	सपा	10428
मथुरा	श्रीकान्त शर्मा	बीजेपी	109803
मऊ	अब्बास अंसारी	एसबीएसपी	38116
मऊरानीपुर	रश्मि आर्य	अपना दल (एस)	58595
मीरापुर	चंदन चौहान	राष्ट्रीय लोक दल	27380
मीरगंज	डा० डी० सी० वर्मा	बीजेपी	32480
मेरठ	रफीक अंसारी	सपा	26065
मेरठ कैन्टोनमेंट	अमित अग्रवाल	बीजेपी	118072
मेरठ दक्षिण	डा0 सोमेन्द्र सिंह तोमर	बीजेपी	7942
मेहनगर	पूजा	सपा	14149
मेहनौन	विनय कुमार	बीजेपी	23218
महरौनी	मनोहर लाल	बीजेपी	110451
मेजा	संदीप सिंह	सपा	3439
मेंहदावल	अनिल कुमार त्रिपाठी	निषाद पार्टी	5223
मिलक	राजबाला सिंह	बीजेपी	5912
मिल्कीपुर	अवधेश प्रसाद	सपा	13338
मिजार्पुर	रत्नाकर मिश्रा	बीजेपी	39876
मिश्रिख	रामकृष्ण भार्गव	बीजेपी	11465
मोदी नगर	डॉ० मन्जू शिवाच	बीजेपी	34619
मोहम्मदाबाद	सुहेब उर्फ मन्नु अन्सारी	सपा	18759
मोहम्मदी	लोकेन्द्र प्रताप सिंह	बीजेपी	4871
मोहान	बृजेश कुमार	बीजेपी	43179
मोहनलालगंज	अमरेश कुमार	बीजेपी	16548
मुरादाबाद नगर	रितेश कुमार गुप्ता	बीजेपी	782
मुरादाबाद ग्रामीण	मौ नासिर	सपा	56820
मुबारकपुर	अखिलेश	सपा	29103
मुगलसराय	रमेश जायसवाल	बीजेपी	14921
मुहम्मदाबाद- गोहना (अ.जा.)	राजेन्द्र कुमार	सपा	26649
मुंगरा	बादशाहपुर पंकज	सपा	5230
मुरादनगर	अजीत पाल त्यागी	बीजेपी	97095
मुजफ्फरनगर	कपिल देव अग्रवाल	बीजेपी	18694
नगीना	मनोज कुमार पारस	सपा	26451
नजीबाबाद	तसलीम अहमद	सपा	23770
नकुड़	मुकेश चौधरी	बीजेपी	315
नानपारा	राम निवास वर्मा	अपना दल	12184
नरैनी	ओममणी वर्मा	बीजेपी	6719
नौगावां सादात	समरपाल सिंह	सपा	6540

नौतनवा	ऋषि	निषाद पार्टी	15331
नवाबगंज	डा0 एम0 पी0 आर्य	बीजेपी	9237
नहटौर	ओमकुमार	बीजेपी	258
निघासन	शशांक वर्मा	बीजेपी	41009
निजामाबाद	आलम बदी	सपा	34187
नोएडा	पंकज सिंह	बीजेपी	181513
नूरपुर	राम अवतार सिंह	सपा	6065
ओबरा	संजीव कुमार	बीजेपी	26442
उरई	गौरी शंकर	बीजेपी	37648
पडरौना	मनीष कुमार	बीजेपी	42008
पलिया	हरविन्दर कुमार साहनी	बीजेपी	38129
पनियरा	ज्ञानेन्द्र सिंह	बीजेपी	61428
पथरदेवा	सूर्य प्रताप शाही	बीजेपी	28681
पटियाली	नादिरा सुल्तान	सपा	4001
पट्टी	राम सिंह	सपा	22051
पयागपुर	सुभाष त्रिपाठी	बीजेपी	12056
फाफामऊ	गुरु प्रसाद मौर्य	बीजेपी	14324
फरेन्दा	वीरेन्द्र चौधरी	कांग्रेस	1246
फेफना	संग्राम सिंह	सपा	19354
फूलपुर पवई	रमाकांत	सपा	25306
फूलपुर	प्रवीण पटेल	बीजेपी	2732
पीलीभीत	संजय सिंह गंगवार	बीजेपी	6970
पिन्ड्रा	अवधेश कुमार सिंह	बीजेपी	35559
पिपराइच	महेन्द्र पाल सिंह	बीजेपी	65357
पुवायाँ	चेतराम	बीजेपी	51578
प्रतापगढ़	राजेंद्र कुमार	बीजेपी	25063
प्रतापपुर	विजमा यादव	सपा	10956
पूरनपुर	बाबूराम	बीजेपी	26576
पुरकाजी	अनिल कुमार	राष्ट्रीय लोक दल	6532
पुरवा	अनिल कुमार सिंह	बीजेपी	31061
राय बरेली	अदिति सिंह	बीजेपी	7175
राम नगर	फरीद महफूज किदवई	सपा	261
रामकोला	विनय प्रकाश गोंड	बीजेपी	72543
रामपुर	मोहम्मद आजम खां	सपा	55141
रामपुर कारखाना	सुरेन्द्र चौरसिया	बीजेपी	14670
रामपुर खास	आराधना मिश्रा, मोना	कांग्रेस	14741
रामपुर मनिहारान	देवेन्द्र कुमार निम	बीजेपी	20593
रानीगंज	राकेश कुमार वर्मा	सपा	2649
रसड़ा	उमाशंकर सिंह	बसपा	6583
रसूलाबाद	पूनम संखवार	बीजेपी	21512
राठ	मनीषा	बीजेपी	61979
राबर्ट्सगंज	भूपेश चौबे	बीजेपी	5621
रोहनियां	डॉ0 सुनील पटेल	अपना दल	46472
रूदौली	रामचन्द्र यादव	बीजेपी	40616
रूधौली	राजेन्द्र प्रसाद चौधरी	सपा	15226
रूद्रपुर जयप्रकाश निषाद		बीजेपी	41936
सादाबाद	प्रदीप कुमार सिंह	आरएलडी	6437
सदर	राज प्रसाद उपाध्याय	बीजेपी	15754
सफीपुर	बम्बा लाल	बीजेपी	34132
सगड़ी	हृदय नारायण सिंह पटेल	सपा	22515
सहजनवा	प्रदीप शुक्ला	बीजेपी	43406
सहारनपुर	आशु मलिक	सपा	30745
सहारनपुर नगर	राजीव गुम्बर	बीजेपी	7434
सहसवान	ब्रजेश यादव	सपा	13945
साहिबाबाद	सुनील कुमार शर्मा	बीजेपी	214835
सैदपुर	अंकित भारती	सपा	36635
सैयदराजा	सुशील सिंह	बीजेपी	10917

सकलडीहा	प्रभुनारायण यादव	सपा	16661
सलेमपुर	बिजयलक्ष्मी गौतम	बीजेपी	16608
सलोन	अशोक कुमार	बीजेपी	2111
सम्भल	इकबाल महमूद	सपा	41697
साण्डी	प्रभाष कुमार	बीजेपी	9233
सण्डीला	अलका सिंह	बीजेपी	37103
सरधना	अतुल प्रधान	सपा	18200
सरेनी	देवेन्द्र प्रताप सिंह	सपा	3807
सरोजनीनगर	राजेश्वर सिंह	बीजेपी	56186
सवायजपुर	माधवेन्द्र प्रताप सिंह	बीजेपी	25687
सेवापुरी	नील रतन सिंह	बीजेपी	22531
सेवता	ज्ञान तिवारी	बीजेपी	20281
शाहाबाद	रजनी तिवारी	बीजेपी	6479
शाहगंज	रमेश	निषाद पार्टी	719
शाहजहांपुर	सुरेश कुमार खन्ना	बीजेपी	9313
शामली	प्रसन्न कुमार	आरएलडी	7107
शेखूपुर	हिमान्शु यादव	सपा	6100
शिकारपुर	अनिल कुमार	बीजेपी	55683
शिकोहाबाद	मुकेश वर्मा सपा	9328	
शिवपुर	अनिल राजभर	बीजेपी	27687
शोहरतगढ़	विनय वर्मा अपना दल (एस)		24463
श्रावस्ती	राम फेरन	बीजेपी	1457
सिधौली	मनीष रावत	बीजेपी	9716
सिकन्दरपुर	जियाउद्दीन रिजवी	सपा	11855
सिकन्दरा	अजीत सिंह पाल	बीजेपी	31567
सिकन्दरा राऊ	बीरेन्द्र सिंह राणा	बीजेपी	8104
सिकन्दराबाद	लक्ष्मी राज	बीजेपी	29343
सिराथू डा0	पल्लवी पटेल	सपा	7337
सिरसागंज	सर्वेश सिंह	सपा	8805
सीसामऊ	हाजी इरफान सोलंकी	सपा	12266
सिसवा	प्रेमसागर पटेल	बीजेपी	62731
सीतापुर	राकेश राठौर	बीजेपी	1253
सिवालखास	गुलाम मौहम्मद	आरएलडी	9182
सोरांव	गीता शास्त्री (पासी)	सपा	5590
श्रीनगर	मंजू त्यागी	बीजेपी	17608
स्वार	मो अब्दुल्ला आजम खांसपा		61103
सुल्तानपुर	विनोद सिंह	बीजेपी	1009
स्याना	देवेन्द्र सिंह लोधी	बीजेपी	89657
तमकुही राज	असीम कुमार	बीजेपी	66472
टाण्डा	राम मूर्ति वर्मा	सपा	32097
तरबगंज	प्रेम नरायन पाण्डेय	बीजेपी	53690
ठाकुरद्वारा	नवाब जान	सपा	19684
थाना भवन	अशरफ अली खान	आरएलडी	10806
तिलहर	सलोना कुशवाहा	बीजेपी	13277
तिलोई	मयंकेश्वर शरण सिंह	बीजेपी	27829
तिन्दवारी	रामकेश निषाद	बीजेपी	28425
तिर्वा	कैलाश राजपूत	बीजेपी	4608
तुलसीपुर	कैलाश नाथ	बीजेपी	35781
टूण्डला	प्रेम पाल सिंह धनगर	बीजेपी	47691
ऊँचाहार	मनोज कुमार पाण्डेय	सपा	6621
उन्नाव	पंकज गुप्ता	बीजेपी	31128
उतरौला	रामप्रताप वर्मा	बीजेपी	21769
वाराणसी कैन्टोनमेंट	सौरभ श्रीवास्तव	बीजेपी	86844
वाराणसी उत्तर	रवीन्द्र जायसवाल	बीजेपी	40776
वाराणसी दक्षिण	डॉ. नीलकण्ठ तिवारी	बीजेपी	10722
विश्वनाथगंज	जीत लाल अपना दल (एस)		48052
जफराबाद	जगदीश नरायण	एसबीएसपी	6292

बिहार विधानपरिषद में अकेले ही सत्ता पक्ष का छक्का छुड़ा रहे हैं राजद वाले सुनील कुमार सिंह

अनूप नारायण सिंह

राजद के विधान पार्षद एवं बिस्कोमान चेयरमैन सुनील कुमार सिंह अकेले ही आंकड़ों के दम पर बिहार विधान परिषद के मौजूदा बजट सत्र में सत्ता पक्ष के पसीने छुड़ा रहे है। सुनील कुमार सिंह के तथ्यपरक सवालों से परेशान बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भी अप्रत्यक्ष रूप से उन्हें कई बार धमकी दे चुके हैं जब मुख्यमंत्री को लगता है कि सुनील कुमार सिंह उन पर भारी पड़ने लगे हैं तथा उनके प्रश्नों का जवाब नहीं है तो वे सीधे बिस्कोमान की जांच कराने और व्यक्तिगत बात पर आ जाते हैं। वहां भी सुनील कुमार सिंह ताल ठोक देते हैं बिहार विधान परिषद में सुनील कुमार सिंह और मुख्यमंत्री के बीच सवाल जवाबों की तल्खी को देखने के लिए सदस्य भी लालायित होते हैं सोशल मीडिया पर कई वीडियो वायरल हो रहे हैं जिसमें सत्ता पक्ष पर सुनील कुमार सिंह सदैव भारी पर जा रहे हैं। सूत्र बताते हैं कि सुनील कुमार सिंह के प्रश्नों से बचने के लिए जिस विभाग का जवाब होता है उसके मंत्री पूरी तैयारी करके आते हैं फिर भी सवालों के बीच फंसकर रह जाते हैं। शिक्षा कृषि कानून व्यवस्था सभी विषयों पर इन दिनों तथ्यों के जादूगर के रूप में राजद विधान पार्षद सुनील कुमार सिंह की छवि बनी है। राजनीति में आने वाले सदन के सदस्यों के लिए भी सुनील कुमार सिंह अनुकरणीय है सवाल तो तल्ख होते है पर संसदीय मयार्दा कभी भी लक्ष्मण रेखा को नहीं लांघती है। बिहार विधान परिषद में सुनील कुमार सिंह जिस विषय पर बोलने खड़े हो जाते हैं सत्ता पक्ष के माथे पर पसीना आना लाजमी है। सुनिल कुमार सिंह बिस्कोमान के चेयरमैन है।साथ ही राजद के विधान पार्षद भी हैं और पार्टी के प्रदेश कोषाध्यक्ष भी। राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव के अत्यंत विश्वास तंवर करीबी लोगों में पहले पायदान पर बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी के मुंह बोले भाई हैं अपने भाइयों से अनबन के बाद राबड़ी देवी इन्हे ही राखी बांधती है छपरा जिले के डुमरी बुजुर्ग के रहने वाले हैं लंबे वक्त से राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव और उनके परिवार के करीबी रहे है।इनकी चर्चा आज कई कारणों से हो रही है सबसे बड़ा कारण है राजद में सबसे विश्वसनीय चेहरा बनकर सामने आए है।राजपूत जाति से आते हैं इस कारण से राजद में राजपूत राजनीति के एक बड़े धूरी भी हैं रामा सिंह लवली आनंद चेतन आनंद से लेकर दर्जन भर से ज्यादा बड़े राजपूत चेहरे को राजद में शामिल करवा चुके हैं सुनील कुमार सिंह की सबसे बड़ी खासियत है निष्ठावान होना जिस व्यक्ति जिस पार्टी जिस विचारधारा के हैं सदैव उसी में लगे रहते हैं कौन क्या करता है उससे कोई मतलब इन्हें नहीं रहता है पर बिहार की राजनीति बिहार की जमीनी हकीकत से खुद को सदैव अपडेट रखते हैं विधान परिषद में जब बोलते हैं तो सत्ता पक्ष के पसीने छूट जाते हैं तथ्यो की विकिपीडिया हैं सुनील कुमार सिंह।बिस्कोमान के लंबे वक्त से चेयरमैन है इस कारण से कृषि संबंधी जानकारियां इनके पास बहुत सारी है देश के कई बड़े सहकारी संस्थाओं में भी यह उच्च पदों पर हैं। सुनील कुमार सिंह की चर्चा इन दिनों कुछ ज्यादा ही हो रही है और यह चर्चा हो रही है सारण लोकसभा क्षेत्र से इनके उम्मीदवार बनने को लेकर सारण लालू परिवार का सबसे सेफ जोन रहा है पर लालू प्रसाद यादव के बाद उनके परिवार का कोई दूसरा सदस्य सारण सीट पर खड़ा नहीं हुआ। इस बार इस सीट पर सुनील कुमार सिंह को क्षेत्र के लोग और राजनीतिक जानकार चुनाव जिताऊ उम्मीदवार बता रहे हैं हालांकि खुद सुनील कुमार सिंह इस मुद्दे पर कुछ भी कहने से बचते हैं उनका कहना है कि पार्टी और संगठन से बड़ा कोई नहीं है वह किसी पद पर रहे या नहीं रहे 24 घंटे पार्टी की सेवा में तत्पर हैं पार्टी जो भी उन्हें जिम्मेवारी दिया है आगे भी देगा उसका पूरी कर्तव्य निष्ठा से निर्वहन करेंगे। सुनील कुमार सिंह कहते हैं कि सबसे बड़ा लक्ष्य है तेजस्वी यादव को बिहार का मुख्यमंत्री बनाना। जनता ने 2020 में ही जनादेश दिया पर जनादेश को कुचला गया बिहार में बदलाव होना जरूरी है बिहार की जनता एक युवा नेतृत्व चाहती है रोजगार चाहती है भय भूख भ्रष्टाचार मिटाना चाहती है सामाजिक ताने-बाने को मजबूत करना चाहती है सबको समानता के भाव से देखने वाला मुख्यमंत्री चाहती है और यह सब गुण युवा तेजस्वी यादव में है वे कहते हैं कि आज पूरा पूरे बिहार में घूम जाइए लोगों से पूछिए लोग मौजूदा सरकार से ऊब गए हैं और बिहार में बदलाव चाहते हैं। सुनील कुमार सिंह राजनीति में आने वाले नए लोगों के लिए भी एक बड़ी मिसाल है लोग राजनीति में आते हैं तो तुरंत पार्टी का टिकट चाहते हैं बड़ा पद चाहते हैं बड़ा कद जाते हैं कुछ दिन पार्टी में मेहनत करते हैं अगर उन्हें टिकट नहीं मिलता है तुरंत पाला बदल देते हैं फिर जिस खेमे में जाते हैं वहां भी कुछ दिन तक अपना जलवा बिखेरते हैं फिर वहां भी अगर उन्हें टिकट नहीं मिलता है तो सभी दलों का चक्कर लगा लेते हैं ऐसे में उस व्यक्ति का पूरा राजनीतिक कैरियर चौपट हो जाता है एकाध लोग ही होते हैं जिन्हें मौका मिल पाता है पर सुनील सिंह जैसे लोगों की लंबी राजनीतिक पारी को देखने के बाद यह सीख ली जा सकती है कि आप जिस पार्टी जिस विचारधारा जिस व्यक्ति के प्रति निष्ठावान हैं समय आने पर आपको पद और कद दोनों ही मिलेगा।

कड़क आईपीएस अधिकारी के रूप में थी पहचान

आचार्य किशोर कुणाल महावीर मंदिर न्यास के सफल संचालन के माध्यम से पूरे देश दुनिया में अर्जित कर रहे हैं ख्याति

धर्म और समाजसेवा एक दूसरे के पर्याय हैं और मौजूदा समय में इसे चरितार्थ किया है आचार्य किशोर कुणाल ने। वैसे तो आचार्य की कई पहचान हैं। एक पूर्व आईपीएस अधिकारी की। एक धमार्चार्य की और एक कुशल प्रशासक की। अपने कुशल प्रशासन से आचार्य किशोर कुणाल स्वास्थ्य क्षेत्र में लगातार उपलब्धियां दर्ज कर रहे हैं। मंदिर की आय से वे कई अस्पतालों का निर्माण कर स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया करा रहे हैं। अभी उनके नेतृत्व में महावीर कैंसर संस्थान समेत 23 अस्पताल चल रहे हैं।

12 जून 1950 को मुजफ्फरपुर जिले के एक गांव में जन्मे किशोर कुणाल ने संस्कृत भाषा में पढ़ाई पूरी की। संस्कृत और इतिहास से भारतीय पुलिस सेवा में चयन होने के बाद उन्होंने अपनी पहली पहचान एक कड़क पुलिस अधिकारी के रूप में बनाई।

पटना के एसपी के तौर पर वह पटना जंक्शन स्थित महावीर मंदिर से जुड़े। एक नवंबर 1987 से महावीर मंदिर का ट्रस्ट बनाकर समाजसेवा की शुरूआत की। जब महावीर मंदिर से जुड़े तो उस वक्त मंदिर की आय सालाना 11 हजार रुपये की थी। आज मंदिर का बजट 212 करोड़ रुपये तक पहुंच गया है। अकेले यह मंदिर धार्मिक न्यास बोर्ड को 55 लाख रुपये सालाना शुल्क देता है।कुणाल कहते हैं, हिन्दू धर्म की परोपकार नीति से प्रभावित हो ट्रस्ट की आय से एक जनवरी 1989 को पहला अस्पताल राजधानी के किदवईपुरी में खोला। शीघ्र ही चिरैयाटांड़ में इसे वृहद रूप दिया गया। आज महावीर आरोग्य अस्पताल आम बीमारियों के इलाज के लिए काफी मशहूर है। यह अस्पताल नेत्र रोग के इलाज के लिए भी विशेष रूप से जाना जाता है।

1998 में खोला महावीर कैंसर अस्पताल

महावीर मंदिर ट्रस्ट के द्वारा राजधानी में 12 दिसंबर 1998 को कैंसर के इलाज के लिए महावीर कैंसर अस्पताल खोला गया। इसके पहले बिहार के मरीजों के पास कैंसर के इलाज के लिए सीधे दिल्ली-मुंबई जाने का ही विकल्प था। महावीर कैंसर अस्पताल के खुलने के बाद रियायत दर पर मरीजों को कैंसर के इलाज की सुविधा मिलने लगी। आज हर साल चार लाख से अधिक कैंसर मरीज इस अस्पताल में इलाज के लिए आते हैं। इसमें बिहार के अलावा आसपास के राज्यों नेपाल और बांग्लादेश के मरीज भी शामिल हैं।

अब क्रॉनिक मरीजों के लिए स्पेशल अस्पताल की तैयारी

कैंसर के स्पेशल अस्पताल के बाद राजधानी के कुर्जी में बच्चों के इलाज के लिए महावीर वात्सल्य अस्पताल की स्थापना की गई। अभी राजधानी में चार

स्पेशियलिटी और एक जनरल हॉस्पिटल किशोर कुणाल के नेतृत्व में चल रहा है।

इसके साथ ही हाजीपुर, मुजफ्फरपुर, जनकपुर, मोतिहारी आदि शहरों में मंदिर ट्रस्ट की ओर से कई अस्पताल खोले गए हैं। हर अस्पताल में कम दाम पर बिकने वाली दवा की दुकानें खोली गई हैं। आगे की योजनाओं के बारे में वे कहते है, अब एम्स के पास ट्रस्ट की जमीन लेकर कैंसर रोगियों के इलाज और रहने-खाने के लिए अलग से सौ बेड का अस्पताल खोलने की तैयारी है।

वे कहते हैं, राजधानी और आसपास के इलाकों में क्रॉनिक बीमारियों से पीड़ित लोगों की संख्या काफी अधिक है। उनके इलाज के लिए स्पेशल हॉस्पिटल बनाने की आवश्यकता है। यहां से बाहर जाकर इलाज कराने वाले मरीजों को बिहार में ही इलाज की बेहतर व्यवस्था देकर रोकना होगा। इससे राज्य का पैसा राज्य में ही रहेगा और मरीजों और परिजनों को भी राहत और सुविधा मिलेगी।

सदन में जोरदार तरीके से उठेगा शाहाबाद का मुद्दा

'पहले मिट्टी फिर पार्टी' का दिया गया नारा

विधान परिषद् सभागार के बैठक में एकजुट दिखे विधायक

आज से बिहार विधानसभा का बजट सत्र आरंभ हुआ। प्रथम दिन की कार्यवाही समाप्त होने के बाद शाहाबाद प्रक्षेत्र यानि भोजपुर, रोहतास, कैमूर तथा बक्सर जिले के विधायकों की सर्वदलीय बैठक विधान परिषद् के सभागार में हुई। शाहाबाद महोत्सव आयोजन समिति के संयोजक अखिलेश कुमार के पहल पर आयोजित बैठक की अध्यक्षता विधान परिषद् के सभापति अवधेश नारायण सिंह ने की। जिसमें सभी दलों के विधायकों ने शिकायत की।बैठक में सभापति अवधेश नारायण सिंह ने कहा कि "पहले माटी, फिर पार्टी"। उन्होंने कहा कि चुनाव के समय सभी दलों के नेता अपने अपने दल के पक्ष में संघर्ष करें, लेकिन चुनाव बाद अपनी मातृभूमि के विकास हेतु एकजुट होकर प्रयास करना चाहिए।

बैठक के आरंभ में शाहाबाद महोत्सव आयोजन समिति के संयोजक अखिलेश कुमार ने कहा कि पुराना शाहाबाद जिला का काफी गौरवशाली इतिहास रहा है। और यहां पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं और इसके लिए आसन्न सत्र में इसको सामुहिक प्रयास किया जाना चाहिए।

बैठक के आरंभ में शाहाबाद महोत्सव आयोजन समिति के संयोजक अखिलेश कुमार ने कहा कि पुराना शाहाबाद जिला का काफी गौरवशाली इतिहास रहा है। और यहां पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं और इसके लिए आसन्न सत्र में इसको सामुहिक प्रयास किया जाना चाहिए।

बैठक में उपस्थित सभी दलों के विधायक व विधान परिषद सदस्य इस बात पर सहमत दिखे कि यहाँ पर्यटन की अपार संभावनाएं है। रोहतासगढ़ किला, शेरगढ़ किला, शेरशाह का मकबरा, मुंडेश्वरी धाम, ताराचंडी धाम, तुतला भवानी, मांझर कुंड, करकटगढ, तेलहर, दुर्गावती जलाशय, इन्द्रपुरी जलाशय, शहीद बाबु वीर कुंवर सिंह की जन्मभूमि जगदीशपुर, राम को शस्त्र और शास्त्र दोनों का शिक्षा देने वाला स्थान बक्सर, ब्रमहेश्वर स्थान, गुप्ता धाम, अरण्य देवी मंदिर आरा, दरिया साहब का आश्रम धरकंधा जैसे ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों को विकसित कर पर्यटकों को आसानी से आकर्षित किया जा सकता है। साथ हीं अपना विशिष्ट पहचान रखने वाले खाद्य सामग्री जैसे बक्सर की पापड़ी, कोआथ का वेलग्रामी, बरांव का सिंघाडा, चेनारी के गुड़ का लड्डू, बेतरी का चावल आदि को राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर लाने और यहां के परम्परागत लोक संगीत जैसे कुडुख नृत्य, गोणं नृत्य, धोबिया धोबिनिया तथा शिनरयनी के गीत आदि को बढावा देने की जरूरत है। लेकिन इसको लेकर अभी तक कोई गंभीर सकारात्मक प्रयास नहीं किया गया। बैठक में विधायक मुरारी कुमार गौतम, अरूण सिंह, संजय तिवारी, राम विसुन सिंह, विजय कुमार मंडल, अजीत कुमार सिंह, भरत बिंद, संगीता कुमारी, संतोष कुमार मिश्रा, विश्वनाथ राम साथ हीं महोत्सव आयोजन समिति के छोटेलाल सिंह, अशोक कुमार, मयंक उपाध्याय आदि उपस्थित हुए।

सारण की सियासत में आज भी मजबूत है इस परिवार का राजनीतिक विरासत

अनूप नारायण सिंह

पटना। बिहार के कुछ चुनिंदा राजनीतिक विरासत वाले परिवारों में पूर्व राजद सांसद प्रभुनाथ सिंह की परिवार की चर्चा होती प्रभुनाथ सिंह ने अपनी सियासत की विरासत अपने परिवार के साथ ही साथ अपने राजनीति के साथियों को भी शामिल किया है।धारा के विपरीत राजनीति के कारण बिहार की राजनीति में एक अलग पहचान रखने वाले महाराजगंज के पूर्व राजद सांसद प्रभुनाथ सिंह की विरासत संभालने के लिए उनके भाई पुत्र और भतीजे के साथ ही साथ पुत्री भी सक्रिय राजनीति में तेजी से आगे बढ़ रही हैं। हत्या के एक मामले में फिलहाल हजारीबाग कारा में बंद पूर्व राजद सांसद प्रभुनाथ सिंह के भाई केदारनाथ सिंह बनियापुर से लगातार चौथी बार राजद के टिकट पर विधायक हैं। पुत्र रणधीर सिंह छपरा से राजद के विधायक रह चुके हैं पिता की अनुपस्थिति में महाराजगंज लोकसभा क्षेत्र व छपरा विधानसभा क्षेत्र में उन्होंने अपनी एक मजबूत पकड़ बनाई है। आगामी लोकसभा चुनाव में रणधीर सिंह महाराजगंज से प्रत्याशी होंगे जिसको लेकर इस बार वह कोई भी भूल चूक करने को तैयार नहीं जमीनी स्तर पर कार्यकताओं की टीम तैयार की जा रही है तथा बुथवार कमेटियों का गठन भी किया जा रहा है। पूर्व सांसद के भतीजे वाईपीएल संयोजक युवराज सुधीर सिंह ने 2020 के विधानसभा चुनाव में तरैया से निर्दलीय ताल ठोक कर तीसरे स्थान पर आकर राजनीति के रणनीतिकारों को चौंकाया। युवराज सुधीर सिंह ने क्रिकेट के बहाने पूरे सारण प्रमंडल और बिहार में युवाओं के बीच अपनी एक खास पकड़ बनाई है। युवराज सुधीर सिंह ने अपने चुनाव क्षेत्र के रूप में तरैया का चयन किया है तरैया का पानापुर प्रखंड पहले मसरख विधानसभा का अंग हुआ करता था 2010 के परिसीमन में मसरख विधानसभा का अधिकांश हिस्सा बनियापुर में और पानापुर प्रखंड तरैया विधानसभा में शामिल हो गया। चुनाव हारने के बावजूद युवराज सुधीर सिंह तरैया में पहले से ज्यादा सक्रिय लोगों के सुख-दुख के भागी बन रहे हैं यह भावी राजनीति का ही हिस्सा है। पूर्व सांसद प्रभुनाथ सिंह के छोटे भाई केदारनाथ सिंह लगातार चौथी बार विधायक बने है।बनियापुर क्षेत्र में उनके अधिवक्ता पुत्र ऋतुराज सिंह भी अब एक बड़ा चेहरा बन गए है। पिता के राजनीति की कमान ऋतुराज सिंह ने संभाल रखी है क्षेत्र में होने वाले आयोजनों में अब वही ज्यादा नजर आते हैं चर्चा है की राजनीति में ऋतुराज की भी जल्द ही इंट्री होगी। प्रभुनाथ सिंह की पुत्री मधु सिंह ने बाढ़ विधानसभा क्षेत्र में काफी पसीना बहाया था 2020 के चुनाव में मधु सिंह का राजद से टिकट कंफर्म था पर गठबंधन के कारण यह सीट कांग्रेस के खेमे में चली गई जिसका खामियाजा महागठबंधन को उठाना पड़ा। मधु सिंह की सक्रियता बाढ़ विधानसभा में पहले से ज्यादा हैं। वे हर समारोह में नजर आती हैं लोगों के सुख-दुख की भागी बनती है सोशल मीडिया पर भी वे काफी एक्टिव है। पूर्व सांसद प्रभुनाथ सिंह की राजनीतिक यात्रा मसरख से निर्दलीय विधायक के रुप में हुई थी बाद में वे महाराजगंज से सांसद बने अपने पूरे राजनीतिक कैरियर में विपक्ष की राजनीति का बड़ा चेहरा रहे कभी भी मंत्री पद का लालच नहीं किया राजनीतिक करियर में कई बार ऐसे मौके आए जब वे प्रदेश व देश स्तर पर बड़ा पद प्राप्त कर सकते थे लोकसभा में उनकी मुखरता और वाकपटुता पूरे देश ने देखा एक कुशल वक्ता के साथ-साथ विषय के अच्छे जानकार नेता भी माने जाते हैं। राजनीतिक जानकार बताते हैं कि परिवार में परिवारवाद के सहारे राजनीति में आने से ज्यादा संघर्ष वाद को तवज्जो दी जा रही है यही कारण है कि परिवार की नई पीढ़ी जनसेवा के माध्यम से राजनीति में पदार्पण करने की तैयारी में है। प्रभुनाथ सिंह के अनुपस्थिति में पूरा परिवार एकजुट होकर महाराजगंज लोकसभा क्षेत्र में बड़े राजनीतिक मुहिम की तैयारी में लगा हुआ है इस बार सिंगल एजेंडा रणधीर सिंह को महाराजगंज से सांसद बनाना है जिसको लेकर व्यापक पैमाने पर तैयारियां प्रारंभ कर दी गई है पुराने कार्यकताओं को एकजुट किया जा रहा है।

उच्चैठ सिद्धपीठ : जहा कालिदास ने मां भगवती के मुख पर पोत दी थी कालिख

बिहार के मधुबनी जिले के बेनीपट्टी गांव में मां काली का सिद्धपीठ, उच्चैठ भगवती का मंदिर अवस्थित है। इस मंदिर का ऐतिहासिक महत्व है, यहीं महान कवि कालिदास को माता काली ने वरदान दिया था और मूर्ख कालिदास मां का आशीर्वाद पाकर ही महान कवि के रूप में विख्यात हुए।

इस सिद्धपीठ पर काले शिलाखंड पर देवी की मूर्ति बनी हुई है। यहां मां सिंह पर कमल के आसन पर विराजमान हैं। माता का सिर्फ कंधे तक का हिस्सा ही नजर आता है। सिर नहीं होने के कारण इन्हें छिन्नमस्तिका दुर्गा के नाम से भी जाना जाता है। माता के मंदिर के पास ही एक श्मशान है जहां आज भी तंत्र साधना की जाती है।

माना जाता है की यहाँ छिन्न मस्तिका माँ दुर्गा स्वयं प्रदुर्भावित हैं और यहाँ जो भी आता है उसकी मनोकामना अवश्य पूरी होती है। लोक मान्यता है कि उच्चैठ भगवती से जो भी भक्त श्रद्धा पूर्वक मांगा जाता है मां उसे अवश्य पूरा करती हैं। इसलिए इन्हें दुर्गा के नवम रूप सिद्धिदात्री और कामना पूर्ति दुर्गा के रूप में भी लोग पूजते हैं। भगवान श्री राम भी जनकपुर की यात्रा के समय उच्चैठ पहुंचे थे।

कैसे मूर्ख कालिदास बने विद्वान कालिदास

प्राचीन मान्यता है कि इसके पूर्व दिशा में एक संस्कृत पाठशाला थी और मंदिर तथा पाठशाला के बीच एक विशाल नदी थी। महामूर्ख कालिदास अपनी विदुषी पत्नी विद्योतमा से तिरस्कृत होकर माँ भगवती के शरण में उच्चैठ आ गए थे और उस विद्यालय के आवासीय छात्रों के लिए खाना बनाने का कार्य करने लगे।

एक बार भयंकर बाढ़ आई और नदी का बहाव इतना ज्यादा था की मंदिर में संध्या दीप जलाने का कार्य जो कि छात्र किया करते थे , वो सब जाने में असमर्थ हो गए , कालिदास को महामूर्ख जान उसे आदेश दिया गया कि आज शाम वो दीप जला कर आये और साथ ही मंदिर की कोई निशानी लगा कर आये ताकि ये तथ्य हो सके कि वो मंदिर में पंहुचा था।

इतना सुनना था कि कालिदास झट से नदी में कूद पड़े और किसी तरह तैरते-डूबते मंदिर पहुंच कर दीपक जलाया और पूजा अर्चना की। अब मंदिर का कुछ निशान लगाने की बारी थी ताकि यह सिद्ध किया जा सके कि उन्होंने दीप जलाया। कालिदास को कुछ नहीं दिखा तो उन्होंने जले दीप के कालिख को ही हाथ पर लगा लिया।

अब निशान बनाने के लिए उन्हें कुछ दिखा नहीं तो मूर्ख कालिदास ने माँ भगवती के साफ मुखमंडल पर ही कालिख लगा दिया, तभी माता प्रकट हुई और बोली रे मूर्ख कालिदास तुम्हे इतने बड़े मंदिर में कोई और जगह नहीं मिली और इस बाढ़ और घनघोर बारिश में जीवन जोखिम में डाल कर तुम दीप जलाने आ गए हो।

ये मूर्खता हो या भक्ति लेकिन मैं तुम्हे एक वरदान देना चाहती हूँ। कालिदास ने अपनी आपबीती सुनाई कि कैसे उनकी मूर्खता के कारण पत्नी ने तिरस्कृत कर भगा दिया। इतना सुनकर देवी ने वरदान किया कि आज सारी रात तुम जो भी पुस्तक स्पर्श करोगे तुम्हे कंठस्थ हो जाएगा।

कालिदास लौटे और सारे विद्यार्थियों के किताबों को स्पर्श कर डाला और आगे चलकर एक विद्वान कवि बने और अभिज्ञान शाकुंतलम , कुमार संभव , मेघदूत आदि की रचना की। आज भी वो नदी , उस पाठशाला के अवशेष मंदिर के निकट मौजूद है। मंदिर प्रांगण में कालिदास के जीवन सम्बंधित चित्र चित्रांकित हैं।

उच्चैठ देवी स्थान कैसे पहुचें

उच्चैठ देवी स्थान बेनीपट्टी से ४ किलोमीटर पर स्थित है। निकटतम रेलवे स्टेशन है मधुबनी। सड़क द्वारा ये चारो दिशाओं से जुड़ा हुई है। अगर अपनी गाड़ी न हो तो बस के द्वारा भी यहां जाया जा सकता है। यह सिद्धपीठ सड़क मार्ग द्वारा दरभंगा, सीतामढ़ी और मधुबनी से जुड़ा हुआ है। इन स्थानों से बस और टैक्सी से यहां आसानी से पहुंचा जा सकता है।

शराब बंदी समाज के व्यापक हित में

बिहार की यात्रा में शराबबंदी एक महान ऐतिहासिक मील का पत्थर है । माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने राज्य में वर्ष 2016 में सभी प्रकार की शराब पर प्रतिबंध लगाया। कानून का पालन करते हुए पूरे राज्य में बड़ी संख्या में संचालित शराब की दुकानों को बंद कर दिया गया। वास्तव में यह राज्य के लिए कायापलट है।

दूरदर्शी मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार द्वारा उठाया गया यह कदम सामाजिक हित के लिए एक अच्छा कदम साबित हुआ है। उन्होंने बिहार की महिलाओं से राज्य में शराब की बढ़ती खपत के मुद्दे पर वादा किया था जिसे पूरा करते हुए उन्होंने इस जहर पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया।

राज्य में पूर्ण शराबबंदी लागू होने के बाद से जघन्य अपराधों की दर में कमी आई है। सड़क हादसों में मौत के मामलों में भी कमी दर्ज की गई है। त्योहारों और समारोहों के दौरान तनाव और विवादों का ग्राफ भी गिरा है। शराबबंदी से सबसे ज्यादा फायदा समाज में पिछड़े और दलित वर्ग को हुआ है। ऐसा देखा गया था कि लोग अपनी गाढ़ी कमाई का बहुत बड़ा हिस्सा शराब में बर्बाद कर देते थे। घर का माहौल तनावपूर्ण रहता था। महिलाओं और बच्चों की स्थिति घर में काफी खराब रहती थी।

ऐसा शुरूआत में कई लोगों ने दुष्प्रचार किया कि सरकार को शराबबंदी से पांच हजार करोड़ रुपए का नुकसान हो गया है। इस बात पर मुख्यमंत्री ने कड़ा विरोध दर्ज किया और कहा था कि सबसे बड़ी बात है कि सरकार को पांच हजार करोड़ रुपए मिल रहे हों लेकिन आम आदमी के तो कई हजार करोड़ रुपए बर्बाद हो रहे थे। शराबबंदी के बाद वह रुपया दूसरे सकारात्मक कार्यों में खर्च हो रहा है।

शराबबंदी के पक्ष में 21 जनवरी 2016 को मानव श्रृंखला बनी थी जिसमें राज्य की आबादी का लगभग एक तिहाई हिस्सा यानि करीब चार करोड़ लोग शामिल हुए थे। इसमें हर आयु वर्ग के लोग शामिल हुए थे। इसने दुनिया में एक इतिहास कायम किया। मानव श्रृंखला में सभी जाति, सभी धर्म एवं सभी राजनीतिक दल के लोगों ने एक दूसरे का हाथ पकड़कर शराबबंदी के पक्ष में अपना संकल्प व्यक्त किया था लेकिन आज कुछ लोग अपने अनैतिक मंसूबों के लिए इस महत्वपूर्ण एवं पूर्ण रूप से सफल कानून का विरोध कर रहे हैं ।

महात्मा गांधी एवं अन्य कई महापुरुषों ने कहा है कि शराब के कारोबार को नैतिक नहीं कहा जा सकता। गांधी जी ने कहा था अस्पृश्यता के बाद सबसे अधिक खेदजनक बात शराब का अभिशाप है। उन्होंने शराबबंदी के अपने आह्वान में भारत के लोगों से समर्थन की उम्मीद की, लेकिन यह स्वीकार किया कि उन्हें भारत के ब्रिटिश शासकों के विरोध का सामना करना पड़ सकता है, जो काफी हद तक शराब से होने वाले राजस्व पर निर्भर थे।

रंजीत कुमार झा

लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं और वर्तमान में बिहार प्रदेश जद (यू) के सचिव हैं ।

पूर्ण शराबबंदी के करीब पांच वर्ष बाद भी नीतीश कुमार की सरकार अडिग है। बिहार सरकार ने अवैध कारोबार के खिलाफ अभियान तेज कर दिया है और छोटे-छोटे तस्करों की जगह बड़े आपूर्तिकताओं को निशाना बनाना शुरू कर दिया है।

जहां तक महिला सशक्तिकरण और घरेलू हिंसा का संबंध है, शराब पर प्रतिबंध का महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इस आलेख में हमने नीतिगत एवं सिधान्तिक मूल्यों की बात की किन्तु यदि हम आंकड़ों की बात करें तो भी विश्व स्वास्थ्य संगठन की 2018 की रिपोर्ट के अनुसार, 2016 में 39% महिलाओं ने हिंसा का सामना किया, जो 2018 में घटकर 25% रह गई।

इसके सबसे बड़े लाभ की अगर हम बात करें तो शराबबंदी ने परिवारों और महिलाओं के हाथ में अधिक पैसा रहने का मौका दिया है और छेड़खानी जैसी घटनाएं लगभग बंद हो गई हैं। इसने विभिन्न सामाजिक मानकों पर राज्य की मदद की है। घरेलू हिंसा में कमी आई है, महिला सशक्तिकरण बढ़ा है और महिलाएं अपने आप को सुरक्षित महसूस करने लगी हैं।

बेशक सरकार के लिए शराब की अवैध आपूर्ति पर अंकुश लगाने और उल्लंघन करने वालों पर सजा देने की चुनौती है लेकिन जिसप्रकार से बिहार में शराबबंदी 6 अप्रैल 2016 को समाज के व्यापक हित में लागू की गई थी इसे जारी रखा जाना जनहित में सबसे आवश्यक है।।

ऐसा शुरूआत में कई लोगों ने दुष्प्रचार किया कि सरकार को शराबबंदी से पांच हजार करोड़ रुपए का नुकसान हो गया है। इस बात पर मुख्यमंत्री ने कड़ा विरोध दर्ज किया और कहा था कि सबसे बड़ी बात है कि सरकार को पांच हजार करोड़ रुपए मिल रहे हों लेकिन आम आदमी के तो कई हजार करोड़ रुपए बर्बाद हो रहे थे। शराबबंदी के बाद वह रुपया दूसरे सकारात्मक कार्यों में खर्च हो रहा है। शराबबंदी के पक्ष में 21 जनवरी 2016 को मानव श्रृंखला बनी थी जिसमें राज्य की आबादी का लगभग एक तिहाई हिस्सा यानि करीब चार करोड़ लोग शामिल हुए थे। इसमें हर आयु वर्ग के लोग शामिल हुए थे। इसने दुनिया में एक इतिहास कायम किया। मानव श्रृंखला में सभी जाति, सभी धर्म एवं सभी राजनीतिक दल के लोगों ने एक दूसरे का हाथ पकड़कर शराबबंदी के पक्ष में अपना संकल्प व्यक्त किया था लेकिन आज कुछ लोग अपने अनैतिक मंसूबों के लिए इस महत्वपूर्ण एवं पूर्ण रूप से सफल कानून का विरोध कर रहे हैं ।

पंजाब में सियासी फेरबदल आम आदमी पार्टी की जीत

पंजाब में 10 मार्च इतिहास लिखा गया। विधानभा चुनाव के नतीजों ने एक साथ कई रिकॉर्ड बना दिए। आम आदमी पार्टी ने पंजाब की 117 में से 92 सीटों पर प्रचंड जीत हासिल करके किसी भी दूसरी पार्टी को मुकम्मल विपक्ष बनने तक का मौका नहीं दिया। यह 56 साल में किसी एक पार्टी की सबसे बड़ी जीत है, जबकि आजादी के बाद आप ने सूबे में तीसरी सबसे बड़ी जीत हासिल की है।

पंजाब में सियासी फेरबदल के कयास तो पहले से थे, लेकिन आज के नतीजों ने बदलाव की नई परिभाषा तय कर दी है। यहां आप ने न सिर्फ बहुमत के आंकड़े को पीछे छोड़ दिया, बल्कि विनिंग सीट्स का ऐसा पहाड़ खड़ा कर दिया कि कांग्रेस, अकाली दल और भाजपा समेत उसके सहयोगी मिलकर भी आप के लगभग चौथाई हिस्से तक ही पहुंच पा रहे हैं।

पंजाब में आम आदमी पार्टी का जादू ऐसा चला कि मौजूदा उट चरणजीत चन्नी दोनों सीटों पर आप कैंडिडेट से हार गए। वहीं, नवजोत सिद्धू और कैप्टन अमरिंदर सिंह को भी आप के हाथों हार का मुंह देखना पड़ा। बता दें कि, 30 साल में पहली बार बादल परिवार का कोई सदस्य विधानसभा चुनाव नहीं जीता। प्रकाश सिंह बादल और उनके बेटे सुखबीर सिंह बादल आप कैंडिडेट्स से ही चुनाव हारे।

56 साल में किसी एक पार्टी की सबसे बड़ी जीत

1966 में हरियाणा के अलग होने के बाद पिछले 56 साल में यह पंजाब में किसी एक राजनीतिक पार्टी की सबसे बड़ी जीत है। इससे पहले, 1992 में पंजाब में आतंकवाद के दौरान कांग्रेस ने अपने बूते 87 सीटें जीती थीं, लेकिन उस समय शिरोमणि अकाली दल ने चुनाव का बहिष्कार किया था।

इसके बाद 1997 के चुनाव में अकाली दल और इखढ ने मिलकर 93 सीटें जीती थीं। उस समय अकाली दल को 75 और इखढ को 18 सीटों पर जीत मिली थी।

आजादी के बाद सिंगल पार्टी की तीसरी बड़ी जीत

1947 में देश के आजाद होने के बाद पंजाब में यह किसी अकेली पार्टी की अपने दम पर तीसरी सबसे बड़ी जीत है। 1952 में पंजाब में हुए पहले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने 96 सीटें जीती थीं। तब पंजाब में कुल 126 विधानसभा सीटें थीं।

आजादी के बाद 3 चुनाव में कांग्रेस का दबदबा रहा

1957 में शिरोमणि अकाली दल ने पंजाब विधानसभा चुनाव का बहिष्कार कर दिया था। इसके बाद चुनाव में कांग्रेस इकलौती बड़ी पार्टी बची थी और उसने प्रदेश की 154 विधानसभा सीटों में से 120 पर जीत दर्ज की थी। इसके 5 साल बाद 1962 के चुनाव में शिरोमणि अकाली दल शामिल तो हुआ, मगर तब भी कांग्रेस प्रदेश की 154 सीटों में से 90 सीटें जीतने में कामयाब रही।

पंजाब में बंपर जीत की वोट प्रतिशत की बात करते हैं..

पंजाब में बंपर जीत हासिल करने वाली आप वोट प्रतिशत के मामले में भी सबसे आगे है। उसे कुल पड़े वोट में से 44% हिस्सा मिला। वहीं, कांग्रेस को 23% वोट मिले। इधर, अकाली दल ने 18.4% वोट तो हासिल किए, लेकिन पार्टी कुल 5 सीटें भी नहीं जीत पाई।

पंजाब के नए प्रधान होंगे भगवंत मान

ये तो हुए चुनाव से जुड़े आंकड़े, अब पंजाब के होने वाले मुख्यमंत्री को जान लीजिए। पेशे कॉमेडियन रहे भगवंत मान को आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल उट कैंडिडेट प्रोजेक्ट किया था। वे जट्ट सिख कम्युनिटी से आते हैं, जो पंजाब की राजधानी में बेहद असरदार मानी जाती है।

केजरीवाल का यह दांव काम कर गया और पार्टी ने सूबे की 78% सीटों पर एकतरफा जीत दर्ज कर ली। भगवंत मान भी रिकॉर्ड 45 हजार वोट से जीते। उन्होंने धूरी सीट से कांग्रेस के दलबीर गोल्डी को शिकस्त दी।

पंजाब के सियासी हालात ग्राफिक्स से समझिए

पंजाब में पिछले 5 चुनाव का वोटिंग ट्रेंड देखें तो कांग्रेस और अकाली दल ही सत्ता में काबिज रहे हैं। वहीं, इस बार वोटिंग में पिछली बार से 5% की कमी आई। पिछले चुनाव यानी 2017 में कांग्रेस ने 77 सीटों पर बंपर जीत हासिल कर सरकार बनाई थी।

पंजाब की राजनीति से जुड़ी 6 दिलचस्प बातें

1. पंजाब ज्यादातर समय कांग्रेस का गढ़ रहा

2017 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस का वोट शेयर 66% था। ये कांग्रेस का दूसरा बड़ा वोट शेयर था। 1992 में कांग्रेस का वोट शेयर 74% था। राज्य के 22 मुख्यमंत्रियों में से 14 मुख्यमंत्री कांग्रेस के ही रहे हैं।

2. दलित वोट की अहम भूमिका

भारत की अनुसूचित जाति की आबादी का पंजाब में अनुपात (31.9%) सबसे ज्यादा है। हालांकि जट्ट सिख (जनसंख्या का 20%) यहां की राजनीति पर हावी है। चरणजीत सिंह चन्नी राज्य के पहले दलित मुख्यमंत्री हैं। ज्ञानी जैल सिंह पंजाब के अंतिम गैर-जाट सिख मुख्यमंत्री (1972-77) थे।

3. मालवा जीतने वाला पंजाब जीतता है

सतलुज नदी के साउथ बेल्ट से पंजाब विधानसभा में 69 सदस्य चुने जाते हैं। आमतौर पर जो भी इस क्षेत्र में जीतता है, उसके पास सरकार बनाने का मौका होता है। हालांकि, 2007 अपवाद रहा था। यहां कांग्रेस ने जीत हासिल की थी, लेकिन शिअद-भाजपा गठबंधन सत्ता में आया था।

4. भाजपा से पहले अकालियों ने कांग्रेस को धोखा दिया था

स्वतंत्र भारत में पंजाब में बनी पहली सरकार के उट गोपी चंद भार्गव के नेतृत्व में कांग्रेस और अकालियों के बीच गठबंधन हुआ था, लेकिन यह लंबे समय तक नहीं चला। सिखों की सुरक्षा की मांग से इनकार के बाद अप्रैल 1949 में सरकार गिर गई थी। इसके चलते राज्य में राष्ट्रपति शासन लगा दिया गया था।

5. पंजाब ने भारत को एक सीएम और राष्ट्रपति दिया, पाक में भी ऐसा ही

पंजाब ने भारत को एक राष्ट्रपति दिया है - ज्ञानी जैल सिंह। जैल सिंह 1982 से 1987 तक राष्ट्रपति रहे। वह भारत के पहले और एकमात्र सिख राष्ट्रपति हैं। पंजाब ने भारत को एक प्रधानमंत्री भी दिया है - डॉ. मनमोहन सिंह जो लगातार दो कार्यकाल तक पद पर थे।

बात पाकिस्तान की करें, तो मुहम्मद जिया-उल-हक 1978 से 1988 तक वहां के राष्ट्रपति रहे। जिया-उल-हक अविभाजित भारत में 1924 में पंजाब राज्य के जालंधर में पैदा हुए थे। पाकिस्तान के मौजूदा प्रधानमंत्री इमरान खान के परिवार की मां जालंधर की रहने वाली थीं। वे विभाजन के दौरान लाहौर चले गए थे।

6. 1966 के बाद कोई भी गैर-सिख उट नहीं बना

1966 में संसद ने पंजाब पुनर्गठन अधिनियम पारित किया था। इसके बाद मॉडर्न स्टेट ऑफ पंजाब और नए राज्य हरियाणा के निर्माण का रास्ता खुला। तब से लेकर अब तक यहां हर मुख्यमंत्री सिख रहा है।

क्यों नारी का उत्पीड़न

नारी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन तथा मातृशक्ति की अभिवंदना का एक स्वर्णिम अवसर है विश्व नारी दिवस, यह नारी की महिमा को उजागर करने वाला ऐतिहासिक दिन है। आखिर नारी को ही माँ का महत्त्वपूर्ण पद और संबोधन मिला। कारण की मीमांसा करते हुए अनुभवविदों ने बताया-हमारी भारतीय परंपरा में भारतमाता, राजमाता, गौमाता की तरह धरती को भी माता कहा जाता है। वह इसलिए कि धरती पैदा करती है। वह निर्मात्री है, सृष्टा है, संरक्षण देती है, पोषण करती है, बीज को विस्तार देती है, अनाम उत्सर्ग करती है, समर्पण का सितार बजाती है, आश्रम देती है, ममता के आँचल में सबको समेट लेती है और सब कुछ चुपचाप सह लेती है। इसीलिए उसे ह्यमाताह्न का गौरवपूर्ण पद मिला। माँ की भूमिका यही है।

मातृदेवो भवः यह सूक्त भारतीय संस्कृति का परिचय-पत्र है। ऋषि-महर्षियों की तपः पूत साधना से अभिसिंचित इस धरती के जर्रे-जर्रे में गुरु, अतिथि आदि की तरह नारी भी देवरूप में प्रतिष्ठित रही है। रामायण उद्गार के आदि कवि महर्षि वाल्मीकि की यह पंक्ति- जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी जन-जन के मुख से उच्चारित है। प्रारंभ से ही यहाँ नारीशक्ति की पूजा होती आई है फिर क्यों नारी अत्याचार बढ़ रहे हैं? फिर क्यों नारी का उत्पीड़न एवं अस्तित्व को नौंचा जाता है? वैदिक परंपरा दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी के रूप में, बौद्ध अनुयायी चिरंतन शक्ति प्रज्ञा के रूप में और जैन धर्म में श्रुतदेवी और शासनदेवी के रूप में नारी की आराधना होती है। लोक मान्यता के अनुसार मातृ वंदना से व्यक्ति को आयु, यश, स्वर्ग, कीर्ति, पुण्य, बल, लक्ष्मी पशुधन, सुख, धनधान्य आदि प्राप्त होता है, फिर क्यों नारी की अवमानना होती है?

नारी का दुनिया में सर्वाधिक गौरवपूर्ण सम्मानजनक स्थान है। नारी धरती की धुरा है। स्नेह का स्रोत है। मांगल्य का महामंदिर है। परिवार की पीढ़िका है। पवित्रता का पैगाम है। उसके स्नेहिल साए में जिस सुरक्षा, शीतलता और शांति की अनुभूति होती है वह हिमालय की हिमशिलाओं पर भी नहीं होती। सुप्रसिद्ध कवयित्रि महादेवी वर्मा ने ठीक कहा था-ह्यनारी सत्यं, शिवं और सुंदर का प्रतीक है। उसमें नारी का रूप ही सत्य, वात्सल्य ही शिव और ममता ही सुंदर है। इन विलक्षणताओं और आदर्श गुणों को धारण करने वाली नारी फिर क्यों बार-बार छली जाती है, लूटी जाती है?

विश्व महिला दिवस के सन्दर्भ में एक टीस से मन में उठती है कि आखिर नारी का जीवन कब तक खतरों से घिरा रहेगा। बलात्कार, छेड़खानी, भ्रूण हत्या और दहेज की धधकती आग में वह कब तक भस्म होती रहेगी? भरी राजसभा में द्रौपदी को बाल पकड़कर खींचते हुए अंधे सम्राट धृतराष्ट्र के समक्ष उसकी विद्वत मंडली के सामने निर्वस्त्र करने के प्रयास के संस्करण आखिर कब तक शक्ल बदल-बदल कर नारी चरित्र को धुंधलाते रहेंगे? ऐसी ही अनेक शक्लों में नारी के वजूद को धुंधलाने की घटनाएं- जिनमें नारी का दुरुपयोग, उसके साथ अश्लील हरकतें, उसका शोषण, उसकी इज्जत लूटना और हत्या कर देना- मानो आम बात हो गई हो। महिलाओं पर हो रहे अन्याय, अत्याचारों की एक लंबी सूची रोज बन सकती है। न मालूम कितनी महिलाएं, कब तक ऐसे जुल्मों का शिकार होती रहेंगी। कब तक अपनी मजबूरी का फायदा उठाने देती रहेंगी। दिन-प्रतिदिन देश के चेहरे पर लगती यह कालिख को कौन पोछेगा? कौन रोकेगा ऐसे लोगों को जो इस तरह के जघन्य अपराध करते हैं, नारी को अपमानित करते हैं।

औरत जन्मती नहीं, बना दी जाती है, यह कहावत प्रचलित है और कई कट्टर मान्यता वाले औरत को मर्द की खेती समझते हैं। कानून का संरक्षण नहीं मिलने से औरत संघर्ष के अंतिम छोर पर लड़ाई हारती रही है। इसीलिये आज की औरत को हाशिया नहीं, पूरा पृष्ठ

चाहिए। पूरे पृष्ठ, जितने पुरुषों को प्राप्त हैं। पर विडम्बना है कि उसके हिस्से के पृष्ठों को धार्मिकता के नाम पर ह्यधर्मग्रंथह्ल एवं सामाजिकता के नाम पर ह्यखाप पंचायतेह्ल घेरे बैठे हैं। पुरुष-समाज को उन आदतों, वृत्तियों, महत्वाकांक्षाओं, वासनाओं एवं कट्टरताओं को अलविदा कहना ही होगा जिनका हाथ पकड़कर वे उस ढ़लान में उतर गये जहां रफ्तार तेज है और विवेक अनियंत्रण हैं जिसका परिणाम है नारी पर हो रहे नित-नये अपराध और अत्याचार। पुरुष-समाज के प्रदूषित एवं विकृत हो चुके तौर-तरीके ही नहीं बदलने हैं बल्कि उन कारणों की जड़ों को भी उखाड़ फेंकना है जिनके कारण से बार-बार नारी को जहर के घूंट पीने को विवश होना पड़ता है।

नारी जाति को अपनी विशेषताओं से ही नहीं, बल्कि अपनी कमजोरियों से भी अवगत होना होगा। नारी को अपने आप से रूबरू होना होगा, जब तक ऐसा नहीं होता लक्ष्य की तलाश और तैयारी दोनों अधूरी रह जाती है। स्वयं की शक्ति और ईश्वर की भक्ति भी नाकाम सिद्ध होती है और यही कारण है कि जीने की हर दिशा में नारी औरों की मुहताज बनती हैं, औरों का हाथ थामती हैं, उनके पदचिन्ह खोजती हैं। कब तक नारी औरों से मांगकर उधार के सपने जीती रहेंगी। कब तक औरों के साथ स्वयं को तौलती रहेंगी और कब तक बैशाखियों के सहारे मिलों की दूरी तय करती रहेंगी यह जानते हुए भी कि बैशाखियां सिर्फ सहारा दे सकती है, गति नहीं? हम बदलना शुरू करें अपना चिंतन, विचार, व्यवहार, कर्म और भाव। मौलिकता को, स्वयं को एवं स्वतंत्र होकर जीने वालों को ही दुनिया सर-आंखों पर बिठाती है। जिस घर में नारी सुघड़, समझदार, शालीन, शिक्षित, संयत एंव संस्कारी होती है वह घर स्वर्ग से भी ज्यादा सुंदर लगता है क्योंकि वहाँ प्रेम है, सम्मान है,

नारी जाति को अपनी विशेषताओं से ही नहीं, बल्कि अपनी कमजोरियों से भी अवगत होना होगा। नारी को अपने आप से रूबरू होना होगा, जब तक ऐसा नहीं होता लक्ष्य की तलाश और तैयारी दोनों अधूरी रह जाती है। स्वयं की शक्ति और ईश्वर की भक्ति भी नाकाम सिद्ध होती है और यही कारण है कि जीने की हर दिशा में नारी औरों की मुहताज बनती हैं, औरों का हाथ थामती हैं, उनके पदचिन्ह खोजती हैं। कब तक नारी औरों से मांगकर उधार के सपने जीती रहेंगी। कब तक औरों के साथ स्वयं को तौलती रहेंगी और कब तक बैशाखियों के सहारे मिलों की दूरी तय करती रहेंगी यह जानते हुए भी कि बैशाखियां सिर्फ सहारा दे सकती है, गति नहीं? हम बदलना शुरू करें अपना चिंतन, विचार, व्यवहार, कर्म और भाव।

सुख है, शांति है,सामंजस्य है, शांत सहवास है। सुख-दुख की सहभागिता है। एक दूसरे को समझने और सहने की विनम्रता है। नारी अनेक रूपों जीवित है। वह माँ, पत्नी, बहन, भाभी, सास, ननंद, शिक्षिका आदि अनेक दायरों से जुड़कर सम्बधों के बीच अपनी विशेष पहचान बनाती है। उसका हर दायित्व, कर्तव्य, निष्ठा और आत्म धर्म से जुड़ा होता है। इसीलिए उसकी सोच, समझ, विचार, व्यवहार और कर्म सभी पर उसके चरित्रगत विशेषताओं की रोशनी पड़ती रहती है। वह सबके लिए आदर्श बन जाती है।

नारी अपने घर में अपने आदर्शों, परंपराओ, सिद्धांतो, विचारों एवं अनुशासन को सुदृढ़ता दे सकें, इसके लिए उसे कुछेक बातों पर विशेष ध्यान देना होगा। नारी अपने परिवार में सबका सुख-दुख अपना सुख-दुख माने। सबके प्रति बिना भेदभाव के स्नेह रखे। सबंधों की हर इकाई के साथ तादात्मय संबंध जोड़े। घर की मान मयार्दा, रीति-परंपरा, आज्ञा- अनुशासन, सिद्धांत, आदर्श एंव रूचियों के प्रति अपना संतुलित विन्रम दृष्टिकोण रखें।अच्छाइयों का योगक्षेम करें एंव बुराइयों के परिष्कार में पुरषार्थी प्रयत्न करें। सबका दिल और दिमाग जीतकर ही नारी घर में सुखी रह सकती है।

बदलते परिवेश में आधुनिक महिलाओं के लिए यह आवश्यक है कि मैथिलीशरण गुप्त के इस वाक्य-ह्लआँचल में है दूधह्ल को सदा याद रखें। उसकी लाज को बचाएँ रखें और भ्रूणहत्या जैसा घिनौना कृत्य कर मातृत्व पर कलंक न लगाएँ। बल्कि एक ऐसा सेतु बने जो टूटते हुए को जोड़ सके, रुकते हुए को मोड़ सके और गिरते हुए को उठा सके। नन्हे उगते अंकुरों और पौधों में आदर्श जीवनशैली का अभिसिंचन दें ताकि वे शतशाखी वृक्ष बनकर अपनी उपयोगिता साबित कर सकें। जननी एक ऐसे घर का निर्माण करे जिसमें प्यार की छत हो, विश्वास की दीवारें हों, सहयोग के दरवाजे हों, अनुशासन की खिड़कियाँ हों और समता की फुलवारी हो। तथा उसका पवित्र आँचल सबके लिए स्नेह, सुरक्षा, सुविधा, स्वतंत्रता, सुख और शांति का आश्रय स्थल बने, ताकि इस सृष्टि में बलात्कार, गैंगरेप, नारी उत्पीड़न जैसे शब्दों का अस्तित्व ही समाज हो जाए।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस भारतीय नारी कब तक रहेगी बेचारी?

मनुष्य अपनी माता से इस संसार में जन्म लेता है। आरम्भ में शैशव अवस्था होती है। समय के साथ उसके शरीर व ज्ञान में वृद्धि होती है। वह माता की बोली को सुनकर उसे समझने लगता है व कुछ समय बाद बोलने भी लगता है। शैशव अवस्था बीतने पर किशोर व कुमार अवस्था आरम्भ होती है। समय के साथ यह भी बीतती है। इस अवस्था में शरीर और बड़ा व बलवान हो जाता है। उसका ज्ञान भी अपनी माता व आचार्यों की शिक्षा से वृद्धि को प्राप्त होता है। इसके बाद युवावस्था आती है और मनुष्य इस अवस्था में रहते हुए अपनी शिक्षा व विद्या पूरी करता है। शरीर यौवनावस्था में पूर्ण वृद्धि को प्राप्त हो जाता है। इसके बाद शरीर की वृद्धि प्रायः नहीं होती। इस अवस्था में वह विवाह कर सृष्टि क्रम को जारी रखने में सहायक बनता है। जैसे उसके माता-पिता ने उसे जन्म दिया था, उसी प्रकार वह भी संसार में विद्यमान आत्माओं को अपनी धर्मपत्नी के द्वारा जन्म देकर उनका पालन व पोषण करता है। अपना पोषण करते हुए तथा माता-पिता एवं सन्तानों के पोषण के साथ वह वृद्धावस्था को प्राप्त होता है। वृद्धावस्था मुनष्य जीवन की अन्तिम अवस्था कही जाती है। इस अवस्था में दिन प्रतिदिन उसके शरीर में बल की न्यूनता होती जाती है। वह युवावस्था की तरह से काम नहीं कर सकता। अधिक आयु होने पर उसे कुछ रोग भी हो जाते हैं। उनका उपचार कराना होता है। 60 से 80 या 85 वर्ष की आयु के मध्य अधिकांश स्त्री व पुरुषों की मृत्यु हो जाती है। परिवार के लोग व इष्ट-मित्र अपने स्वजन व मित्र आदि की मृत्यु पर दुःख व्यक्त करते हैं और कुछ दिनों बाद स्थिति सामान्य हो जाती है।

हमने यह एक मनुष्य के जीवन का संक्षिप्त वर्णन किया है। मनुष्य की मृत्यु क्यों होती है? यह प्रश्न प्रायः सभी के मन में उठता है। लोग इस प्रश्न को टाल जाते हैं और इस पर विचार करना निरर्थक माना जाता है। हमारे देश में ऋषि दयानन्द हुए जिन्होंने अपने घर में अपनी बड़ी बहिन व चाचा की मृत्यु देखी तो उन्हें वैराग्य हो गया था। मृत्यु के भय से वह इतने व्याकुल हुए थे कि मृत्यु की औषधि की तलाश करने के लिये वह अपनी आयु के 22 वें वर्ष में घर से चले गये और साधु, सन्तो, योगियों व विद्वानों की सगति कर ईश्वर के सच्चे स्वरूप और मृत्यु की औषधि की खोज करते रहे। उनसे पूर्व महात्मा बुद्ध को वृद्धावस्था की समस्याओं व मृत्यु की घटना देखकर वैराग्य हुआ था और उन्होंने भी अपना घर त्याग दिया था तथा ज्ञान की प्राप्ति के लिये वह वनों में चले गये थे।

मृत्यु क्यों होती है, इसका उत्तर महाभारत के एक अंग गीता नामक ग्रन्थ में मिलता है। गीता में योगेश्वर श्री कृष्ण द्वारा दिया गया यह ज्ञान वेद व योग आदि ग्रन्थों में उपलब्ध है एवं इससे जन्म व मृत्यु पर प्रकाश पड़ता है। मृत्यु का मुख्य कारण मनुष्य का अपना जन्म होता है। यदि जन्म न हुआ होता तो उसकी मृत्यु भी न होती। जन्म क्यों होता है? इसका उत्तर है कि क्योंकि मनुष्य की उसके जन्म से पूर्व कहीं मृत्यु हुई होती है।

मृत्यु से पूर्व भी मनुष्य अनेक प्राणी योनियों में से किसी एक योनि में जीवन निर्वाह कर रहा होता है। वहां भी उसे शैशव, किशोर, युवा, प्रौढ़ तथा वृद्ध अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है। वृद्धावस्था में वह युवावस्था की भांति कर्म करने में वह स्वतन्त्रता नहीं पाता जिसकी उसे आवश्यकता होती है। वृद्ध शरीर प्रायः रोगों का घर भी बन जाता है। अतः जीवात्मा को अपने पूर्व व वर्तमान जन्म के कर्मों का भोग कराने के लिये परमात्मा नया जीवन प्रदान करते हैं जिसके लिए उसे मृत्यु की प्रक्रिया से गुजर कर जन्म प्राप्त होता है। जन्म प्राप्त होने पर वह अपने पूर्वजन्म के संस्कारों के आधार पर जीवन आरम्भ कर अपने परिवेश के अनुसार ज्ञान प्राप्त कर अपना जीवन व्यतीत करता है। मृत्यु का कारण जन्म और जन्म का कारण कर्म वा पाप-पुण्य हुआ करते हैं। यह जन्म मरण का चक्र अनादि काल से चल रहा है और अनन्त काल तक इसी प्रकार चलता रहेगा। परमात्मा अनादि काल से बार-बार इसी निमित्त प्रकृति से इस सृष्टि का निर्माण करते आ रहे हैं और करते रहेंगे। सृष्टि 4.32 अरब वर्षों की अपनी आयु तक कार्यरत रहने के बाद प्रलय को प्राप्त होगी। 4.32 अरब वर्ष की प्रलय वा रात्रि होगी जिसके बाद ईश्वर पुनः सृष्टि की रचना करेंगे और यह जन्म व मरण अथवा बन्धन व मोक्ष का चक्र अनन्त काल तक चलता रहेगा अर्थात इसका अन्त कभी नहीं होगा। अतः मृत्यु का कारण जन्म होता है, यह वेद, दर्शन, उपनिषद व गीता आदि ग्रन्थों से समझ में आ जाता है।

मनुष्य की आत्मा चेतन तत्व है। यह अनादि, अनन्त, अविनाशी, सूक्ष्म, अल्पज्ञ, ससीम, निराकार एवं एकदेशी है। यह सुख व दुःख का अनुभव करती है। सुख का मुख्य कारण मनुष्य के शुभ व श्रेष्ठ कर्म हुआ करते हैं और दुःख का कारण मनुष्य के पाप कर्म वा अशुभ कर्म हुआ करते हैं। शास्त्रों का अध्ययन, ऋषि-मुनियों व सच्चे ज्ञानियों की संगति से सुख व दुःख के कारण वा बन्धन-मोक्ष के सिद्धान्त को समझ लेने पर मनुष्य पाप करने से स्वयं को रोकता है। वह ईश्वरोपासना, अग्निहोत्र-यज्ञ एवं परोपकार आदि शुभ व पुण्य कर्मों को करता है जिससे उसे सुख प्राप्त होने सहित परजन्म में भी उत्तम मनुष्य योनि प्राप्त होती है। मनुष्य योनि जीवात्मा को मिलने वाले जन्म की सभी योनियों में उत्तम व श्रेष्ठ है। यह मोक्ष अर्थात स्वर्ग तथा दुःखरूपी नरक का द्वार भी है।

शास्त्रों में वर्णन है कि मनुष्य योनि में जन्म से भी श्रेष्ठ अवस्था मोक्ष की प्राप्ति होती है जिसे प्राप्त कर लेने के बाद मनुष्य का 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्षों तक जन्म नहीं होता। यही कारण है कि प्राचीन काल से हमारे ऋषि-मुनि व विद्वान मोक्ष की प्राप्ति के लिये योगाभ्यास, समाधि की सिद्धि व परोपकार आदि कर्म किया करते थे। आज भी बहुत से लोग हैं जो इन तथ्यों से परिचित हैं, वह वैदिक रीति से ईश्वरोपासना, अहिंसायुक्त जीवनयापन, अग्निहोत्र यज्ञ का अनुष्ठान, परोपकार, निर्धन व निर्बलों की सेवा आदि कार्य करते हैं। वह वेद आदि शास्त्रों का अध्ययन करते व दूसरों को कराते हैं। यह कार्य मोक्ष प्रदान कराने वाले होते हैं। इनसे मोक्ष प्राप्त हो जाने पर मनुष्य जन्म व मरण के बन्धनों से बहुत लम्बी अवधि तक मुक्त हो जाता है। मोक्ष का अर्थ जीवात्मा के सभी दुःखों की निवृत्ति का होना है। मोक्ष की अवस्था में जीवात्मा आनन्दस्वरूप ईश्वर के सान्निध्य में रहता है और पूरे ब्रह्माण्ड का विचरण कर सकता है। परमात्मा के सान्निध्य में उसे किसी प्रकार दुःख नहीं होता अपितु वह सब प्रकार से सुखों व आनन्द से युक्त रहता है।

सृजन एवं समभाव के स्वामी हैं शिव

सत्य ही शिव हैं और शिव ही सुंदर है। भगवान शिव की महिमा अपरंपार है। भोलेनाथ को प्रसन्न करने का ही महापर्व है महाशिवरात्रि। इस दिन भक्त जप, तप और व्रत रखते हैं और भगवान के शिवलिंग रूप के दर्शन करते हैं। शिवलिंग शिव एवं सृष्टि का प्रतीक है। शिव का अर्थ है कल्याणकारी और लिंग का अर्थ है सृजन। सर्जनहार के रूप में लिंग की पूजा होती है। मान्यताओं के अनुसार, लिंग एक विशाल लौकिक अंडाशय है, जिसका अर्थ है ब्रह्माण्ड। इसे ब्रह्मांड का प्रतीक माना जाता है।

महाशिवरात्रि पर देश के हर हिस्सों में शिवालयों में बेलपत्र, धतूरा, दूध, दही, शर्करा आदि से शिवजी का अभिषेक किया जाता है। देश एवं दुनिया में यह पर्व एक महोत्सव के रूप में मनाया जाता है क्योंकि इस दिन देवों के देव महादेव का विवाह पावर्ती से हुआ था। भगवान शिव को देवादि देव, महादेव, शंकर, विश्वनाथ, नीलकंठ, भोलेनाथ, शिव-शम्भू, महेश, महाकाल, आदिदेव, किरात, शंकर, चन्द्रशेखर, जटाधारी, नागनाथ, मृत्युंजय, त्रयम्बक, महेश, विश्वेश, महारुद्र, विषधर और भोले भंडारी जैसे अनेकों नाम से जाना जाता है। कहते हैं कि तन-मन और पूर्ण श्रद्धा से जो कोई भी भोले भंडारी की आराधना करता है उसे मनवांछित फल मिलता है। वे अपने भक्तों के दुख और परेशानियों को देख नहीं पाते। धर्मशास्त्रों में कहा गया है कि महाशिवरात्रि का व्रत करने वाले साधक को मोक्ष की प्राप्ति होती है। यह जगत में रहते हुए मनुष्य का कल्याण करने वाला व्रत है। इससे साधक, श्रद्धालु एवं व्रती के सभी दुखों, पीड़ाओं का अंत तो होता ही है साथ ही मनोकामनाएं भी पूर्ण होती है। शिव की साधना से धन-धान्य, सुख-सौभाग्य और समृद्धि की प्राप्ति होती है।

भगवान शिव सारे कष्टों एवं संकटों को हरने वाले हैं। समुद्र मंथन से 14 प्रकार के तत्व निकले। उसमें एक कालकूट विष भी निकला, उसकी भयंकर ज्वाला से समस्त ब्रह्माण्ड जलने लगा। इस संकट से व्यथित समस्त जन भगवान शिव के पास पहुंचे और उनके समक्ष प्रार्थना करने लगे, तब सभी की प्रार्थना पर भगवान शिव ने सृष्टि को बचाने हेतु उस विष को अपने कंठ में उतार लिया और उसे वहीं अपने कंठ में अवरूद्ध कर लिया। इस प्रकार इनका नाम नीलकंठ पड़ा। भगवान शिवशंकर करोड़ों सूर्य के समान दीप्तिमान हैं। जिनके ललाट पर चन्द्रमा शोभायमान है। नीले कण्ठ वाले, अभीष्ट वस्तुओं को देने वाले हैं। तीन नेत्रों वाले यह शिव, काल के भी काल महाकाल हैं। कमल के समान सुन्दर नयनों वाले अक्षमाला और त्रिशूल धारण करने वाले अक्षर-पुरुष हैं। यदि क्रोधित हो जाएं तो त्रिलोक को भस्म करने के शक्ति रखते हैं और यदि किसी पर दया कर दें तो त्रिलोक का स्वामी भी बना सकते हैं। यह भयावह भव सागर पार कराने वाले समर्थ प्रभु हैं। भोलेनाथ बहुत ही सरल स्वभाव, सर्वव्यापी और भक्तों से शीघ्र ही प्रसन्न होने वाले देव हैं। उनके सामने मानव क्या दानव भी वरदान मांगने आये तो उसे भी मुंह मांगा वरदान देने में वे पीछे नहीं हटते हैं।

भगवान शिव के प्रति जन-जन की भक्ति और निष्ठा, उनका समर्पण और उनकी स्तुति अनायास नहीं है, बल्कि भक्तों ने शिव की भक्ति में वह सब कुछ पाया है, जो उन्होंने चाहा है। यह उस अनादिअनंत, शांतस्वरूप पुरुषोत्तम शिव की भक्ति और वंदना का ही परिणाम है कि व्यक्ति अपनी परेशानियों, असाध्य बीमारियों से उभरकर स्वस्थ बन जाता है, अपने भौतिक जीवन में हर कामनाओं को पूर्ण होते हुए देखता है। वस्तुतः अपने विरोधियों एवं शत्रुओं को मित्रवत बना लेना ही सच्ची शिवभक्ति है। जिन्हें समाज तिरस्कृत करता है उन्हें शिव गले लगाते हैं। तभी तो भक्त भगवान शिव की शरण आकर निश्चिंत हो जाता है, तभी तो अछूत सर्प उनके गले का हार है। अधम रूपी भूत-पिशाच शिव के साथी एवं गण हैं। शिव सच्चे पतित

पावन हैं। उनके इसी स्वभाव के कारण देवताओं के अलावा दानव भी शिव का आदर करते हैं और भक्ति करते हैं। समाज जिनकी उपेक्षा करता है, शंकर उन्हें आमंत्रित करते हैं। ऐसे पालक रुद्रदेव की शरण में भक्त स्वयं को निश्चिंत, सुखी, समृद्ध महसूस करता है। वे संपूर्ण जगत का पालन करते हुए अभिमानयुक्त नहीं हैं, निराभिमानी हैं, वे हमें श्रेष्ठ मार्ग को दिखाने के लिए हमारी तामसीवृत्ति को मिटाते हैं, हमारी बुराइयों को दूर करते हैं।

शिव का रूप-स्वरूप जितना विचित्र है, उतना ही आकर्षक भी। शिव जो धारण करते हैं, उनके भी बड़े व्यापक अर्थ हैं। शिव की जटाएं अंतरिक्ष का प्रतीक हैं। चंद्रमा मन का प्रतीक है। शिव का मन चांद की तरह भोला, निर्मल, उज्ज्वल और जाग्रत है। शिव की तीन आंखें हैं। इसीलिए इन्हें त्रिलोचन भी कहते हैं। शिव की ये आंखें सत्व, रज, तम (तीन गुणों), भूत, वर्तमान, भविष्य (तीन कालों), स्वर्ग, मृत्यु, पाताल (तीनों लोकों) का प्रतीक हैं। शिव के हाथ में एक मारक शस्त्र है। त्रिशूल भौतिक, दैविक, आध्यात्मिक इन तीनों तापों को नष्ट करता है वहीं शिव के एक हाथ में डमरू है, जिसे वह तांडव नृत्य करते समय बजाते हैं। डमरू का नाद ही ब्रह्म रूप है। शिव के गले में मुंडमाला है, जो इस बात का प्रतीक है कि शिव ने मृत्यु को वश में किया हुआ है। शिव ने शरीर पर व्याघ्र चर्म यानी बाघ की खाल पहनी हुई है। व्याघ्र हिंसा और अहंकार का प्रतीक माना जाता है। इसका अर्थ है कि शिव ने हिंसा और अहंकार का दमन कर उसे अपने नीचे दबा लिया है। शिव के शरीर पर भस्म लगी होती है। शिवलिंग का अभिषेक भी भस्म से किया जाता है। भस्म का लेप

शिव का रूप-स्वरूप जितना विचित्र है, उतना ही आकर्षक भी। शिव जो धारण करते हैं, उनके भी बड़े व्यापक अर्थ हैं। शिव की जटाएं अंतरिक्ष का प्रतीक हैं। चंद्रमा मन का प्रतीक है। शिव का मन चांद की तरह भोला, निर्मल, उज्ज्वल और जाग्रत है। शिव की तीन आंखें हैं। इसीलिए इन्हें त्रिलोचन भी कहते हैं। शिव की ये आंखें सत्व, रज, तम (तीन गुणों), भूत, वर्तमान, भविष्य (तीन कालों), स्वर्ग, मृत्यु, पाताल (तीनों लोकों) का प्रतीक हैं। शिव के हाथ में एक मारक शस्त्र है। त्रिशूल भौतिक, दैविक, आध्यात्मिक इन तीनों तापों को नष्ट करता है।

बताता है कि यह संसार नश्वर है। शिव का वाहन वृषभ यानी बैल है। वह हमेशा शिव के साथ रहता है। वृषभ धर्म का प्रतीक है। महादेव इस चार पैर वाले जानवर की सवारी करते हैं, जो बताता है कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष उनकी कृपा से ही मिलते हैं।

भगवान शिव जटारूपी वन से निकलती हुई गंगाजी की गिरती हुई धाराओं से पवित्र किए गले में सर्पों की लटकती हुई विशाल माला को धारण कर, डमरू के डम-डम शब्दों से मंडित प्रचंड तांडव नृत्य कर इस संसार की आसुरी शक्तियों को ललकारते हैं, वे शिव हम सबका कल्याण करते और हमारी जीवन सृष्टि को उन्नत एवं खुशहाल बनाते हैं। भगवान शिव इस संसार के पालनहार हैं, उनके एक हाथ में वर, दूसरे हाथ में अभय, तीसरे हाथ में अमृत कलश और चैथे हाथ में त्रिशुल है। आपकी कृपा चाहने वाले कोई भक्त आपके ह्यवरह्ल के पात्र बनें, कोई भक्त ह्यअभयह्ल के पात्र बनें और कोई हाथ में स्थित घनीभूत ह्यअमृतह्ल के पात्र बनें और ऐसी पात्रता हर शिव भक्त में उमड़े और शिव भक्ति का एक प्रवाह संपूर्ण संसार में प्रवहमान बने, यही इस संसार और सृष्टि का उन्नयन और उत्थान कर सकती है।भारतीय संस्कृति की भांति शिव परिवार में भी समन्वयकारी गुण दृष्टिगोचर होते हैं। वहां जन्मजात विरोधी स्वभाव के प्राणी भी शिव के प्रताप से परस्पर प्रेमपूर्वक निवास करते हैं। शंकर का वाहन बैल है तो पार्वती का वाहन सिंह, गणेश का वाहन चूहा है तो शिव के गले का हार सर्प एवं कार्तिकेय का वाहन मयूर है। ये सभी परस्पर वैरभाव को छोड़ कर सौहार्द एवं सद्भाव से रहते हैं। शिव परिवार का यह आदर्श रूप प्रत्येक परिवार एवं समाज के लिये प्रेरक है। भगवान शिव जन-जन की रक्षा करते हैं, भक्तों की रक्षा करते हैं। वे देवताओं में श्रेष्ठ, सर्वेश्वर, संहारकर्ता, सर्वव्यापक, कल्याणरूप, चंद्रमा के समान शुभ्रवर्ण हैं, जिनकी गोद में पार्वती, मस्तक पर गंगा, ललाट पर बाल चंद्रमा, कंठ में हलाहल विष और वक्ष स्थल पर सर्पराज शोभित हैं, वे भस्म से विभूषित हैं। जो जगत का भरण करते हैं पर स्वयं भिक्षु हैं, जो सब प्राणियों को निवास देते हैं परंतु स्वयं गृहहीन हैं, जो विश्व को ढकते हैं परंतु स्वयं नग्न हैं। वाणियों के उत्पत्ति स्थान होते हुए भी अज्ञानी भक्तों की वाणियों (स्तुतियों) को सुन लेते हैं। विनीतों, भक्तों के आग्रह से आप क्या-क्या नहीं करते।

नदी के आंचल में है प्राचीन सिक्कों का इतिहास

प्राचीन काल में भारतीय संस्कृति के लगभग सभी क्षेत्र धार्मिक परम्पराओं से प्रभावित थे। एरण, विदिशा तथा उज्जैन से प्राप्त मुद्राओं पर पाये जाने वाले चिन्ह एवं प्रतीकों के कुछ उद्देश्य, उपयोग व प्रयोजन है। नदियों को वैदिक काल से ही देवत्व प्राप्त हो गया था। रामायण और महाभारत में नदी देवताओं का उल्लेख प्राप्त होता है। नदी देवताओं की स्तुति वैदिक साहित्य में भी मिलती है। मंदिरों के द्वार पर नदियों का अंकन शुभ माना जाता था। इसी विचारधारा के कारण मुद्राओं पर भी नदियाँ अंकित की गई। अनेक सिक्कों पर नदी व पर्वत का अंकन साथ-साथ हुआ है। जल के महत्व ने नदियों के महत्व को स्वतः ही बढ़ाया है फलस्वरूप इसे हम मथुरा, एरण, विदिशा, उज्जैन कौशाम्बी आदि के सिक्कों पर देख सकते हैं।

नदियों को सदैव प्रवाहित रखने, पर्यावरण को स्वच्छ रखने, जल संरक्षण एवं पुनर्भरण के संदेश भी इन प्रतीकों के माध्यम से जनसाधारण तक पहुंचाये गये हैं। प्राचीन समय में जब संचार के साधन आज जितने विकसित नहीं थे तब भी सिक्कों के द्वारा ही सारे संदेश सम्पूर्ण देश में भेजे जाते थे। भारत की मुद्रा प्रणाली उस समय अत्यंत सशक्त थी एवं कश्मीर से कन्याकुमारी तक एवं अफगानिस्थान से आसाम तक संदेश, निर्देश, आदेश आदि राज्यों के द्वारा सिक्कों के माध्यम से किया जाता था। आज भी अधिक अन्न उपजाओं, छोटा परिवार-सूखी परिवार, विश्व बन्धुत्व आदि के संदेश सिक्कों के माध्यम से दिये जा रहे हैं। इसी पृष्ठभूमि में सिक्कों पर अंकित कतिपय अंकनों को देखने का प्रयास किया जा सकता है। मथुरा के प्राचीनतम स्थानीय सिक्कों पर नारी आकृति के अंकन के नीचे लहरियादार प्राप्त होती है और उसके बीच मछलियों की पांत बनी है। दोनों को एक साथ देखने पर अनुमान होता है कि इन सिक्कों पर अंकित नारी कदाचित नदी देवता होगी। यह अंकन यहां के सभी शासकों के सिक्कों पर प्राप्त होता है। इस कारण इस नदी देवता को यमुना का प्रतीक सहज रूप से कहा जा सकता है। इस सिक्कों पर नारी आकृति के ऊपर उठे दाहिने हाथ में कमल है और बायां हाथ नीचे लटक रहा है। कमलधारिणी होने के कारण विद्वानों ने इसे लक्ष्मी अनुमान किया है। कमलस्थिता नारी आकृति के सम्बन्ध में तो लक्ष्मी होने का अनुमान किया जा सकता है किन्तु कमल लेने मात्र से किसी नारी को लक्ष्मी मानना कठिन है। हाथ में कमल नारी आकृति के संभ्रान्त होने का द्योतक मालूम पड़ता है और साहित्य में इस रूप में इनकी प्रचुर चर्चा प्राप्त होती है। सिक्कों पर लक्ष्मी अतिरिक्त अन्य देवियों को भी कमलहस्ता दिखाया गया है यथा-पंचाल के सिक्कों पर फाल्गुनी, पुष्कलावती के सिक्कों पर वहां की नगर देवता अम्बा। अतः आश्चर्य नहीं मथुरा के शासकों ने यमुना को देवी मानकर अपने सिक्कों पर अंकित किया है। मथुरा के इन सिक्कों के अतिरिक्त गुप्तकाल से पूर्व नदी देवता की कोई चर्चा प्राप्त नहीं होती। गुप्तकालीन सिक्कों में समुद्रगुप्त के व्याघ्रनिहंता भांति के सिक्कों कें पृष्ठ भाग पर एक नारी आकृति हस्ति मुख मत्स्य पर खड़ी अंकित है। आभूषणों से सुसज्जित इस देवी के बांये हाथ में कमल है और दाहिना हाथ खाली है।

इसी प्रकार का अंकन प्रथम कुमार गुप्त के व्याघ्रनिहंता भांति के सिक्कों पर भी हुआ है। वहां भी देवी मकर पर खड़ी हैं, बांये हाथ में कमल है, दाहिने हाथ में फल का गुच्छा है जिसे वे सम्मुख आसन पर खड़े मयूर को खिला रही है। प्रथम कुमार गुप्त के ही एक खड्ग निहंता के सिक्के पर भी मकर पर खड़ी देवी का अंकन हुआ है। मकर के उठे हुये मुख में नाल सहित कमल है। देवी अपनी दाहिनी हाथ की तर्जनी से किसी अदृश्य वस्तु की ओर संकेत कर रही हैं, बांया हाथ खाली नीचे लटक रहा है, देवी के पीछे छत्र लिये छत्रधारिणी खड़ी हैं। स्मिथ ने समुद्रगुप्त के सिक्के पर अंकित इस देवी को समुद्र देवता वरूण की पत्नी का अनुमान किया है और कहा है कि इस कल्पना को राजा के नाम ह्यसमुद्रह्ल से बल मिलता है। उन्होंने विकल्प रूप से यह भी कहा है कि वे रति हो सकती है, क्योंकि उनका वाहन भी मीन अथवा मकर कहा जाता है। एलन ने उन्हें नदी देवता होने का अनुमान किया है और उनकी पहचान गंगा से की

है।

अल्तेकर ने स्मिथ के मत का खंडन करते हुए एलन के मत का समर्थन किया है और इस तथ्य की ओर संकेत किया है कि गंगा और यमुना गुप्त मूर्ति कला में प्रमुख रूप से दिखाई पड़ती है, किन्तु देवी के बांये हाथ के कमल ने उन्हें असमंजस में डाल दिया है, उससे उन्हें उसके लक्ष्मी होने का संदेह होने लगा है। फलतः वे देवी के सम्बन्ध में निश्चयपूर्वक कुछ कहने में असमर्थ हैं। परमेश्वरीलाल गुप्त का कहना है कि समुद्रगुप्त के सिक्के पर अंकित नारी को वारूणी, रति अथवा गंगा कुछ भी कहा जा सकता है। उन्हें ने इस और ध्यान आकृष्ट किया है कि देवी का जो अंकन कुमारगुप्त के ही कार्तिकेय भांति के सिक्कों पर अंकित मयूर चुगाते हुए राजा का स्मरण दिलाता है और खड्गनिहंता पर अंकित देवी के पीछे छत्र धारिणी, गुप्त शासकों के छत्र भांति के सिक्कों पर अंकित छत्रधारी राजा की याद दिलाती है। इन तथ्यों के प्रकाश में उनकी धारणा है कि इन सिक्कों पर देवी का अंकन न होकर रानी का अंकन हुआ है।

समुद्रगुप्त के सिक्के पर अंकित देवी के रति होने की स्मिथ की कल्पना स्वतः निस्सार है मीन रति का प्रतीक है, वाहन नहीं। कुमारगुप्त के सिक्कों पर अंकित नारी आकृतियों के सम्बन्ध में परमेश्वरीलाल गुप्त का कथन दृष्टव्य होते हुए भी कोई महत्व नहीं रखता। उनके साथ वाहन रूप मे मकर ही यह कहने के लिये पर्याप्त है कि वे मात्र रानी नहीं है। उन्हें नदी देवता (देवी) के रूप में ही पहचानना अधिक संगत होगा। समुद्र और कुमार गुप्त के इन सिक्कों पर ये देवियाँ किस नदी देवता का प्रतीक है, यह तनिक गंभीर विवेचन की अपेक्षा रखता है। यह ज्ञातव्य है कि भारतीय कला और ब्राह्मण देव परिवार में नदी देवता (देवी) की कल्पना गुप्तकाल से पूर्व अज्ञात है किन्तु कुमार स्वामी ने नदी देवता के मूल में यक्षियों को देखने का प्रयास किया है। उन्होंने इस तथ्य की ओर ध्यान आकृष्ट किया है कि अनेक स्थलों पर यक्ष यक्षियों का जल जंतुओं मकर, जलन्तुरंग जमेल आदि के साथ अंकन किया गया है। इस आधार पर उन्होंने यह भी अनुमान प्रस्तुत किया है कि इन यक्ष यक्षियों का घनिष्ठतम संबंध जीवनदायी जल के साथ रहा है। उन्होंने इस ओर भी ध्यान आकृष्ट किया है कि इस प्रकार की यक्षियों का अंकन वास्तु के विभिन्न अंगों पर न केवल एकाकी वरन् युग्म रूप में भी पाया जाता है। इस प्रकार के युग्मों का जलेम आदि जन्तुओं के साथ अंकन कंकाली टीला में बहुत हुआ है। कंकाली टीला से प्राप्त तोरण पर मकरवाहिनी शालभंजिका नारियों का अंकन विशेष दृष्टव्य है।

मकर वाहिनी शालभंजिका तोरण से और उत्तर के चन्द्रगुप्त के उदयगिरि गुहा के द्वार विम्ब के आस-पास अंकित हुई। इस काल तक यक्षी के इस रूप में कोई परिवर्तन लक्षित नहीं होता। केवल इतना ही अंतर है कि इनमें मकर का अंकन प्रमुख रूप से हुआ है। इन्हें सामान्यतः लोगों ने गंगा-यमुना पहचानने की चेष्टा की है, पर कुमार स्वामी मानते हैं कि उनके इस प्रकार पहचाने जाने का कोई औचित्य नहीं है। तिगोया के मंदिर द्वार पर भी शालभंजिका का ही अंकन हुआ है पर अन्तर यह है कि वहां दोनों और के वाहनों में एक मकर है और दूसरा कच्छप और उसके बाद के अंकनों में ही वृक्ष का लोप हुआ और यक्षियों ने स्पष्ट रूप से दो भिन्न देवता(देवी) का रूप धारण किया है और वे नदी देवता गंगा और यमुना के रूप में पहचानी गयी। उन्हें गंगा और यमुना के नाम से अभिहित किया गया है और उन्हें क्रमशः मकर और कच्छप आरूढ़ बतलाया गया है।

कुमार स्वामी के अनुसार जलचर वरूण के प्रतीक थे और इसलिये नदियों को वरूण की पत्नी कहा गया है। इस कथन का समर्थन उदयगिरि के वराह गुफा के दोनों ओर अंकित दृश्यों से होता है जिसमें दो नदियाँ बहकर सागर से मिलती दिखाई गयी हैं। सागर में वरूण स्वंय रत्नपात्र लिये खड़े हैं और नदियों में मकर और कच्छप पर घट लिये दो देवियाँ हैं। मकर वाहिनी देवीगंगा और कच्छप वाहिनी देवीयमुना कही जाती है। यह बैजनाथ (कांगड़ा) के वैद्यनाथ मंदिर में अंकित अभिलेख और भेड़ाघाट के अभिलेखों से प्रकट होता है। अस्तु, समुद्रगुप्त के सिंहनिहंता भांति देवी को लोगों ने मकरासीन कहा अवश्य है, पर उसका आकार और रूप मकर की अपेक्षा मत्स्य के समान है। कला में मकर का जिन रूपों में अंकन हुआ है, उससे यह सर्वथा भिन्न है। अतः एलन के उनके नदी देवता होने की बात स्वीकार करते हुए भी मकर के अभाव में प्रतिमा को लक्षणों के अनुसार गंगा कहना कठिन है। किन्तु मच्छुद्दान जातक में गंगा को नदी देवता के रूप में मत्स्य वर्ग की संरक्षिका बताया गया है। गोपीनाथ राव के अनुसार भी गंगा का वाहन मत्स्य या मकर होना चाहिए। हो सकता है कि समुद्रगुप्त के समय तक गंगा के मकरवाहिनी रूप में अपना मूर्त रूप धारण न किया हो अतः कालकर ने उसके अंकन में बौद्ध अनुश्रुति से प्रेरणा प्राप्त की हो। यह भी संभव है कि मात्र नदी देवता का अंकन हो, किसी नदी देवता विशेष का नहीं और उस अवस्था में स्मिथ के स्वर में उन्हें वरूण पत्नी कहना अधिक संगत होगा। जिस प्रकार प्रथम कुमारगुप्त ने अपने नाम के अनुरूप अपने एक भांति के सिक्कों पर कुमार (कार्तिकेय) का अंकन किया है, इसी प्रकार समुद्रगुप्त ने अपने नाम के अनुरूप पत्नी का अंकन किया हो तो आश्चर्य नहीं। अरस्तु, कुमारगुप्त के दोनों भांति के सिक्कों पर देवी मकर वाहिनी है, उनके गंगा होने की कल्पना की जा सकती है। खड्ग निहंता भांति के सिक्कों पर मकर वाहिनी देवी के पार्श्व में छत्रधारिणी, उनके इस पहचान में किसी प्रकार बाधक नहीं है। पटना संग्रहालय में गुप्तोत्तरकाल की उड़ीसा से प्राप्त एक मकरवाहिनी मूर्ति है जिसमें सिक्कों के समान ही देवी के पीछे छत्र लिये छत्रधारिणी खड़ी है।

कुमारगुप्त के व्याघ्र निंहत भांति के सिक्कों पर मकरवाहिनी देवी का मयूर को चुगाते हुए अंकन, उनके गंगा पहचानने में थोड़ी कठिनाई अवश्य उत्पन्न करता है। अतः उन्हें नदी देवता स्वीकार करते हुए इस तथ्य पर ध्यान देना उचित होगा कि मयूर का संबंध सरस्वती के साथ है और सरस्वती स्वयं एक नदी है। संभवतः नदी देवता के रूप में सरस्वती के रूप में पहचानने के लिये मयूर के साथ उसका संबंध कर दिया हो। नदी देवता के रूप में सरस्वती अनजानी नहीं है। एलोरा में गंगा, यमुना और सरस्तवी का अंकन हुआ है। किन्तु उनमें वाहन स्पष्ट नहीं है। भेड़ाघाट के चौंसठ योगिनी मंदिरों में मकर के साथ जाह्नवी (गंगा), कच्छप के साथ यमुना और मयूर के साथ उसका अंकन हुआ है। समुद्रगुप्त के समय तक गंगा का मकरवाहिनी स्वरूप रूढ़ नहीं हुआ था। किन्तु प्रथम कुमार गुप्त के समय तक गंगा का यह स्वरूप रूढ़ होकर विकसित हो गया था। संभवतः उनके समय में सरस्वती की भी नदी देवता के रूप में कल्पना की गयी थी।

वैदिक धर्म में पानी का बहुत महत्व रहा है, और वैदिक साहित्य में आपो देवता (जल देवता) का अनेक स्थलों पर उल्लेख हुआ है। सिक्कों पर धार्मिक भावना एवं जल संरक्षण की पृष्ठभूमि में ही नदी प्रतीकों का अंकन हुआ हो तो आश्चर्य नहीं किन्तु किसी नदी विशेष का कह सकना कठिन ही है। यह अनुमान अवश्य किया जा सकता है कि क्षिप्रा, नर्मदा के प्रतीक स्वरूप ही नदी प्रतीकों का अंकन उज्जयिनी महिष्मति के सिक्कों पर किया होगा।

लैंगिक समानता बनाम सामाजिक संतुलन

महिला शब्द नारी को गरिमामयी बनाता है। महिला शब्द नारी के आदर भाव को प्रकट करता है। ह्यस्त्रीह्ल शब्द नारी के सामान्य पक्ष को प्रदर्शित करता है। नर का स्त्रीलिंग ही नारी कहलाता है। नारी शब्द का प्रयोग मुख्यतः वयस्क स्त्रियों के लिए किया जाता है। नारी शब्द का प्रयोग संपूर्ण स्त्री वर्ग को दशार्ने के लिए भी किया जाता है। औरत एक अरबी शब्द है,। औरत शब्द ह्यऔराहह्ल धातु से बनी है। जिसका अर्थ शरीर को ढंकना होता है। अरबी मजहब में औरत की यही परिभाषा है। स्त्री, प्रकृति सूचक है। यह स्वभाव वाचक शब्द है। नारी, देवत्व सूचक है। यह गुणवाचक शब्द है। महिला, सामाजिक प्रस्थिति सूचक है। यह अधिकार वाचक शब्द है। औरत, मजहबी सूचक है। यह उपभोग बोधक शब्द है। मादा (फीमेल), जैविक सूचक है। यह प्रजनन बोधक शब्द है। वूमेन,पराधीनता सूचक है अर्थात (किसी व्यक्ति की पत्नी) वाइफ ऑफ मैन। यह पराधीन बोधक शब्द है। अतः महिलाओं के लिए शब्द चयन पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। कहने का तात्पर्य यह है कि भारतीय स्त्रियां भी अपने लिए सही शब्द का चयन करें/करवाएं। क्योंकि स्त्रियों की सोच और उनकी अभिव्यक्ति ही उनके व्यक्तित्व का दर्पण होती है। किसी भी राष्ट्र के विकास का स्थाई भविष्य उसके लैंगिक समानता से तय होता है। लैंगिक समानता राष्ट्र के विकास को गति प्रदान करता है। कहावत है कि हर एक सिक्के के दो पहलु होते हैं। इनमे से किसी एक पहलु को हटा दें तो सिक्के का कोई अस्तित्व नहीं रह जाता। कहने का तात्पर्य झ नर और नारी एक ही सिक्के के दो पहलु हैं। नर और नारी के अस्तित्व से समाज है। इनमे से किसी एक के साथ दुर्व्यवहार होगा तो समाज में असंतुलन की स्थिति पैदा होगी। जिससे समाज का अस्तित्व खतरे में आ जाएगा। राष्ट्र के विकास के लिए समाज में लैंगिक समानता का होना बहुत जरूरी है। महिला और पुरुष समाज के मूलाधार हैं। अतएव लैंगिक समानता रूपी नींव पर राष्ट्र के विकास रूपी इमारत का निर्माण किया जा सकता है। अभी भी भारत में लिंग आधारित भेदभाव कार्य कर रहा है। जन्म से लेकर मौत तक, शिक्षा से लेकर रोजगार तक, हर जगह पर लैंगिक भेदभाव साफ साफ नजर आ जाता है। इस भेदभाव को कायम रखने में सामाजिक और राजनीतिक पहलू बहुत बड़ी भूमिका निभाते है। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2022 की थीम/प्रसंग झ ह्यजेंडर इक्वालिटी टुडे फॉर ए सस्टेनेबल टुमारोह्ल (एक स्थायी कल के लिए आज लैंगिक समानता) है। सेंटर फॉर जेंडर इक्वलिटी एंड इनक्लूसिव लीडरशिप की चेयरपर्सन अलका रजा का लक्ष्य है झ महिला सशक्तिकरण, शांति और सुरक्षा के लिए मौजूदा चुनौतियों और बाधाओं को कवर करना। संयुक्त राष्ट्र सचिवालय न्यूयॉर्क में अब तक की सबसे कम उम्र की पेशेवर महिला के रूप में नियुक्त होने का गौरव लिसेलोटे वाल्डहाइम नेचुरल को मिला है। उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान महिलाओं व पुरुषों के लिंगानुपात को ठीक करने के साथ महिलाओं पर हो रहे अत्याचार के विरुद्ध अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई बड़ी पहल की थी। वर्ल्ड इकनोमिक फोरम द्वारा वर्ष 2021 के ग्लोबल जेंडर गैप इंडेक्स की बात करें तो भारत 156 देशों की सूची में 140 नंबर पर आता हैं। इस रैंक से साबित होता है कि आज भी हमारे देश में लैगिंक भेदभाव की जड़ें गहरी हैं। महिलाओं के खिलाफ हिंसा एक ऐसा शब्द है, जिसका इस्तेमाल समाज में महिलाओं के खिलाफ होने वाले और मुख्य रूप से हिंसात्मक कार्यों के सभी रूपों को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। महिलाओं के खिलाफ हिंसा आमतौर पर लिंग आधारित होती है। लैंगिक समानता लाकर लिंग आधारित असमानताओं को समाज से दूर किया जा सकता है। लैंगिक समानता का उद्देश्य पुरुषों और महिलाओं के बीच सभी सीमाओं और मतभेदों को

दूर करना है। यह पुरुष और महिला के बीच किसी भी प्रकार के भेदभाव को समाप्त करता है। लिंग समानता पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए समान अधिकार और अवसर सुनिश्चित करती है, चाहे वह घर पर हो या शैक्षणिक संस्थानों में या कार्यस्थलों पर। लैंगिक समानता राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक समानता की गारंटी देती है। भारत में लैंगिक समानता के आधार पर महिलाओं को मिले 11 अधिकार इस प्रकार हैं- 1- समान मेहनताना का अधिकारः इक्वल रिम्यूनरेशन एक्ट में दर्ज प्रावधानों के मुताबिक सैलरी के मामलों में लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं कर सकते हैं। किसी कामकाजी महिला को पुरुष के बराबर सैलरी लेने का अधिकार है। 2- गरिमा और शालीनता का अधिकारः महिला को गरिमा और शालीनता से जीने का अधिकार मिला है। किसी मामले में अगर महिला आरोपी है, उसके साथ कोई मेडिकल परीक्षण हो रहा है तो यह काम किसी दूसरी महिला की मौजूदगी में ही होना चाहिए। 3- कार्यस्थल पर उत्पीड़न से सुरक्षाः भारतीय कानून के मुताबिक अगर किसी महिला के खिलाफ दफ्तर में शारीरिक उत्पीड़न या यौन उत्पीड़न होता है, तो उसे शिकायत दर्ज करने का अधिकार है। इस कानून के तहत, महिला 3 महीने की अवधि के भीतर ब्रांच ऑफिस में इंटरनल कंप्लेंट कमेटी (आई सी सी) को लिखित शिकायत दे सकती है। 4 -घरेलू हिंसा के खिलाफ अधिकारः भारतीय संविधान की धारा 498 के अंतर्गत पत्नी, महिला लिव-इन पार्टनर या किसी घर में रहने वाली महिला को घरेलू हिंसा के खिलाफ आवाज उठाने का अधिकार मिला है। पति, मेल लिव इन पार्टनर या रिश्तेदार अपने परिवार के महिलाओं के खिलाफ जुबानी, आर्थिक, जज्बाती या यौन हिंसा नहीं कर सकते। आरोपी को 3 साल गैर-जमानती कारावास की सजा हो सकती है या जुमार्ना भरना पड़ सकता है। 5 -पहचान जाहिर नहीं करने का अधिकारः किसी महिला की निजता की सुरक्षा का अधिकार हमारे कानून में दर्ज है। अगर कोई महिला यौन उत्पीड़न का शिकार हुई है तो वह अकेले डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के सामने बयान दर्ज करा सकती है। किसी महिला पुलिस अधिकारी की मौजूदगी में बयान दे सकती है। 6- मुफ्त कानूनी मदद का अधिकारः लीगल सर्विसेज अथॉरिटीज एक्ट के मुताबिक बलात्कार की शिकार महिला को मुफ्त कानूनी सलाह पाने का अधिकार है. लीगल सर्विस अथॉरिटी की तरफ से किसी महिला का इंतजाम किया जाता है। 7- रात में महिला को नहीं कर सकते गिरफ्तारः किसी महिला आरोपी को सूर्यास्त के बाद या सूर्योदय से पहले गिरफ्तार नहीं कर सकते। अपवाद में फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट के आदेश को रखा गया है। कानून यह भी कहता है कि किसी से अगर उसके घर में पूछताछ कर रहे हैं तो यह काम महिला कांस्टेबल या परिवार के सदस्यों की मौजूदगी में होना चाहिए। 8- वर्चुअल शिकायत दर्ज करने का अधिकारः कोई भी महिला वर्चुअल तरीके से अपनी शिकायत दर्ज कर सकती है. इसमें वह ईमेल का सहारा ले सकती है। महिला चाहे तो रजिस्टर्ड पोस्टल एड्रेस के साथ पुलिस थाने में चिट्ठी के जरिये अपनी शिकायत भेज सकती है। इसके बाद एसएचओ महिला के घर पर किसी कांस्टेबल को भेजेगा जो बयान दर्ज करेगा। 9-अशोभनीय भाषा का नहीं कर सकते इस्तेमालः किसी महिला (उसके रूप या

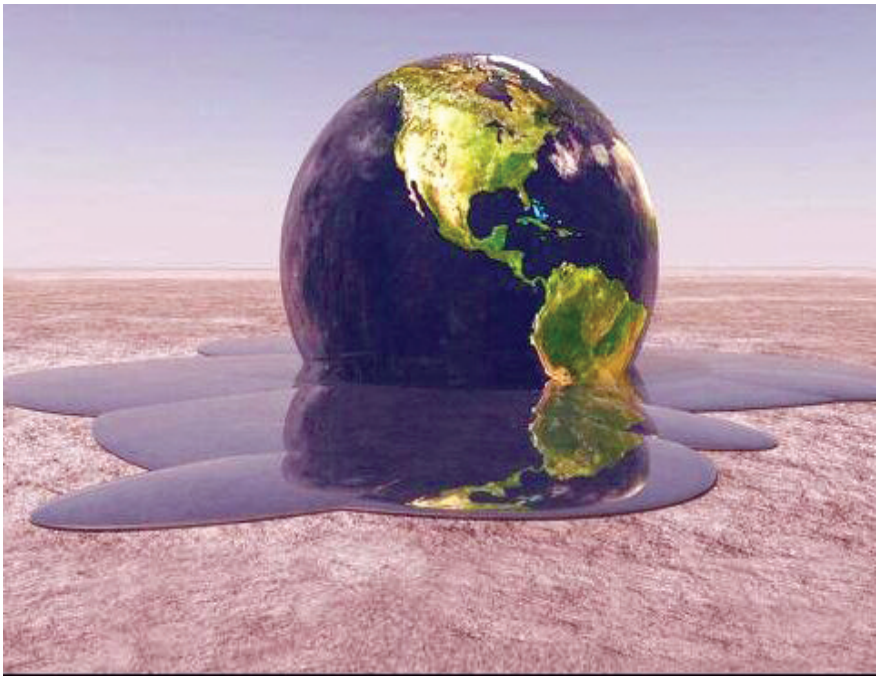

शरीर के किसी अंग) को किसी भी तरह से अशोभनीय, अपमानजनक, या सार्वजनिक नैतिकता या नैतिकता को भ्रष्ट करने वाले रूप में प्रदर्शित नहीं कर सकते. ऐसा करना एक दंडनीय अपराध है। 10- महिला का पीछा नहीं कर सकतेः आईपीसी की धारा 354 डी के तहत वैसे किसी भी व्यक्ति के खिलाफ कानूनी कार्रवाई होगी जो किसी महिला का पीछे करे, बार-बार मना करने के बावजूद संपर्क करने की कोशिश करे या किसी भी इलेक्ट्रॉनिक कम्युनिकेशन जैसे इंटरनेट, ईमेल के जरिये मॉनिटर करने की कोशिश करे। 11- जीरो एफआईआर का अधिकारः किसी महिला के खिलाफ अगर अपराध होता है तो वह किसी भी थाने में या कहीं से भी एफआईआर दर्ज करा सकती है. इसके लिए जरूरी नहीं कि कंप्लेंट उसी थाने में दर्ज हो जहां घटना हुई है. जीरो एफआईआर को बाद में उस थाने में भेज दिया जाएगा जहां अपराध हुआ हो।

3- कार्यस्थल पर उत्पीड़न से सुरक्षाः भारतीय कानून के मुताबिक अगर किसी महिला के खिलाफ दफ्तर में शारीरिक उत्पीड़न या यौन उत्पीड़न होता है, तो उसे शिकायत दर्ज करने का अधिकार है। इस कानून के तहत, महिला 3 महीने की अवधि के भीतर ब्रांच ऑफिस में इंटरनल कंप्लेंट कमेटी (आई सी सी) को लिखित शिकायत दे सकती है। 4 -घरेलू हिंसा के खिलाफ अधिकारः भारतीय संविधान की धारा 498 के अंतर्गत पत्नी, महिला लिव-इन पार्टनर या किसी घर में रहने वाली महिला को घरेलू हिंसा के खिलाफ आवाज उठाने का अधिकार मिला है।

महिलाओं के साथ भेदभाव को समाप्त करने में अध्यात्म गहरी भूमिका निभाता है। हमारी संस्कृति में स्त्री का दर्जा पुरुष से कम नहीं माना गया है। मुगल आक्रमण से पहले स्त्रियों को पुरुषों के समान दर्जा दिया जाता था। हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार ज्ञान की देवी सरस्वती, धन की देवी लक्ष्मी और शक्ति की देवी दुर्गा पूजा जाता है। हमारे जीवन को अधिशासित करने वाले सत, रज और तम, इन तीन गुणों में सामंजस्य बनाए रखने के लिए हम देवी मां की ही प्रार्थना करते हैं। यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ।। मनुस्मृति 3/56 ।। जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं और जहाँ स्त्रियों की पूजा नही होती है, उनका सम्मान नही होता है वहाँ किये गये समस्त अच्छे कर्म निष्फल हो जाते हैं। नारी जननी है। नारी नर का अभिमान है। नारी राष्ट्र के विकास की नींव है। नारी सृष्टि का अनमोल उपहार है । नारी से सृष्टि और सृष्टि से नारी है। नारी सशक्त बनेगी तो देश सशक्त बनेगा। नैतिक मूल्यों को अपनाने से ही नारी सशक्त बनेगी। वैदिक साहित्य में आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों के कारण नारी पूजनीय एवं वंदनीय थी। परंतु वर्तमान समय में नारियों का पाश्चात्य संस्कृति के कारण व्यसन, नशा विकृतियों में लिप्त होना आदि अवगुण नारी को अबला बनाता है। नारी जीवन में सदगुणों को अपनाकर फिर से देवत्व को प्राप्त हो सकती है। संस्कृति, संस्कार से बनती है। सभ्यता, नागरिकता से बनती है। नागरिकता मानव की पहचान है। नर और नारी दोनों मानव हैं। मानव ही किसी भी देश के नागरिक कहलाते हैं। नागरिक शब्द से नागरिकता का निर्माण हुआ। लैंगिक समानता किसी भी राष्ट्र के सतत भविष्य का द्योतक होता है। लैंगिक असमानता समाज के संतुलन व्यवस्था और विकास को प्रभावित करती है। समतामूलक समाज राष्ट्र को संतुलित करता है। किसी भी राष्ट्र की सभ्यता की पहचान उसके संतुलित समाज से ही होती है। अतएव हम कह सकते हैं कि लैंगिक समानता, समतामूलक समाज को स्थापित करता है।

फिलहाल मुश्किल है जस्ट ट्रांजिशन की राह

भारत के शीर्ष कोयला खनन और कोयला पावर प्लांट पर निर्भर जिलों के लिए जस्ट ट्रांजिशन (न्यायसंगत परिवर्तन) का अर्थ क्या होगा और कैसे जस्ट ट्रांजिशन लाया जा सकता इसे समझने के इरादे से दिल्ली स्थित एनवायरनमेंटल थिंक टैंक, इंटरनेशनल फोरम फॉर एनवायरनमेंट, सस्टेनेबिलिटी एंड टेक्नोलॉजी (ऋद्धफ्एरळ) ने कोरबा जिले का चयन किया गया और उसका अध्ययन किया।

ह्लकोरबाः प्लानिंग ए जस्ट ट्रांजिशन फॉर इंडियाज बिगेस्ट कोल एंड पावर डिस्ट्रिक्टह्व शीर्षक की इस रिपोर्ट को श्री टी.एस. सिंह देव, पंचायत और ग्रामीण विकास मंत्री और स्वास्थ्य मंत्री, छत्तीसगढ़ सरकार, श्री अनिल कुमार जैन, सचिव, कोयला मंत्रालय और श्री अमिताभ कांत, सीईओ, नीति आयोग ने ऑनलाइन ईवेंट के माध्यम से रिलीज किया।

कोरबा देश के 16% से अधिक कोयले का उत्पादन करता है। यह बिजली उत्पादन का केंद्र भी है, जिसकी थर्मल पावर क्षमता 6,428 मेगावाट है। इन सब वजहों से इस अध्ययन मेन कुछ महत्वपूर्ण बातें सामने आयीं।

अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष

कोरबा 40% से अधिक जनजातीय आबादी वाला एक अनुसूची श जिला है। यह एक आकांक्षी जिला है जहां 41% लोग गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे हैं। जिले की 32% से अधिक आबादी ह्यबहुआयामी रूप से गरीबह्व (मल्टीडायमेनसनल) है, एवं स्वास्थ्य, शिक्षा और बुनियादी सुविधाओं तक लोगों की पहुंच सीमित है ।

कोरबा नौकरियों और विकास के लिए कोयला उद्योग पर अत्यधिक निर्भर है। कोरबा के सकल घरेलू उत्पाद का 60% से अधिक हिस्सा और पांच में से एक रोजगार कोयला खनन और कोयले से संबंधित उद्योगों से है।

कोयला केंद्रित अर्थव्यवस्था ने अन्य आर्थिक क्षेत्रों जैसे कृषि, वानिकी, विनिर्माण और सेवाओं के विकास में बाधा डाला है। खराब सामाजिक-आर्थिक स्थिति और कोयला अर्थव्यवस्था पर उच्च निर्भरता होने के कारण यह खानों और उद्योगों के अनियोजित बंद होने से अत्यधिक संवेदनशील है। इसलिए, कोयला उद्योग के अनियोजित तरीके से बंद होने पर गंभीर सामाजिक-आर्थिक परिणाम होंगे। कोरबा में 13 चालू खदानें हैं, और 4 खदानें पाइपलाइन में हैं। साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स

लिमिटेड (एसईसीएल) की वर्तमान योजनाओं के अनुसार, कोरबा का कोयला उत्पादन 2025 तक 180 मिलियन टन तक पहुंच जाएगा। चालू खदानों में से तीन लाभदायक खदानें झ गेवरा, कुसमुंडा और दीपका- 95% कोयले का उत्पादन करती हैं। 8 भूमिगत खदानें घाटे में चल रही हैं।

कोरबा की कोयला खदानों का भंडार खत्म हो रहा हैं और आधी थर्मल पावर प्लांट 30 साल से ज्यादा पुरानी है। गेवरा और कुसमुंडा जैसी बड़ी खदानों का भंडार 15 वर्ष से भी कम का रह गया है। केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण की सिफारिश के अनुसार, 2940 मेगावाट क्षमता (वर्तमान क्षमता का 46%) वाली 10 इकाइयों को 2027 तक रिटायर किया जा सकता है।

ह्यवर्तमान नीति परिदृश्यह्न के तहत, जो भारत के 2070 के नेट-जीरो लक्ष्य के साथ संरेखित है, कोरबा में सभी कोयला खदानों को 2050 तक और पावर प्लांट को 2040 तक चरणबद्ध तरीके के साथ बंद किया जा सकता है।

अगले कुछ वर्षों में कोरबा में सभी 8 लाभहीन भूमिगत खदानों को बंद करना साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (एसईसीएल) के लिए फायदे का सौदा है, क्योंकि संसाधनों को जस्ट ट्रांजिशन शुरू करने के लिए डायवर्ट किया जा सकता है। कोरबा में औपचारिक कार्यबल बढती उम्र वाले है झ एसईसीएल और एनटीपीसी के कम से कम 70% कर्मचारी 40-60 वर्ष की आयु के हैं। इसलिए ट्रांजिशन से औपचारिक कार्यबल को कम चुनौती है।

सबसे बड़ी चुनौती अनौपचारिक श्रमिकों (जो कोयला उद्योग में 60% से अधिक हैं) का पुनः रोजगार है। उन्हें जॉब सपोर्ट और रीस्किलिंग की आवश्यकता होगी। नई ग्रीन अर्थव्यवस्था के लिए कौशल विकसित करना भी चुनौती है। अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर, रिपोर्ट ने कोरबा के लिए एक जस्ट ट्रांजिशन प्लानिंग फ्रेमवर्क भी विकसित किया है, जो अन्य जिलों के लिए भी एक खाका हो सकता है।

कोरबा में जस्ट ट्रांजिशन के लिए आवश्यक होगी

अर्थव्यवस्था का पुनर्गठनः जिले के सकल घरेलू उत्पाद में कोयले के योगदान को कम करने और अन्य क्षेत्रों के योगदान को बढ़ाने के लिए कोरबा की अर्थव्यवस्था का पुनर्गठन करना होगा। इसके लिए कृषि, वानिकी और मत्स्य पालन क्षेत्रों, स्थानीय संसाधनों पर आधारित लो-कार्बन उद्योगों का समर्थन, साथ ही कृषि और खाद्य प्रसंस्करण, गैर-लकड़ी वन उत्पाद प्रसंस्करण, नवीकरणीय ऊर्जा आधारित उद्योग और सेवा क्षेत्र को मजबूत करने में निवेश की आवश्यकता होगी है। शिक्षा और कौशल विकास में भी निवेश जरूरी होगा।

कोयला खनन और बिजली कंपनियों झ एसईसीएल और एनटीपीसी झ की भूमिका ट्रांजिशन के लिए महत्वपूर्ण होगी। अपने बिजनस पोर्टफोलियो को पुनर्गठन और ग्रीन बिजनस में निवेश करने से रोजगार का सृजन होगा। साथ ही कोयला खदानों और कोयले पर निर्भर उद्योगों के बंदी से होने वाले राजस्व के नुकसान की भरपाई करने में मदद मिलेगी।

भूमि और बुनियादी ढांचे का पुनर्निमाणः वर्तमान में

कार्यबल का रीस्किलिंग और स्किलिंग : कोयला खनन और पावर प्लांट में औपचारिक श्रमिकों के लिए सेवानिवृत्ति लाभ और नए उद्योगों के लिए कार्यबल का कौशल विकास आवश्यक होगा। अनौपचारिक श्रमिकों को रोजगार और आय के लिए सरकारी सहायता की आवश्यकता होगी। राजस्व प्रतिस्थापनः कोरबा में कोयला खनन वर्तमान में 7000 करोड़ (यूएस $1.0 बिलियन) रुपये से अधिक रॉयल्टी, डीएमएफ फंड और कोयला उपकर से योगदान करता है। यह केंद्र, राज्य और जिले के राजस्व के लिए महत्वपूर्ण स्रोत हैं। इस राजस्व को प्रतिस्थापित करने के लिए एक प्रगतिशील आर्थिक विविधीकरण योजना की आवश्यकता होगी। जिम्मेदारी के साथ सामाजिक और पर्यावरणीय निवेश : कोरबा को स्वास्थ्य, शिक्षा, पानी की आपूर्ति जैसी सुविधाओं और भौतिक बुनियादी ढांचे में बड़े पैमाने पर निवेश की आवश्यकता होगी ताकि जस्ट ट्रांजिशन को लागू किया जा सके।

24000 हेक्टेयर भूमि और विशाल बुनियादी संरचनाए कोयला और बिजली कंपनियों के पास है। साईंटिफिक क्लोजर और खनन भूमि का पुनर्निमाण एक नई ग्रीन इकॉनमी के निर्माण और निवेश को आकर्षित करने के लिए आवश्यक है।

कार्यबल का रीस्किलिंग और स्किलिंग : कोयला खनन और पावर प्लांट में औपचारिक श्रमिकों के लिए सेवानिवृत्ति लाभ और नए उद्योगों के लिए कार्यबल का कौशल विकास आवश्यक होगा। अनौपचारिक श्रमिकों को रोजगार और आय के लिए सरकारी सहायता की आवश्यकता होगी।

राजस्व प्रतिस्थापनः कोरबा में कोयला खनन वर्तमान में 7000 करोड़ (यूएस $1.0 बिलियन) रुपये से अधिक रॉयल्टी, डीएमएफ फंड और कोयला उपकर से योगदान करता है। यह केंद्र, राज्य और जिले के राजस्व के लिए महत्वपूर्ण स्रोत हैं। इस राजस्व को प्रतिस्थापित करने के लिए एक प्रगतिशील आर्थिक विविधीकरण योजना की आवश्यकता होगी।

जिम्मेदारी के साथ सामाजिक और पर्यावरणीय निवेश : कोरबा को स्वास्थ्य, शिक्षा, पानी की आपूर्ति जैसी सुविधाओं और भौतिक बुनियादी ढांचे में बड़े पैमाने पर निवेश की आवश्यकता होगी ताकि जस्ट ट्रांजिशन को लागू किया जा सके। जिला खनिज फाउंडेशन (डीएमएफ) फंड में लगभग 500-550 करोड़ रुपये सालाना एकत्र होता है। यह फंड सामाजिक और भौतिक बुनियादी ढांचे में निवेश करने के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है । जस्ट ट्रांजिशन के लिए घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों तरह के वित्तीय फंड की आवश्यकता होगी। ट्रांजिशन फाइनेंसिंग के लिए डीएमएफ फंड, सीएसआर फंड और कोल सेस सबसे महत्वपूर्ण स्थानीय स्रोत होंगे। ये तीनों वर्तमान में लगभग 5300 करोड़ ($ 750 मिलियन) योगदान करते है, जो 2035 तक बढ़कर 7500 करोड़ (1.0 बिलियन अमेरिकी डॉलर) हो जाएगा। कुल मिलाकर, कोयला सेस ग्रीन फंड के लिए सबसे महत्वपूर्ण हो सकता है।

रिपोर्ट पर अपनी प्रतिकृया देते हुए श्री टी.एस. सिंहदेव ने कहा, ह्लन्यायह्न सबसे महत्वपूर्ण पहलू होगा जस्ट ट्रांसिशन के लिए, और इसे संबोधित करने की आवश्यकता होगी। यह न केवल राज्य के हस्तक्षेप के माध्यम से, बल्कि विभिन्न स्तरों पर एक सहयोगात्मक प्रयास के माध्यम से संभव होगा।ह्व उन्होंने कहा, ह्लजैसे ही कोयला फेज आउट होगा है, कोरबा जैसे कोयला क्षेत्रों में रोजगार सृजन के लिए कौन सा उद्योग आ सकता है, यह एक बड़ा सवाल होगा- इस पर विचार करने की आवश्यकता है।

श्री अनिल कुमार जैन ने कहा कि ह्लस्थानीय दृष्टिकोण न्यायपूर्ण परिवर्तन सुनिश्चित करने के लिए महत्वपुर्ण है, क्योंकि जिलों में अलग-अलग मुद्दे हैं। एक रणनीतिक पहल की आवश्यकता होगी क्योंकि एनेर्जी ट्रांसिशन में एक बड़ा मानवीय पहलू शामिल है।ह्व उन्होंने यह भी कहा कि एक नई अर्थव्यवस्था के निर्माण के लिए भूमि प्रमुख मुद्दा होगा, और भारत जैसे देशों के लिए, खनन भूमि का पुनर्निमाण एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान कर सकता है, ह्वउन्होंने कहा।

रिलीज के अवसर पर श्री अमिताभ कांत ने कहा, ह्लजस्ट ट्रांजिशन एक अवधारणा के रूप में उभरा है जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि कोयला और पॉवर क्षेत्रों में स्थानीय समुदायों को खदान और थर्मल पावर के असामयिक बंद होने के नतीजों का सामना न करना पड़े। भारत के लिए, जस्ट ट्रांजिशन का एक प्रमुख पहलू विकास पर जोर होगा। हमें छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा जैसे राज्यों में भी ह्यूमन कैपिटल में निवेश करने की जरूरत है। इन राज्यों के पास नई अर्थव्यवस्था के निर्माण का अवसर है और इसके लिए सभी का साथ आना आवश्यक होगा।

भारत के सबसे बड़े कोयला और थर्मल पावर जिलों को दोहरी चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। पहला, तेजी से बढ़ते और लागत-प्रतिस्पर्धी अक्षय ऊर्जा क्षेत्र द्वारा एनेर्जी ट्रांजिशन है। दूसरा, घटते कोयले के भंडार, लाभहीन कोयला खदानें और पुराने हो रहे थर्मल पावर प्लांट है। इससे कोयला क्षेत्रों के लिए वर्तमान और आने वाले दशकों में एक बड़ा आर्थिक व्यवधान पैदा होगा। इस परिस्थिति को देखते हुए जस्ट ट्रांजिशन की शुरूआत तत्काल होनी चाहिए है। कोरबा जैसे जिलों को भविष्य के लिए प्लानिंग शुरू करने देने की आवश्यकता है जिससे होने वाले सामाजिक-आर्थिक प्रभावों को रोका जा सके,ह्व,ऋद्धफ्एरळ के अध्यक्ष और सीईओ चंद्र भूषण ने कहा।

आगे, श्रेष्ठा बनर्जी, निदेशक, जस्ट ट्रांजिशन, आईफॉरेस्ट, कहती हैं, ह्लजस्ट ट्रांजिशन केवल जलवायु परिवर्तन की कार्रवाई नहीं है; यह कोयला जिलों में संसाधन अभिशाप को मिटाने का एक अवसर है। अगले 10 से 20 साल कोरबा के लिए जस्ट ट्रांजिशन की योजना बनाने और उसे लागू करने के लिए महत्वपूर्ण होंगे। हमें सही नीतियों और शासन तंत्र की आवश्यकता है जिससे एक नई समावेशी अर्थव्यवस्था निर्माण के इस अवसर को साकार किया जा सके।

मनुष्य को न अपने पूर्वजन्मों और न परजन्मों का ज्ञान है

मनुष्य अपने शरीर के हृदय स्थान में निवास करने वाली एक अनादि, नित्य, अविनाशी एव अल्पज्ञ चेतन आत्मा है। अल्पज्ञ जीवात्मा को मनुष्य आदि योनियों में जन्म लेकर मनुष्य योनि में माता, पिता, आचार्य की सहायता से ज्ञान अर्जित करना पड़ता है। इन साधनों से अर्जित ज्ञान को वह अनेकानेक ग्रन्थों के अध्ययन व स्वाध्याय तथा अपने विचार एवं चिन्तन से उन्नत करता है। इस प्रक्रिया से मनुष्य कितना भी ज्ञान प्राप्त कर ले परन्तु फिर भी वह अपने इस जन्म में अर्जित ज्ञान को कुछ सीमा तक स्मरण रख सकता है। इस जीवन में घटी समस्त घटनाओं व माता, पिता आदि से प्राप्त सभी ज्ञान को वह समय के साथ भूलता भी जाता है। मनुष्य इस जन्म में अपने पूर्वजन्मों के कमार्नुसार जन्म लेता है। उसे माता, पिता तथा परिवेश भी प्रायः अपने प्रारब्ध के अनुसार ही मिलता है। उसे यह ज्ञात नहीं रहता कि वह इस जन्म से पूर्व, पूर्वजन्म में किस स्थान पर, किस योनि में, किस परिवार में रहता था? उसकी मृत्यु वहां कब व कैसे हुई थी, उसे इन बातों का ज्ञान नहीं रहता। इन्हें वह भूल चुका होता है। इसका कारण यह होता है कि हमारे पूर्वजन्म का शरीर छूट जाता है। उस शरीर से हमारी आत्मा व सूक्ष्म शरीर ही पृथक होकर अर्थात शरीर से निकल कर इस जन्म में आते हैं। पूर्वजन्म में मृत्यु होने तथा हमारे इस जन्म के बीच काफी समय व्यतीत हो जाता है। हमें लगता है कि पूर्व जन्म में मृत्यु के बाद जब जीवात्मा सूक्ष्म शरीर सहित निकलता है तो उसकी अवस्था मूर्छित व्यक्ति के समान होती है। उस अवस्था में जीवात्मा को इसके इर्द-गिर्द घटने वाली घटनाओं का ज्ञान नहीं होता और न ही उसे किसी प्रकार का सुख व दुःख ही अनुभव होता है। सुख व दुःख मनुष्य को तभी होता है जब कि आत्मा का सम्बन्ध शरीर, सुख-दुःख अनुभव कराने वाली इन्द्रियों व मन आदि से होता है। जन्म ले लेने के बाद उसे सुख व दुःख का अनुभव होना आरम्भ हो जाता है। वैदिक साहित्य में बताया जाता है कि हमारा जो चित्त है उसमें हमारी स्मृत्तियां रहती हैं। हमारा यह चित्त हमारे सूक्ष्म शरीर का भाग होता है और यह हमारे भौतिक शरीर से भी जुड़ा रहता है। नये शरीर में पुरानी सभी स्मृतियां सजीव नहीं हो पाती। यदा-कदा कुछ उदाहरण सुनने को मिलते हैं जिसमें बताया जाता है कि किसी बालक को अपने पूर्वजन्म की कुछ स्मृतियां ठीक ठीक याद हैं। इससे यह ज्ञात होता है कि किसी दुःखदाई घटना के होने पर उसकी स्मृतियां व संस्कार मनुष्य के सूक्ष्म शरीर के चित्त के साथ गहराई से जुड़कर इस जन्म में आ जाते हैं और जीवन के आरम्भ काल में कुछ समय तक उनका प्रभाव व स्मृतियां उपस्थित रहते हैं। यही मनुष्ययोनि में पुनर्जन्म होने पर पूर्वजन्म की कुछ घटनाओं की स्मृति का कारण होता है। पुनर्जन्म की कुछ हल्की सी स्मृतियों का एक उदाहरण यह है कि छोटा बच्चा सोते समय कभी हंसता है और कभी गम्भीर व चिन्तित सा दिखाई

देता है। उसे स्तनपान का भी अनुभव होता है। उसे स्वप्न भी आते हैं जिनसे वह कभी सुख का अनुभव करता है और कभी दुःख का। इसका ज्ञान भी उसके सोते समय की भाव-भंगिमाओं को देखकर होता है। इन सबका का कारण पुनर्जन्म की स्मृतियां ही होती हैं।

मनुष्य इस जन्म में कुछ नाम मात्र का भौतिक व सांसारिक ज्ञान प्राप्त कर अभिमान करता हुआ देखा जाता है। वह नैतिक नियमों का पालन भी नहीं करता। बड़े बड़े राजनैतिक व सरकारी पदों पर बैठे व्यक्तियों के भ्रष्टाचार के कारनामें समय समय पर सामने आते रहते हैं। इसका मुख्य कारण उनका धन व सुख सुविधाओं के प्रति प्रलोभन होना होता है। वह अपने जीवन के विषय में चिन्तन नहीं करते कि हम क्या है? कौन हैं, कहां से आये हैं, मरने के बाद कहां जायेंगे, हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है और उस उद्देश्य की प्राप्ति के साधन क्या हैं? हमें तो ईश्वर के सत्य स्वरूप का ज्ञान भी नहीं हैं। अधिकांश लोग तो ईश्वर व आत्मा को जानने का प्रयास ही नहीं करते। वह अपनी ज्ञान की आंखे बन्द कर परम्परानुसार व दूसरों को देख कर बिना परीक्षा किये ही अज्ञान व अविद्या पर आधारित परम्पराओं का पालन करते हैं जबकि परीक्षा करने पर वह सब विधि-विधान व परम्परायें अन्धविश्वासयुक्त व अज्ञान से युक्त सिद्ध होती हैं। जीवात्मा के यह कृत्य उसके घोर अज्ञान व अविवेक को सिद्ध करते हैं। यह सिद्ध है कि आजकल अपवादों को छोड़कर प्रायः सभी मनुष्य हीरे के समान महत्वपूर्ण इस मनुष्य जन्म को वृथा गंवा रहे हैं। उनका मुख्य कार्य इस जन्म में विद्या को प्राप्त करना था। विद्या भौतिक व सांसारिक ज्ञान को भी कहते हैं और विद्या वह भी है जो वेदों, उपनिषदों व दर्शनों में उपलब्ध है।

सांसारिक ज्ञान को जानकर मनुष्य उसका यदि अविवेकपूर्ण उपभोग करता है तो वह उन्नत होने के स्थान पर पतन की गहरी खाई में गिरता है। यह बात भी ज्ञानी व समझदार लोग ही जान सकते हैं। एक सामान्य सा सिद्धान्त है कि भोग का परिणाम रोग है और इससे मनुष्य को दुःख प्राप्त होता है। ज्ञानी लोग भोग से बचते हैं और जीवन के लिए आवश्यक न्यूनतम पदार्थों का ही उपभोग करते हैं। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय में ईश्वर ने मनुष्य को शिक्षा दी है कि ह्यतेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्य स्वित्धनम्ह्ल अर्थात मनुष्य को भौतिक पदार्थों का भोग त्याग पूर्वक करना चाहिये। लालच नहीं करना चाहिये अर्थात प्रलोभन में नहीं फंसना चाहिये। लालच का परिणाम बहुत बुरा होता है। हम सुनते हैं कि बड़े बड़े धनाड्य लोग नशा करते हैं। नशा करके उनका अपने शरीर पर नियंत्रण नहीं रहता। ऐसी भी घटनायें प्रकाश में आयी हैं कि नशे की हालत में कोई नहाने के टब में गिर गया और उसकी मृत्यु हो गई। यह सुनकर दुःख होता है। परमात्मा ने जो मनुष्य शरीर ज्ञान प्राप्त कर जन्म मरण के चक्र से छूटने के लिए दिया था उसका हमने यह क्या कर डाला। हमने लक्ष्य की ओर कदम रखा भी नहीं, प्रलोभन में फंसे रहे, भोग भोगते रहे और हमारा जीवन भी समाप्त हो गया। यह स्थिति उचित नहीं है। परमात्मा ने हमें मनुष्य बनाया है। हमारा कर्तव्य है कि हम अपने जीवन से जुड़े सभी प्रश्नों को महत्व दें और मत-मतान्तरों को दूर रखकर सत्य ज्ञान की प्राप्ति करें और उसी के अनुसार आचरण करें। ऐसा करने पर ही हमारे जीवन का कल्याण हो

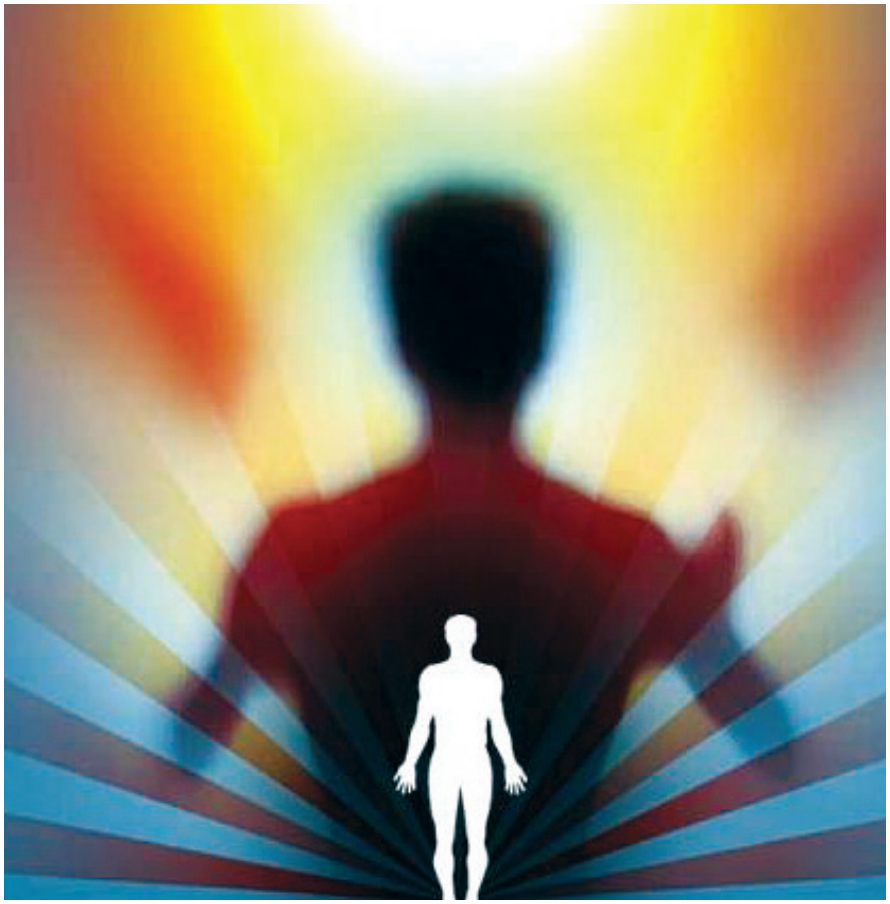

सकता है।

मनुष्यों को पूर्वजन्म व परजन्म विषयक ज्ञान नहीं है। इसका कारण है कि यह ज्ञान हमारी शिक्षा पद्धति में सम्मिलित नहीं है। हम विदेशी अंग्रेजी शिक्षा पद्धति से ज्ञान अर्जित कर रहे हैं। उनकी धर्म, संस्कृति व सभ्यता कोई दो-तीन हजार वर्ष पुरानी है। वह अल्पज्ञ जीव के ज्ञान पर आधारित है। भारत की धर्म, संस्कृति व सभ्यता 1.96 अरब वर्ष पुरानी है। भारत में ही सच्चिदानन्द व सर्वव्यापक ईश्वर ने सृष्टि की आदि में अपना ज्ञान, जो वेदज्ञान कहलाता है, दिया था। वेदों में ईश्वर, जीव व सृष्टि का सत्य ज्ञान दिया गया है। मनुष्य का जन्म क्यों होता है, पुनर्जन्म क्या है, जन्म का आधार क्या है, परजन्म की चर्चा और उसमें हमारे कर्मों की भूमिका आदि पर विस्तार से तथ्यपूर्ण प्रकाश डाला गया है। उसी ज्ञान के आधार पर हमारे ऋषियों ने, जो ज्ञानी व वैज्ञानिक थे, तर्कपूर्ण रीति से सभी विषयों को समझाया है। उपासना की पद्धति भी हमें योग व सांख्य आदि दर्शनों से प्राप्त होती है। ईश्वर के प्रति मनुष्यों के कर्तव्यों का ज्ञान भी इन ग्रन्थों सहित स्वामी दयानन्द जी के सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, व्यवहारभानु, उपदेशमंजरी आदि ग्रन्थों से यथावत होता है। संसार में जो मनुष्य इन ग्रन्थों की उपेक्षा करता है वह वस्तुतः अपने भावी जीवन व परजन्म को बिगाड़ता है। वैदिक साहित्य का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि ईश्वर, जीव व प्रकृति अनादि, नित्य व अविनाशी हैं। अविनाशी व अनादि जीव के इस मनुष्य जन्म से पूर्व भी असंख्य जन्म हो चुके हैं। असंख्य बार यह जन्मा है और इतनी ही बार इसकी मृत्यु हुई है। संसार में मनुष्य सहित पशु, पक्षी आदि भिन्न-भिन्न योनियां हैं, इन सभी में हम असंख्य बार आ जा चुके हैं। इस जन्म में भी हम पूर्वजन्म से मरने के बाद ईश्वर की व्यवस्था जाति, आयु, भोग के अनुसार यहां आये हैं। यहां से कुछ समय बाद हमारी मृत्यु होगी और हम पुनः जाति, आयु और भोग के अनुसार नया जन्म प्राप्त करेंगे। हमारे शुभ कर्मों से हमें इस जन्म में भी सुख मिलेगा और परजन्म में भी। इस जन्म में अशुभ कर्म करने पर हमारा यह जीवन भी सुख व शान्ति भंग करने वाला हो सकता है और भावी तो होगा ही। बहुत से लोग अच्छे बुरे दोनों प्रकार के कार्य करते हैं, फिर भी सुखी रहते हैं। इसका कारण यह है कि वह पूर्व कृत शुभ कर्मों के कारण सुखी है। इस जीवन में बुरे कर्मों का परिणाम अवश्यमेव दुःख होगा। वह जब मिलेगा तो मनुष्य त्राहि त्राहि करेगा। अस्पतालों व ट्रामा सेन्टरों में जाकर इस तथ्य की पुष्टि की जा सकती है। ईश्वर न करे हम में से किसी को इस स्थिति से गुजरना पड़े। इसी लिए ईश्वरोपासना, यज्ञ एवं परोपकार आदि कर्मों का करना आवश्यक है। अतः मनुष्य को ज्ञान प्राप्ति और सद्कर्मों के प्रति सावधान रहना चाहिये। उसे सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ का तो अवश्य ही अध्ययन करना चाहिये और उसकी शिक्षाओं को बुद्धि की कसौटी पर कस कर उन पर आचरण करना चाहिये। इससे मनुष्य का यह जन्म व परजन्म दोनों सुखी व उन्नत होंगे, यह निश्चित है।

वैदिक साहित्य व सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर मनुष्य को अपने पूर्वजन्म व परजन्म विषयक मूलभूत जानकारी मिलती है। इसका हमने लेख में परिचय कराया है। हम आशा करते हैं कि पाठक इससे लाभ उठायेंगे और वैदिक साहित्य के स्वाध्याय वा अध्ययन में प्रवृत्त होंगे।

भारत का ब्रह्मास्त्र है ध्रुवास्त्र मिसाइल

दुश्मन के टैंकों को नेस्तनाबूद करने में सबसे कारगर मानी जाने वाली स्वदेश निर्मित टैंक रोधी मिसाइल हेलिना के नवीनतम संस्करण ध्रुवास्त्रका राजस्थान में पोखरण फायरिंग रेंज में भारतीय वायुसेना द्वारा गत दिनों सफल परीक्षण किया गया। मिसाइल की न्यूनतम और अधिकतम क्षमता का मूल्यांकन करने के लिए पांच परीक्षण किए गए और स्थिर तथा गतिशील लक्ष्यों पर मिसाइल से निशाना साधा गया, कुछ परीक्षणों में युद्धक हथियारों को भी शामिल किया गया। एक परीक्षण में उड़ते हेलीकॉप्टर से गतिशील लक्ष्य पर निशाना साधा गया। हेलीकॉप्टर ध्रुव से दागी गई देश में ही विकसित ध्रुवास्त्र मिसाइल ने अपने लक्ष्य पर सटीक प्रहार कर उसे नष्ट कर दिया। वायुसेना और डीआरडीओ की टीम पोखरण में तीन दिन से इस मिसाइल के परीक्षण की तैयारियों में जुटी थी। इन सफल परीक्षणों के बाद डीआरडीओ द्वारा भारतीय सेना के लिए ध्रुवास्त्र जैसी एंटी टैंक गाइडेड मिसाइलों को तैयार किया जाना डीआरडीओ और सेना के लिए बड़ी उपलब्धि इसलिए माना जा रहा है क्योंकि अब ऐसी आधुनिक एंटी टैंक गाइडेड मिसाइलों के लिए भारत की दूसरे देशों पर निर्भरता कम होती जाएगी।

मौजूदा परिस्थितियों में देश को ऐसे हथियारों की जरूरत है, जो सटीक और सस्ते हों और इसके लिए जरूरी है कि देश में ही इन हथियारों का निर्माण हो। मेक इन इंडिया को बढ़ावा देने के लिए ही डीआरडीओ स्वदेशी मिसाइलें बना रहा है। रक्षा विशेषज्ञों के मुताबिक पड़ोसी दुश्मनों के खिलाफ लड़ाई में क्विक रिस्पांस वाली स्वदेशी मिसाइल ध्रुवास्त्रगेमचेंजर साबित हो सकती है। यह मिसाइल न केवल चीन के टैंकों को चंद पलों में ही खाक में मिलाने में सक्षम है बल्कि एलएसी पर चीन के हल्के टैंकों को तो खिलौनों की भांति नेस्तनाबूद कर सकती है। स्वदेशी हेलीकॉप्टर ध्रुव तथा अन्य हल्के हेलीकॉप्टरों में फिट होने के बाद यह मिसाइल दुश्मन के टैंकों के लिए काल बन जाएगी और इस तरह जमीनी लड़ाई का रूख बदलने में अहम भूमिका निभाने के कारण यह भारतीय सेना के लिए बेहद कारगर साबित होगी।

दुनिया में सबसे आधुनिक टैंक रोधी हथियारों में शामिल इस मिसाइल को सेना और वायुसेना में शामिल किया जाएगा। ध्रुवास्त्र नाम की हेलिना हथियार प्रणाली के एक संस्करण को भारतीय वायुसेना में शामिल किया जा रहा है, जिसका इस्तेमाल ध्रुव हेलिकॉप्टर के साथ किया जाएगा। अपने लक्ष्य को बेहद सटीकता से नष्ट करने के बाद अब इसे बहुत जल्द सेना के हेलिकॉप्टरों में लगाया जा सकेगा, साथ ही इसका उपयोग एचएएल रूद्र तथा एचएएल लाइट कॉम्बैट हेलीकॉप्टर्स में भी होगा। यह मिसाइल दुनिया के किसी भी टैंक को उड़ा सकती है और रणक्षेत्र में आगे बढ़ते दुश्मन के टैंकों को बारी-बारी से ध्वस्त करने में पूर्ण रूप से सक्षम है। तीसरी पीढ़ी की दागो और भूल जाओतकनीक पर काम करने वाली देश में ही विकसित इस मिसाइल को ध्रुवास्त्र नाम दिया गया है। नाग पीढ़ी की इस मिसाइल को हेलिकॉप्टर से दागे जाने के कारण इसे हेलिना नाम दिया गया था।

ध्रुवास्त्र को आसमान से सीधे दागकर दुश्मन के बंकर, बख्तरबंद गाड़ियों और टैंकों को पलभर में ही नष्ट किया जा सकता है। यह मिसाइल दुनिया के सबसे आधुनिक एंटी-टैंक हथियारों में से एक है और इसे हेलीकॉप्टर से लांच किया जा सकता है। डीआरडीओ के मुताबिक ध्रुवास्त्र तीसरी पीढ़ी की दागो और भूल जाओकिस्म की टैंक रोधी मिसाइल प्रणाली है, जिसे आधुनिक हल्के हेलीकॉप्टर पर स्थापित किया गया है। हल्के हेलीकॉप्टर पर स्थापित करने से इसकी मारक क्षमता काफी बढ़ जाएगी। स्वदेश निर्मित इस मिसाइल का नाम पहले नागथा, जिसे अब ध्रुवास्त्र कर दिया गया है। वास्तव में यह सेना के बेड़े में पहले से शामिल नाग मिसाइल का उन्नत संस्करण है। इसका इस्तेमाल भारतीय सेना के स्वदेश निर्मित अटैक हेलीकॉप्टर ध्रुवके साथ किया जाएगा, इसीलिए इसका नाम ध्रुवास्त्ररखा गया है। इस मिसाइल से लैस होने के बाद ध्रुव हेलिकॉप्टर ध्रुव मिसाइल अटैक हेलीकॉप्टरबन जाएगा। दरअसल सेना की इस नई मिसाइल का मूलमंत्र ही है सिर्फ दागो और भूल जाओ।

ध्रुवास्त्र मिसाइल पलक झपकते ही दुश्मन के टैंकों के परखच्चे उड़ा सकती है। पूर्ण रूप से स्वदेशी

ध्रुवास्त्र को आसमान से सीधे दागकर दुश्मन के बंकर, बख्तरबंद गाड़ियों और टैंकों को पलभर में ही नष्ट किया जा सकता है। यह मिसाइल दुनिया के सबसे आधुनिक एंटी-टैंक हथियारों में से एक है और इसे हेलीकॉप्टर से लांच किया जा सकता है। डीआरडीओ के मुताबिक ध्रुवास्त्र तीसरी पीढ़ी की दागो और भूल जाओकिस्म की टैंक रोधी मिसाइल प्रणाली है, जिसे आधुनिक हल्के हेलीकॉप्टर पर स्थापित किया गया है। हल्के हेलीकॉप्टर पर स्थापित करने से इसकी मारक क्षमता काफी बढ़ जाएगी। स्वदेश निर्मित इस मिसाइल का नाम पहले नागथा, जिसे अब ध्रुवास्त्र कर दिया गया है। वास्तव में यह सेना के बेड़े में पहले से शामिल नाग मिसाइल का उन्नत संस्करण है। इसका इस्तेमाल भारतीय सेना के स्वदेश निर्मित अटैक हेलीकॉप्टर ध्रुवके साथ किया जाएगा, इसीलिए इसका नाम ध्रुवास्त्ररखा गया है। इस मिसाइल से लैस होने के बाद ध्रुव हेलिकॉप्टर ध्रुव मिसाइल अटैक हेलीकॉप्टरबन जाएगा। दरअसल सेना की इस नई मिसाइल का मूलमंत्र ही है सिर्फ दागो और भूल जाओ।ध्रुवास्त्र मिसाइल पलक झपकते ही दुश्मन के टैंकों के परखच्चे उड़ा सकती है।

ध्रुवास्त्र मिसाइल 230 मीटर प्रति सैकेंड अर्थात 828 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से चलती है और मिसाइल की यह गति इतनी है कि पलक झपकते ही दुश्मन के भारी से भारी टैंक को बर्बाद कर सकती है। फायर एंड फॉरगेटसिस्टम पर कार्य करने वाली यह मिसाइल भारत की पुरानी मिसाइल नाग हेलीनाका हेलीकॉप्टर संस्करण है, जिसमें कई नई तकनीकों का समावेश करते हुए इसे आज की जरूरतों के हिसाब से तैयार किया गया है। रक्षा विशेषज्ञों के मुताबिक इस मिसाइल प्रणाली में डीआरडीओ द्वारा एक से बढ़कर एक आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल किया गया है। मिसाइल में हीट सेंसर, इंफ्रारेड होमिंग इमेजिंग प्रणाली तथा मिलीमीटर वेव एक्टिव रडार लगा हुआ है। हीट सेंसर किसी भी टैंक की गर्मी पकड़कर अपनी दिशा निर्धारित कर उसे तबाह कर देता है। इंफ्रारेड इमेजिंग का फायदा रात और खराब मौसम में मिलता है।

रक्षा विशेषज्ञ ध्रुवास्त्र की विशेषताओं को देखते हुए इसे भारत के ब्रह्मास्त्रकी संज्ञा भी दे रहे हैं। भारतीय सेना में इसके शामिल होने के बाद उम्मीद की जा रही है कि इससे न केवल सीमा पर दुश्मन देश की सेना के मुकाबले हमारी सेना की क्षमताओं में बढ़ोतरी होगी बल्कि मेक इन इंडिया मुहिम के तहत निर्मित ऐसे खतरनाक और अत्याधुनिक हथियारों के बलबूते भारतीय सेना का हौंसला भी काफी बढ़ेगा। 500 मीटर से 7 किलोमीटर के बीच मारक क्षमता वाली यह बेहद शक्तिशाली स्वदेशी मिसाइल दुश्मन के किसी भी टैंक को देखते ही देखते खत्म करने की ताकत रखती है। हालांकि सात किलोमीटर तक की इस क्षमता को ज्यादा बड़ा नहीं माना जाता लेकिन रक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि धीरे-धीरे इस क्षमता को भी बढ़ाया जाएगा। 230 मीटर प्रति सैकेंड की रफ्तार से लक्ष्य पर निशाना साधने में सक्षम इस मिसाइल की लम्बाई 1.9 मीटर, व्यास 0.16 मीटर और वजन 45 किलोग्राम है। इसमें 8 किलोग्राम विस्फोटक लगाकर इसे बेहतरीन मारक मिसाइल बनाया जा सकता है। ध्रुवास्त्र मिसाइल दोनों तरह से अपने टारगेट पर हमला करने के अलावा टॉप अटैक मोड में भी कार्य करने में सक्षम है। इस मिसाइल की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि यह दुर्गम स्थानों पर भी दुश्मनों के टैंकों के आसानी से परखच्चे उड़ा सकती है। इस टैंक रोधी मिसाइल प्रणाली में एक तीसरी पीढ़ी की एंटी टैंक गाइडेड मिसाइल नागके साथ मिसाइल कैरियर व्हीकल भी है। यह टैंक रोधी मिसाइल प्रणाली हर प्रकार के मौसम में दिन-रात यानी किसी भी समय अपना पराक्रम दिखाने में सक्षम है और न केवल पारम्परिक रक्षा कवच वाले युद्धक टैकों को बल्कि विस्फोटकों से बचाव के लिए कवच वाले टैंकों को भी नेस्तनाबूद कर सकती है।

पशुपालन की स्वरोजगार में महत्वपूर्ण भूमिका

हाल ही में हरियाणा के कृषि मंत्री जयप्रकाश दलाल ने किसानों और खासकर पशुपालकों के लिए विश्वभर की पहली पशु किसान क्रेडिट योजना को शुरू किया है। 2022 तक किसानों की आमदनी दोगुनी करने के मकसद से किसान क्रेडिट कार्ड की तर्ज पर पशुधन क्रेडिट कार्ड योजना शुरू की गई है। इस योजना में किसानों को बहुत कम ब्याज दर पर लोन दिया जा रहा है। इसकी खासियत यह है कि पशुपालकों को बिना किसी गारंटी के 1 लाख 60 हजार रुपये का ऋण मिलेगा।

कोरोना संकट के कारण बाहरी प्रदेशों से बहुत से लोग वापस आए हैं और उन्हें रोजगार उपलब्ध करवाना देश के सामने बड़ी चुनौती है ऐसे में पशु पालन स्वरोजगार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। आत्मनिर्भर भारत अभियान प्रोत्साहन पैकेज के अनुकूल प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडल समिति ने 15,000 करोड़ रुपये के पशुपालन बुनियादी ढांचा विकास फंड (एएचआईडीएफ) की स्थापना के लिए अपनी मंजूरी भी दी थी। डेयरी सेक्टर के लिए पशुपालन आधारभूत संरचना विकास निधि के तहत 15,000 करोड़ रुपए का बजट पेश किया गया है। डेयरी क्षेत्र में प्रोसेसिंग मे प्राइवेट इन्वेस्टर्स को बढ़ावा दिया जा रहा है । डेयरी प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन और मवेशियों के चारे के लिए के बुनियादी ढांचे में निजी निवेशकों को जगह दी जाएगी। पशुपालन में निजी निवेश को बढ़ावा देने के लिए 15,000 करोड़ रुपए का एनीमल हसबेंडरी इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट फंड जारी किया गया है।

पशुपालन में गाय-भैंस के साथ ही इसका कार्यक्षेत्र बहुत ही विस्तृत है। मुर्गी पालन और यहां तक कि मत्स्य पालन भी पशुपालन के ही दायरे में आते हैं। इस क्षेत्र की खास विशेषता यह है कि इसमें कम लागत में भी काम शुरू कर के बड़े स्तर का कारोबार खड़ा किया जा सकता है। स्वरोजगार के तौर पर युवा इस क्षेत्र को चुनकर अपना भविष्य संवार सकते है। कोरोना महामारी के कारण युवा अपने गाँव वापस लौटे हैं। लौटने वालों में अधिकांश 25 से 40 साल की आयु वर्ग के हैं। इनमें से भी कम से कम 30 प्रतिशत प्रवासी वापस न जा कर यहीं अपने प्रदेश में रहना चाहते हैं। यद्यपि उनकी आजीविका गाँवों में ही सुनिश्चित करने के लिये उन पर कोई भी व्यवसाय थोपना तो उचित नहीं मगर उनके समक्ष पशुपालन का एक विकल्प अवश्य ही रखा जा सकता है। इसके लिये उन्हें भारत सरकार द्वारा शुरू किये गये राष्ट्रीय पशुधन मिशन के तहत दिये जा रहे प्रोत्साहनों एवं सहूलियतों से अवगत कराये जाने की जरूरत है।

पशुधन विकास के लिये वित्त पोषण की जिम्मेदारी सरकार द्वारा ली गयी है। इसमें रिस्क मैनेजमेंट इंश्यौरेंस के नाम से पशुधन बीमा योजना भी शुरू की गयी है। इसका उद्देश्य पशुपालकों को पशुओं की मृत्यु के कारण हुये नुकसान से सुरक्षा उपलब्ध कराना है। इस बीमा योजना में पशुपालक को गौवंशीय, भैंस, घोड़े, गधे, खच्चर, ऊंट, भेड़, बकरी, सुकर, एवं खरगोश को बीमित करने की व्यवस्था है। मिशन के

तहत बकरी एवं भेड़ पालन एवं मुर्गी पालन को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसमें पशुपालन के लिए सब्सिडी का भी प्रावधान है।

केंद्र सरकार की योजनाओं के साथ-साथ अलग राज्य सरकारें इस दिशा में काफी रूचि से काम कर रही है हाल ही में हरियाणा के कृषि मंत्री जयप्रकाश दलाल ने किसानों और खासकर पशुपालकों के लिए विश्वभर की पहली पशु किसान क्रेडिट योजना को शुरू किया है। 2022 तक किसानों की आमदनी दोगुनी करने के मकसद से किसान क्रेडिट कार्ड की तर्ज पर पशुधन क्रेडिट कार्ड योजना शुरू की गई है। इस योजना में किसानों को बहुत कम ब्याज दर पर लोन दिया जा रहा है। इसकी खासियत यह है कि पशुपालकों को बिना किसी गारंटी के 1 लाख 60 हजार रुपये का ऋण मिलेगा। हालांकि ऋण लेने के इच्छुक पशुपालक ने पहले ऋण न लिया हो तो उन्हें बस पशु पालन विभाग के अधिकारियों से सत्यापित पत्र पर ही ऋण मिल जाएगा। इससे पहले किसान क्रेडिट कार्ड योजना ही चल रही है। इसके किसानों को अपनी जमीन बैंक के नाम करवाने के बाद ही ऋण मिलता है। जबकि पशु क्रेडिट योजना में ऐसा नहीं है। 1 लाख 60 हजार रुपये तक ऋण लेते समय उन्हें सिर्फ पशुपालन एवं डेयरिंग विभाग के उपनिदेशक का सत्यापित पत्र देना होगा। इससे पहले किसान को अपने पशु का बीमा भी करवाना होगा। उसके लिए मात्र 100 रुपये देने होंगे।

यह लोन पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए दिया जा रहा है. इस योजना के तहत मछली पालन, मुर्गी पालन, भेड़-बकरी पालन, गाय-भैंस पालन के लिए किसानों को कर्ज दिया जाता है. किसानों को इस योजना के तहत 7 फीसदी की ब्याज दर पर लोन दिया जाता है. इसमें तीन फीसदी केंद्र सरकार सब्सिडी देती है और

पशुधन विकास के लिये वित्त पोषण की जिम्मेदारी सरकार द्वारा ली गयी है। इसमें रिस्क मैनेजमेंट इंश्यौरेंस के नाम से पशुधन बीमा योजना भी शुरू की गयी है। इसका उद्देश्य पशुपालकों को पशुओं की मृत्यु के कारण हुये नुकसान से सुरक्षा उपलब्ध कराना है। इस बीमा योजना में पशुपालक को गौवंशीय, भैंस, घोड़े, गधे, खच्चर, ऊंट, भेड़, बकरी, सुकर, एवं खरगोश को बीमित करने की व्यवस्था है। मिशन के तहत बकरी एवं भेड़ पालन एवं मुर्गी पालन को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसमें पशुपालन के लिए सब्सिडी का भी प्रावधान है। केंद्र सरकार की योजनाओं के साथ-साथ अलग राज्य सरकारें इस दिशा में काफी रूचि से काम कर रही है हाल ही में हरियाणा के कृषि मंत्री जयप्रकाश दलाल ने किसानों और खासकर पशुपालकों के लिए विश्वभर की पहली पशु किसान क्रेडिट योजना को शुरू किया है।

शेष 4 फीसदी ब्याज पर हरियाणा सरकार छूट दे रही है. इस तरह इस योजना के तहत लिया गया लोन बिना ब्याज का होगा. पशु क्रेडिट कार्ड योजना का फायदा हरियाणा के सभी पशुपालक उठा सकते हैं. इसके अतिरिक्त हरियाणा में गाय की देसी नस्ल (हरियाणा एवं साहीवाल) को बढावा देने हेतू दुग्ध प्रतियोगिता कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। यह आयोजन प्रत्येक ग्राम के स्तर पर किया जाता है जिसमें पशुपालकों को प्रोत्साहन राशि निम्नलिखित अनुसार वितरित की जाती है। इसके अतिरिक्त इन नस्लों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतू मिनी डेयरी योजना के तहत पशुपालकों को तीन या पांच दुधारू गायों की खरीद पर सरकार द्वारा 50 प्रतिशत अनुदान राशि भी दी जाती है।

मुर्राह भैस, जो भारत में भैसों की सबसे उत्तम नस्ल है तथा हरियाणा राज्य इसका मूल स्थान है व इसे काला सोना का नाम दिया गया है, इसलिए हरियाणा प्रदेश के पशुपालकों को उत्तम मुर्राह दुधारू भैंस पालने की प्रवृत्ति को बढावा देने हेतू दुग्ध प्रतियोगिता कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है । यह आयोजन प्रत्यक ग्राम के स्तर पर किया जाता है जिसमें पशुपालकों को प्रोत्साहन राशि निम्नलिखित अनुसार वितरित की जाती है । इस दुग्ध प्रतियोगिता में शामिल उच्च कोटि की भैसों से प्राप्त एक वर्ष के कटड़ों को विभाग अच्छी कीमत (राशि 20,000 से 30,000/- रू0) तथा इससे भी अधिक कीमत पर पशुपालकों से खरीद कर राजकीय कटड़ा फार्म, हिसार में रखा जाता है और बाद में इच्छुक ग्राम पंचायतों को न्यूनतम मूल्य पर दिया जाता है । 50 दुधारू पशुओं की हाईटेक डेयरी योजना योजना के तहत 50 दुधारू पशुओं की हाईटेक डेयरी बैंक के माध्यम से लोन स्वीकृत होने उपरान्त स्थापित करवाई जाती है तथा इस योजना के तहत स्वीकृत ऋण के 75 प्रतिशत राशि लगने वाला ब्याज विभाग द्वारा लाभार्थी को प्रदान किया जाता है। 3/5/10 दुधारू पशुओं की मिनी डेयरी योजना के अंतर्गत शहरी/ ग्रामीण शिक्षित बेरोजगार युवक/ युवतियों को बैंकों के माध्यम से ऋण दिलवाकर स्वरोजगार उपलब्ध करवाना तथा आर्थिक रूप से पिछड़े गरीब परिवारों के लिए स्वरोजगार उपलब्ध करवाना है । इस योजना के तहत लाभार्थी को 25 प्रतिशत अनुदान प्रदान किया जाता है।

भारत पर्यटन की दृष्टि से समृद्ध एवं व्यापक संभावनाओं वाला देश

विश्व पर्यटन दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य पर्यटन और उसके सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक व आर्थिक मूल्यों के प्रति विश्व समुदाय को जागरूक करना है। यह दिवस संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन द्वारा 1980 में शुरू किया गया जो प्रत्येक वर्ष 27 सितम्बर को मनाया जाता है। यह विशेष दिन इसलिये चुना गया क्योंकि इस दिन 1970 में यू.एन.डब्ल्यू.टी.ओ. के कानून प्रभाव में आये थे जिसे विश्व पर्यटन के क्षेत्र में बहुत बड़ा मील का पत्थर माना जाता है, इसका लक्ष्य विश्व पर्यटन की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में अन्तर्राष्ट्रीय समुदायों के लोगों को जागरूक करना है। पर्यटकों के लिए विभिन्न आकर्षक और नए स्थलों की वजह से पर्यटन दुनियाभर में लगातार बढ़ने वाला और विकासशील आर्थिक क्षेत्र बन गया है। भारत पर्यटन की दृष्टि से समृद्ध एवं व्यापक संभावनाओं वाला देश है।

भारत अपनी सुंदरता, ऐतिहासिक स्थलों, प्रकृति की मनोरमा के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। भारत में विभिन्न संप्रदाय-धर्म और जाति के लोग एक साथ मिलकर रहते हैं। अपनी समृद्ध सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, प्राकृतिक धरोहर के कारण भारत दुनिया के प्रमुख पर्यटन देशों में शुमार होता है। यहां के हर राज्य की अलौकिक और विलक्षण विशिष्टताएं हैं जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। उन पर्यटकों के लिए भारत-यात्रा का विशेष आकर्षण है जो शांत, जादुई, सौंदर्य और रोमांच की तलाश में रहते हैं। इस देश की इन विविधताओं ने ही अनेक यायावरी लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है। भारतीय पर्यटन विभाग ने पर्यटन को प्रोत्साहन देने के लिये सितंबर 2002 में ह्यअतुल्य भारतह्ल नाम से एक नया अभियान शुरू किया था। इस अभियान का उद्देश्य भारतीय पर्यटन को वैश्विक मंच पर बढ़ावा देना था। इस अभियान के तहत हिमालय, काश्मीर, वन्य जीव, योग और आयुर्वेद पर अंतर्राष्ट्रीय समूह का ध्यान खींचा गया। देश के पर्यटन क्षेत्र के लिए इस अभियान से पर्यटन की संभावनाओं के नए द्वार खुले हैं। जीवन की आपाधापी, भागदौड़ से हटकर भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों के बीच जीवन के मायने ढूंढ़ने में यायावरी लोगों को सुखद अनुभव हुए हैं। पर्यटन से सत्य की खोज ने उन्हें अनूठे एवं विलक्षण ऐतिहासिक, प्राकृतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक स्थलों से साक्षात्कार करवाया है।

भारत विश्व के पाँच शीर्ष पर्यटक स्थलों में से एक है। विश्व पर्यटन संगठन और वर्ल्ड टूरिज्म एण्ड ट्रैवल काउन्सिल तथा पर्यटन के क्षेत्र में अग्रणीय संगठनों ने भारतीय पर्यटन को सबसे ज्यादा तेजी से विकसित हो रहे क्षेत्र के रूप में बताया है। भारत के प्रति विश्व के पर्यटकों को आकर्षित करने में यात्रा साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अब तक यात्रा साहित्य की दृष्टि से राहुल सांकृत्यायन का मेरी तिब्बत यात्रा, डॉ. भगवतीशरण उपाध्याय का सागर की लहरों पर, कपूरचंद कुलिश का मैं देखता चला गया, धर्मवीर भारती का ढेले पर हिमालय तथा नेहरू का आंखों देखा रूस रामेश्वर टांटिया का विश्व यात्रा के संस्मरण, आचार्य तुलसी का यात्रा साहित्य की ही भांति पुखराज सेठिया की पुस्तक आओ घूमे अपना देश आदि मार्मिक और रोचक यात्रा-वृतांत है। यह यात्रा साहित्य इतनी सरल शैली में यात्रा का इतिहास प्रस्तुत करता है कि पाठक को ऐसा लगता है मानो वह इन लेखकों के साथ ही यात्रायित हो रहा है।

जिस तरह हम भारत को एक गुलदस्ते की भांति अनुभव करते हैं, लगभग वैसा ही विविधरूपी, बहुरंगी और बहुआयामी गुलदस्ता है- भारत का पर्यटन संसार। एक ऐसा गुलदस्ता है जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के पुष्प सुसज्जित हैं। किसी फूल में कश्मीर की लालिमा है तो किसी में कामरूप का जादू। कोई फूल पंजाब की कली संजोए हैं, तो किसी में तमिलनाडु की किसी श्यामा का तरन्नुम। उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, पश्चिम बंगाल और अन्य प्रदेशों के पर्यटन स्थलों को देखना एक सुखद एवं अद्भुत अनुभूति का अहसास है। यह भारत पल-पल परिवर्तित, नितनूतन, बहुआयामी और इन्द्रजाल की हद तक चमत्कारी यथार्थ से परिपूर्ण है। भारत सरकार एवं विभिन्न राज्यों की सरकारें पर्यटन को प्रोत्साहन देने के लिये समय-समय पर अनेक योजनाएं प्रस्तुत करती है। पैलेस ऑन व्हील्स ऐसा ही एक उपक्रम है, जिसे देश की शाही सैलानी रेलगाड़ी का तीसरा हॉस्पिटेलिटी इंडिया इंटरनेशनल अवार्ड दिया गया है। राजस्थान पर्यटन विकास निगम का यह पहियों पर राजमहल दुनिया के पर्यटन मानचित्र पर भारत का नाम रोशन करने वाला माना गया है। अब एक और पैलेस ऑन व्हील्स शुरू किए जाने की योजना है। इसमें पर्यटकों के लिए पहली से भी ज्यादा सुख-सुविधाएं होंगी।

भारत में केवल गोवा, केरल, राजस्थान, उड़ीसा और मध्यप्रदेश में ही पर्यटन के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति नहीं हुई है, बल्कि उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, झारखंड, आंध्र प्रदेश और छत्तीसगढ़ के पर्यटन को भी अच्छा लाभ पहुँचा है। हिमाचल प्रदेश में पिछले वर्ष 6.5 मिलियन पर्यटक गए थे। यह आंकड़ा राज्य की कुल आबादी के लगभग बराबर बैठता है। इन पर्यटकों में से 2.04 लाख पर्यटक विदेशी थे। आंकड़ों के लिहाज से देखें तो प्रदेश ने अपेक्षा से कहीं अधिक सफल प्रदर्शन किया। विश्व पर्यटन संगठन ने भारतीय पर्यटन को सर्वाधिक तेजी से यानि 8.8 फीसदी वार्षिक की दर से विकसित हो रहे उद्योग के रूप में घोषित किया है। पर्यटन देश का तीसरा सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा अर्जित करने वाला उद्योग है। 2004 में पर्यटन से 21 हजार करोड़ रुपए से भी अधिक की आय हुई। देश की कुल श्रम शक्ति में से 6 प्रतिशत को पर्यटन में रोजगार मिला हुआ है। पर्यटन उद्योग की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं।

उन्नत एवं तकनीकी खेती के लिए मशहूर है : गुप्ता फार्म हाउस कटोरिया

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर कई महिलाओं को मिला रोजगार

राजेश पंजिकर (ब्यूरो चीफ)

बांका जिले में राष्ट्रीय बागवानी मिशन के तहत विभिन्न प्रखंडों में कई योजनाएं क्रियान्वित हो रही है जिससे किसान अर्थ उपार्जन के साथ-साथ रोजगार के क्षेत्र में भी आगे बढ़ रहे हैं इसी क्रम में गुप्ता फार्म हाउस कटोरिया में उन्नत तकनीक से खेती के साथ-साथ मौसमी साग सब्जी की खेती भी की जा रही है इससे ना केवल किसान समृद्ध हो रहे हैं बल्कि कई लोगों को रोजगार के अवसर भी प्राप्त हो रहे हैं फार्म के प्रोपराइटर किसान प्रदीप कुमार गुप्ता ने चर्चित बिहार को बताया कि उनके फार्म हाउस में राष्ट्रीय बागवानी मिशन के तहत कई योजनाएं क्रियान्वित है साथ ही साथ सिंचाई के लिए ड्रिप और सिस्टम से भी की सिंचाई की जा रही है. गौपालन के साथ-साथ बकरी पालन ,एवं मत्स्य पालन के लिए भी इस फार्म हाउस में क्रियाशील हैं. गुप्ता फार्म हाउस कटोरिया में मौसमी साग सब्जी में से आलू ,टमाटर ,गोभी, हरा मिर्च के साथ-साथ खीरा ककड़ी एवं बीट, गाजर ,की भी खेती की जा रही है. इस मौसमी फसल को सुरक्षित रखने के लिए गुप्ता फार्म हाउस के प्रोपराइटर प्रदीप कुमार गुप्ता ने सरकार से मांग की है कि क्षेत्र में यदि शीतगृह कोल्ड बन जाए जिससे मौसमी सब्जी सुरक्षित रह सके जिससे उचित बाजार मूल्य भी मिल सके और किसान समृद्ध हो सकेंगे.

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर गुप्ता फार्म हाउस में विशेष सम्मान के तहत कई महिलाओं को रोजगार प्रदान किया गया. जिसमें मौसमी साग सब्जी फसल की तैयारी एवं उसके रखरखाव तक की सारी जिम्मेदारी महिलाओं के हाथों में सुपुर्द कर दिया.

गुप्ता फार्म हाउस में उन्नत एवं नई तकनीक से खेती की जाती है . इसके लिए हमें एवं मत्स्य विभाग, एवं राष्ट्रीय बागवानी मिशन से काफी सहयोग प्राप्त हो रहा है. सरकार से मैं मांग करता हूं कि पैदावार हुए मौसमी फसलों जैसे आलू ,टमाटर, गाजर , प्याज आदि को सुरक्षित रखने हेतु इस क्षेत्र में एक शीतगृह की आवश्यकता है.

- प्रदीप कुमार गुप्ता
प्रोपराइटर
गुप्ता फार्म हाउस कटोरिया बांका

अब शराबियों को धर दबोचेगा पुलिस बाइकर्स टीम

बाइकर्स टीम को हरी झंडी दिखाते डीएम और एसपी बांका।

शराब की सूचना पर अब पुलिस मिनट में पहुंचेगी

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

बांका जिले में शराब की तस्करी रोकने एवं माफियाओं पर नकेल कसने हेतु जिला प्रशासन सख्त हो गई है. इसी क्रम में अब शराब की सूचना पर पुलिस मिनट में पहुंचेगी . पिछले दिनों संध्या डीएम सुहर्ष भगत व एसपी अरविंद कुमार गुप्ता ने समाहरणालय परिसर से मद्य निषेध की बाइकर्स टीम को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया. शराब की रोकथाम के लिए मद्य निषेध विभाग की ओर से अब बाइक से गस्ती की जाएगी. इसके लिए 10 मोटरसाइकिल विभाग को मिला है. जिस पर तैनात जवान शराब की सूचना पर कुछ ही मिनट में पहुंच कर स्थिति का सत्यापन कर कार्रवाई करेंगे. जिलाधिकारी ने मौके पर बताया कि प्रशासन शराब के सेवन व इसकी बिक्री पर रोक लगाने के लिए कृत संकल्पित है. इसके लिए रोजाना सभी सीमा पर सघन जांच चल रहा है. डीएम ने बताया कि मध्य निषेध विभाग की बाइक सवार तीन आम सूचना के आधार पर काम करेगी यह टीम दिन व रात में भी गलती करेगी. साथ ही डीएम और एसपी ने चार ट्रैक्टर को भी हरी झंडी दिखाकर रवाना किया. जिले में हो रहे अवैध बालू खनन पर अपनी निगरानी रखेगी बालू की अवैध खनन को रोकने के लिए बाइकर्सकी टीम भी सक्रिय भूमिका निभायेगी .इस मौके पर एसडीओ डॉ प्रीति ,एसडीपीओ डीसी श्रीवास्तव ,उत्पाद अधीक्षक अरुण कुमार मिश्रा सहित अन्य अधिकारी मौजूद थे.

पिछले दिनों संध्या डीएम सुहर्ष भगत व एसपी अरविंद कुमार गुप्ता ने समाहरणालय परिसर से मद्य निषेध की बाइकर्स टीम को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया. शराब की रोकथाम के लिए मद्य निषेध विभाग की ओर से अब बाइक से गस्ती की जाएगी. इसके लिए 10 मोटरसाइकिल विभाग को मिला है. जिस पर तैनात जवान शराब की सूचना पर कुछ ही मिनट में पहुंच कर स्थिति का सत्यापन कर कार्रवाई करेंगे. जिलाधिकारी ने मौके पर बताया कि प्रशासन शराब के सेवन व इसकी बिक्री पर रोक लगाने के लिए कृत संकल्पित है.

होली (पर्व)

मिटे विभोद स्वजन का जिससे हैं उपचार वहीहोली।
बढ़े प्रेम जन जन में अविरल, है सुखससार यही होली।
पर्व पुरातन सदियों से है भारत इसको चला रहा।
प्रेम गीत गा-गाकर मानव बैर फूट को जला रहा।
गुरूकुल ने जो दिया प्रणाली हितकर वही व्यवस्था है।
धर्म प्रधान मानव का जीवन जिसकी चार अवस्था है।
सत्य मनुज का पहला जीवन मानव संज्ञा इसे मिला।
दूजा जीवन पाठ अहिंसा, कर दजे का सदा भला।
तीजा जीवन क्षमा-शील,कर्त्तव्य जगत का पालन हो।
चौथा जीवन भाव दय का सेवा बल अनुशासन हो।
जले अश्रद्धा-रूप-होलिका कालिन्गन की ज्वाला में।
बच जाए विश्वास रूप-प्रह्लाद-लयी साहस भरने।
मधुर भाव नृसिंह-एकता-रूप समद्धि खंभ खड़े।
होकर प्रगट व्यक्ति हरिहर ने हिरण्यकश्यपप्राणहरे।
आया फिर संदेश नया लेकर यह न बल विहान।
ऋतुराज, बसंत अनंग सदा उत्प्रेरित करता प्राण।

डॉ मल्लेश्वरी प्रसाद सिंह विद्याभूषण

बिहार विधान परिषद के चुनाव की तिथि घोषित

कार्यालय बेश्म में प्रेस वार्ता करते जिलाधिकारी सुहार्ष भगत.

9 से 16 मार्च तक होगा नामांकन 4 अप्रैल को चुनाव 7 अप्रैल को होगी मतगणना

निर्वाचन आयोग ने बिहार विधान परिषद चुनाव की तिथि घोषित कर दी है

राजेश पंजिकर (ब्यूरो चीफ)

जिलाधिकारी सुहर्ष भगत ने कार्यालय बेश्म में एम एल सी चुनाव को लेकर प्रेस वार्ता आयोजित कर पत्रकारों को जानकारी देते हुए, बताया कि चुनाव आयोग द्वारा जारी किए गए निर्देश के आलोक में चुनाव की तिथि घोषित होने के उपरांत सभी निर्वाचन क्षेत्रों में आदर्श आचार संहिता लागू हो गई है. संभावित प्रत्याशी 9 मार्च से 16 मार्च तक नामांकन दाखिल कर सकेंगे .17 मार्च को नामांकन पत्रों की स्कूटनी होगी. 21 मार्च तक उम्मीदवार अपना नामांकन पत्र वापस ले सकेंगे. तथा 4 अप्रैल को जिले की एक 11 बूथों पर वोटिंग होगी .जिसको लेकर तैयारी शुरू कर दी गई है. मतदान सुबह 8:00 बजे से प्रारंभ होकर शाम 4:00 बजे तक चलेगा. जबकि मतगणना 7 अप्रैल को होगी. 11 अप्रैल तक चुनावी प्रक्रिया जारी रहेगी. जिलाधिकारी सुहर्ष भगत ने आगे बताया कि चुनावी प्रक्रिया शुरू होने के साथ ही सभी संबंधित कोषांग का गठन जल्द से जल्द कर दिया जाएगा. ताकि कोषांग द्वारा किए जाने वाले कार्य ससमय पूरा किया जा सके. एमएलसी चुनाव में एसडीएम को अ.फड की जिम्मेदारी दी गई है. नामांकन के साथ-साथ वोटों की गिनती के बारे में बताया गया ,कि भागलपुर बांका स्थानीय प्राधिकार के एमएलसी चुनाव में संभावित प्रत्याशियों का नामांकन भागलपुर में होगा. जबकि वोट के बाद मतों की गिनती भी भागलपुर में ही कराई जाएगी. चुनाव को लेकर आचार आदर्श आचार संगीता और कोविड-19 एंड का पालन करने का निर्देश दिया गया .वही 11 बूथों पर 2912 मतदाता करेंगे मताधिकार का प्रयोग भागलपुर बांका स्थानीय प्राधिकार निर्वाचन क्षेत्र में एमएलसी चुनाव को लेकर बांका में चुनावी बिगुल बज चुका है.जिले के सभी 11 प्रखंडमुख्यालय में मतदान केंद्र बनाया जाएगा .इस प्रकार 11 प्रखंड के 2912 मतदाता अपने-अपने प्रखंड मुख्यालय में अपने- अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकेंगे .इस बार 2868 पंचायत प्रतिनिधि मतदान करेंगे जबकि बांका नगर परिषद व अमरपुर नगर परिषद के कुल 38 पार्षद चुनाव में अपना वोट डालेंगे. इसके अतिरिक्त जिले के 5 विधानसभा क्षेत्र के विधायक के साथ-साथ बांका सांसद भी एमएलसी चुनाव में अपना वोट डालेंगे.

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर भूमिहीनों को मिली जमीन

समाहरणालय सभागार में महिला दिवस के अवसर पर भव्य कार्यक्रम आयोजित

राजेश पंजिकर (ब्यूरो चीफ)

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर समाहरणालय सभागार में भव्य समारोह का आयोजन जिला प्रशासन के द्वारा किया गया किया. कार्यक्रम का शुभारंभ जिला पदाधिकारी सुहर्ष भगत व अन्य वरिष्ठ पदाधिकारियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर इस कार्यक्रम का शुभारंभ किया. महिला दिवस के अवसर पर 1020भूमिहीन महिलाओं को 3 डिसमिल जमीन का पर्चा जिला पदाधिकारी सुहर्ष भगत के द्वारा बांटा गया. जिलाधिकारी सुहास भगत ने बांका प्रखंड के दर्जनों लाभुकों के बीच एप्स पर्चा वितरित किया इसके साथ ही सभी प्रखंडों में भी वीडीयो व सीओ ने शिविर आयोजित कर पर्चे बांटे. भूमि सुधार से समाज सुधार की ओर प्रशासन ने कदम बढ़ाते हुए 30. 86 एकड़ जमीन खरीद कर सभी 1020 लाभुकों के बीच वितरण किया जिलाधिकारी ने आगे बतायाने आगे बताया कि इसके लिए विगत 3 माह से काम चल रहा था. आदर्श गांव के लिए कटोरिया फुल्लीडुमर बौसी एवं अमरपुर में भी काम चल रहा है यहां स्कूल, अस्पताल, सामुदायिक शौचालय सहित सभी सुविधाएं उपलब्ध हो होगी. प्रशासन के द्वारा महिला दिवस के अवसर पर महिलाओं का यह सपना पूरा होने पर अमरपुर की खुशबू देवी व चंदा देवी ने प्रशासन के प्रति आभार प्रकट किया. साथ ही साथ फुल्लीडुमर की सुइयां देवी ने बताया कि उनका परिवार खानाबदोश की तरह जिंदगी जी रहा था. प्रशासन की पहल से उन्हें जमीन मिली है इसके लिए वे सदैव सरकार की आभारी रहूंगी. अमरपुरप्रखंड के बनबसा गांव की उषा देवी ने बताया कि प्रशासन की यह पहल उसके लिए किसी सपने से कम नहीं है .पर्चा मिलते ही उनका भूमिहीन होने की बदनसीबी मिट गई है . फुल्लीडुमर प्रखंड के प्की ललिता देवी ने बताया कि उनको पिछली तीन पीढ़ियां घर के ही था ,प्रशासन द्वारा जमीन दी गई अब घर बनाने का सपना साकार हुआ है. इसके साथ ही बैंक ऑफ बड़ौदा, बुनियाद केंद्र ,एवं ग्रामीण क्षेत्रों में अन्य कार्यालयों मे कई कार्यक्रम आयोजित कर महिला दिवस के अवसर पर कई महिलाओं को सम्मानित किया गया. इस कार्यक्रम में जिलाधिकारी के साथ एडीएम माधव कुमार, प्रभारी डीडीसी एसडीएम डॉ प्रीति ,डीसीएलआर पारुल प्रिया ,सहायक राजस्व पदाधिकारी स्वाति कुमारी, डीपी हेमा चौधरी एवं शिक्षा विभाग के अन्य पदाधिकारी गण मौजूद थे.अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर बुनियाद केंद्र बांका में सामाजिक सुरक्षा कोषांग एवं बुनियाद केंद्र के द्वारा महिला दिवस का आयोजन किया गया. इसमें मुख्य रूप से विधवा एवं वृद्ध महिलाएं शामिल हुई जिला सामाजिक सुरक्षा कोषांग के सहायक निदेशक श्रेया कुमारी ने वृद्ध एवं विधवा महिलाओं को प्रशस्ति पत्र तथा शॉल देकर सम्मानित किया .बुनियाद केंद्र के जिला प्रबंधक मुनमुन पांडे द्वारा आप सभी महिलाओं को वर्ष एवं कुछ महिलाओं को चश्मा देकर सम्मानित किया गया इसके अतिरिक्त बुनियाद केंद्र में बुद्धि एवं विधवा महिलाओं को थेरेपी सेवा जो कि बिल्कुल मुफ्त है के बारे में भी जानकारी दी.

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर लाभुकों को डमी चेक प्रदान करते हुए जिलाधिकारी सुहर्ष भगत।

बुनियाद केंद्र बांका में जरूरतमंदों महिला को चश्मा वितरण करती मुनमुन पांडे जिला प्रबंधक

कार्यक्रम में शिरकत करते जिलाधिकारी व अन्य पदाधिकारीगण।

हर क्षेत्र में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर रही है : डॉ. साहू

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर कृषि विज्ञान केन्द्र, बांका में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें 71 से अधिक महिला किसान एवं बालिकाएँ उपस्थित हुए। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सस्य वैज्ञानिक डॉ. रघुवर साहू ने कहा कि आजकल महिलाएं घर की चहारदिवारी से निकलकर हर क्षेत्र में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर रही है। बाँका जिले के महिला किसान भी कृषि के क्षेत्र में भी आगे आकर एवं कृषि विज्ञान केन्द्र से प्रशिक्षण प्राप्त कर नवीनतम तकनीकी से खेती, बागवानी, मधुमक्खीपालन, मशरूम उत्पादन एवं पशुपालन कर आत्मनिर्भर हो रहे है। सफर लाओं से प्रेरणा लेकर बाकी सभी महिलाओं को आगे बढ़कर परिवार की आय बढ़ाने में सहयोग करना चाहिए, तभी हमारा जिला, राज्य और फिर देश आर्थिक रूप से मजबूत होगा।

मृदा वैज्ञानिक श्री संजय कुमार मंडल ने कहा कि महिलाओं को संकोच त्यागकर आगे बढ़ने का आह्वान किया कि आज महिलाएं हवाई जहाज से लेकर ऑटो रिक्शा चला रही है। उन्होंने बालिकाओं की शि भी ध्यान देने की बात करते हुए कहा कि यदि बालिकाएँ शिक्षित होगी तभी उनमे सकोच खत्म होगा और हर क्षेत्र में आगे बढेगी तथा दसरी वालिकाओं के लिए प्रेरणा बनेगी। मौसम वैज्ञानिक सुश्री जुबुली साहू ने कहा कि महिलाओं को पौष्टिकता पर खास ध्यान देने की आवश्यकता है, क्योंकि वे स्वस्थ होंगी तभी सभी कामों तत्परतापूर्वक कर सकेंगी। लोगों को पौष्टिक तत्व रसोईघर से प्राप्त होती है। इसके लिए उन्होंने किचेन गार्डेन की वकालत करते हुए कहा कि यदि घर के पास छोटे-छोटे क्षेत्र में यदि सभी प्रकार की सब्जियाँ, फल इत्यादि की खेती करते हैं, तो उन्हें और पूरे परिवार को सालोभर पौष्टिक भोजन मिलेगा। इससे पूरे परिवार का स्वास्थ्य ठीक रहेगा और अपना काम मनोयोग से करते रहेंगे। इस अवसर पर केन्द्र पर स्थित किचेन गाइन दिखाया गया एवं सब्जी पौधे का वितरण किया गया। इस अवसर पर केन्द्र के कर्मी श्री सज्जन कुमार झा, श्री राजीव रंजन, श्री देवेन्द्र कुमार सिंह इत्यादि मौजूद थे।

बंदोबस्त जमीन के साथ बिहार सरकार के जमीन की नहीं रुक रही है बिक्री

आमोद दुबे

बिहार सरकार के आदेश पर जिला प्रशासन द्वारा वैसे दलित परिवार को जिसके पास अपनी जमीन नही है उसे पैसा देकर जमीन खरीदने और आवास बनाने में सहयोग करने की पहल की जा रही है। वहीं चांदन प्रखंड में कई दर्जन ऐसे परिवार भी है जो सरकारी जमीन का फर्जी कागजात बनवा कर जमाबंदी दर्ज करवा कर उस जमीन पर कब्जा कर बैठे है। वही दूसरी ही गरीब परिवार को 70 के दशक में सेकड़ो परिवार को एक एक एकड़ जमीन बंदोबस्त किया गया है। जो जमीन किसी भी हालत में अहस्तांतरणीय होता है। लेकिन इस जमीन की भी भूमाफिया की मिलीभगत में बिक्री जारी है। जिसमे कुछ की जमाबंदी भी दर्ज हो गया है। जबकि अधिकतर जमीन पर झारखंड के बड़े बड़े लोगो का मकान बन चुका है या बनने की तैयारी की जा रही है। इस बंदोबस्त जमीन की सबसे अधिक बिक्री बिरनिया पंचायत के दर्दमारा सीमा से सिलजोरी मोड़ तक देवघर चांदन पक्की सड़क के पश्चिम दिशा में अवस्थित है। सरकार द्वारा बंदोबस्त की गई एक एक एकड़ जमीन में से उस समय बनने वाला हरिजन कालोनी को छोड़ कई परिवारों ने अपनी जमीन भूमाफिया के हाथों बेच दिया जिसे भूमाफिया द्वारा ऊंची कीमत पर स्थानीय और

सरकार द्वारा बंदोबस्त की गई एक एक एकड़ जमीन में से उस समय बनने वाला हरिजन कालोनी को छोड़ कई परिवारों ने अपनी जमीन भूमाफिया के हाथों बेच दिया जिसे भूमाफिया द्वारा ऊंची कीमत पर स्थानीय और झारखंड के कुछ लोगो के पास बेच कर मालामाल हो गये है। वही दूसरी को खतियान पूरी तरह बिहार सरकार की जमीन को फर्जी,बंदोबस्ती, हुकमनमा,पट्टा, दानपत्र बनवा कर एक लोग अपने नाम रसीद कटा रहे है।इसमे कई परिवार ऐसे है जो अपने परिवार के हर सदस्यों के नाम जमाबंदी दर्ज करा कर उसे बेच चुके है। या बेचने की तैयारी कर रहे है। सरकारी पोखर की जमाबंदी अजीम शेख के नाम से दर्ज होने की खबर पर जिलाधिकारी काफी सख्त नजर आए और अंचलाधिकारी का वेतन बन्द कर पूरी तरह सरकारी जमीन का वैसे सभी जमाबंदी की जांच कर उसे रद्द करने का आदेश दिया है।

झारखंड के कुछ लोगो के पास बेच कर मालामाल हो गये है। वही दूसरी को खतियान पूरी तरह बिहार सरकार की जमीन को फर्जी,बंदोबस्ती, हुकमनमा,पट्टा, दानपत्र बनवा कर एक लोग अपने नाम रसीद कटा रहे है।इसमे कई परिवार ऐसे है जो अपने परिवार के हर सदस्यों के नाम जमाबंदी दर्ज करा कर उसे बेच चुके है। या बेचने की तैयारी कर रहे है। सरकारी पोखर की जमाबंदी अजीम शेख के नाम से दर्ज होने की खबर पर जिलाधिकारी काफी सख्त नजर आए और अंचलाधिकारी का वेतन बन्द कर पूरी तरह सरकारी जमीन का वैसे सभी जमाबंदी की जांच कर उसे रद्द करने का आदेश दिया है। चांदन प्रखंड में कई भूमाफिया ऐसे हैं जो कर्मचारी और सीआई को प्रभावित कर मोटी रकम देकर अपने-अपने नाम कई जमाबंदी दर्ज करा चुके हैं ।बिहार सरकार के द्वारा किसी भी व्यक्ति को 1 एकड़ से अधिक जमीन बंदोबस्त करने का प्रावधान नहीं है ।लेकिन इस प्रखंड में कई ऐसी जमाबंदी भी चल रहे हैं जिसमें सरकार के द्वारा 7 एकड़ से लेकर 10 एकड़ तक जमीन बंदोबस्त का फर्जी कागजात बनाया गया है। और उसकी जमाबंदी भी खुलेआम चल रही है। अब इस पर सख्ती आने के बाद ऐसे सभी भू माफिया पर मामला दर्ज होने की बात भी चल रही है ।इस संबंध में सीओ प्रशांत शांडिल्य ने बताया कि कई दर्जन जमाबंदी का पता लगाकर उसे रद्द करने के लिए रिपोर्ट अपर समाहर्ता को भेजा जा रहा है।

योजना राशि गबन में दो मामला दर्ज होने के बाद अन्य पंचायतों में हड़कंप

20 जनवरी 22 को 14 वी एवें पंचम राज्य वित्त आयोग की 24 लाख एक हजार पांच सौ निकासी के बाबजुद कार्य नही कराने का आरोप लगाया गया है। इस संबंध में कई बार प्रखंड कार्यालय में अभिलेख जमा करने के आदेश के बाबजुद कार्यालय में अभिलेख जमा नही करने के कारण मामला दर्ज कराया गया। वही दूसरी प्राथमिकी दक्षिणी कसवावसिला पंचायत में पूर्व मुखिया उषा किरण सहित तीन कार्यक्रम पदाधिकारी,दो कनीय अभियंता, दो रोजगार सेवक पर 24 लाख की राशि गबन का मामला दर्ज हुआ है जिसमे ग्राम भेलवा ऊपर टोला मे राजकुमार शर्मा के घर से प्रयाग सिंह के घर तक पीसीसी सड़क निर्माण योजना संख्या 58/18-19 में उठाव राशि से कम काम करने के अलावे जिओटेग वाली जगह को छोड़ दूसरी जगह काम का आरोप है।

आमोद दुबे

चांदन प्रखंड के बोड़ा सुईया पंचायत के पंचायत सचिव पर 29 लाख की राशि गबन के बाद दक्षिणी कसवावसिला के मुखिया शतक कुल आठ पर योजना के अनुरूप काम नही करने को लेकर 24 लाख की राशि गबन का मामला दर्ज होने के बाद सभी पंचायत पर योजना की लूट में शामिल सभी सरकारी कर्मी और पंचायत प्रतिनिधियों की नींद उड़ गई है। जबकि सभी आरोपी फरार बताये जा रहे है। वही पुलिसे लगातार गिरफ्तारी का प्रयास कर रही है। वही दूसरी ओर सबसे पहले चांदन पंचायत के पंचायते सहित अन्य सरकारी योजना की जांच की मांग भाजपा नेता अरविंद पांडेय और जदयू नेता रजत सिंहा और जदयू प्रखंड अध्यक्ष दीपक कुशवाहो द्वारा किया जा रहा है।बोड़ा सुईया में जहां पंचायत सचिव अमरेंद्र मिश्रा पर बोड़ा सुईया के पंचायत सरकार भवन के उपस्कर की खरीद के लिए 18 अप्रैल 20 को पांच लाख की राशि निकालने के बाबजुद कोई उपस्कर खरीद नही किया गया। जबकि 20 जनवरी 22 को 14 वी एवें पंचम राज्य वित्त आयोग की 24 लाख एक हजार पांच सौ निकासी के बाबजुद कार्य नही कराने का आरोप लगाया गया है। इस संबंध में कई बार प्रखंड कार्यालय में अभिलेख जमा करने के आदेश के बाबजुद कार्यालय में अभिलेख जमा नही करने के कारण मामला दर्ज कराया गया। वही दूसरी प्राथमिकी दक्षिणी कसवावसिला पंचायत में पूर्व मुखिया उषा किरण सहित तीन कार्यक्रम पदाधिकारी,दो कनीय अभियंता, दो रोजगार सेवक पर 24 लाख की राशि गबन का मामला दर्ज हुआ है जिसमे ग्राम भेलवा ऊपर टोला मे राजकुमार शर्मा के घर से प्रयाग सिंह के घर तक पीसीसी सड़क निर्माण योजना संख्या 58/18-19 में उठाव राशि से कम काम करने के अलावे जिओटेग वाली जगह को छोड़ दूसरी जगह काम का आरोप है। दूसरी योजना ग्राम भेलवा ऊपर टोला में गणेश वर्णवाल के घर से मुरारी सिह के घर होकर अंबेडकर चौपाल तक पीसीसी गली के निर्माण में उठाव 9,89,800 जबकि नापी के अनुसार काम 6,45,573 की ही हुई है।ग्राम आकाकुरा में मेन रोड से गलगला तक सड़क निर्माण में पूर्व से कार्यपालक अभियंता ग्रामीण विकास विभाग द्वारा किये गए एक किलोमीटर कार्य को अपना दिखाकर राशि उठाव का आरोप है।सिर्फ दो पंचायत की योजना की जांच में इस प्रकार के गबन से स्पस्ट है कि अन्य पंचायतों में भी इस प्रकार की लूट को अंजाम दिया गया है। जिसमे चांदन, बिरनिया,दक्षिणी बारने,सहित सभी पंचायतों के योजना की जांच करने पर बहुत बड़े गबन सामने आने की संभावना है।

समस्त जिलेवासियों को होली की हार्दिक शुभकामनाएं

देवकांत सिंह उर्फ भगत जी

हेमतपुर पंचायत

कोरिया गांव

शिक्षा जगत में उत्कृष्ट भूमिका के लिए शिक्षिकाओं को मिला सम्मान

महिला दिवस के अवसर पर जिला प्रशासन के द्वारा किया गया सम्मानित

राजेश पंजिकार(ब्यूरो चीफ)

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर समाहरणालय सभागार में आयोजित समारोह में शिक्षा विभाग के चयनित शिक्षक पुराना प्रधानाध्यापक साक्षर महिलाओं को सम्मानित किया गया एसडीएम डॉ प्रीति डीसी ऑल डीसीएलआर पारुल प्रिया वरीय उप समाहर्ता स्वाति आदि महिला अधिकारियों ने इन्हें सम्मानित किया शिक्षा विभाग ने बेहतर कार्य करने वाली माध्यमिक विद्यालय की दो प्रधानाध्यापिका , विद्यालयों की दो शिक्षिका के साथ कस्तूरबा संचालन वार्डन टोला सेवक और साक्षर महिलाओं को सम्मानित किया गया पहला सम्मान शहर के एस एस ए बालिका इंटर स्कूल की प्रधानाध्यापिका अध्यापिका वाणी सिंह को दिया गया शिक्षा विभाग ने इससे जिला का इकलौता अनुकरणीय विद्यालय घोषित किया है विद्यालय के सफल संचालन के लिए बाणी सिंह को सम्मानित किया गया. इसके अलावा दो शिक्षिका हेमलता इंटर शिक्षक प्रोजेक्ट विद्यालय चांदन, व श्वेता को डायट व्याख्याता में पिछले सप्ताह सफल होने पर सम्मानित किया गया सम्मानित होने वाले सबसे अधिक उम्र की साक्षर पम्मी देवी साक्षर महिला ग्राम डांड़ाऔर सबसे कम उम्र की साक्षर रीना देवी साक्षर महिला ग्राम डांड़ा जिला बांकाभी शामिल है .पढ़ने के तरीकों को लेकर पहले मुख्यमंत्री से सम्मानित रूबी कुमारी शिक्षक मध्य विद्यालय सरौनी प्रखंड बौसी जिला बांका को भी सम्मानित किया गया जिन्होंने अपने

शिक्षिका हेमलता सम्मान पत्र प्राप्त करते हुए।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर सभी प्रशासनिक अधिकारियों के साथ सम्मानित शिक्षिकाएं।

शिक्षिका रूबी कुमारी सम्मान पत्र प्राप्त करते हुए(

विद्यालय के सफल संचालन के लिए बाणी सिंह को सम्मानित किया गया. इसके अलावा दो शिक्षिका हेमलता इंटर शिक्षक प्रोजेक्ट विद्यालय चांदन, व श्वेता को डायट व्याख्याता में पिछले सप्ताह सफल होने पर सम्मानित किया गया सम्मानित होने वाले सबसे अधिक उम्र की साक्षर पम्मी देवी साक्षर महिला ग्राम डांड़ाऔर सबसे कम उम्र की साक्षर रीना देवी साक्षर महिला ग्राम डांड़ा जिला बांकाभी शामिल है .पढ़ने के तरीकों को लेकर पहले मुख्यमंत्री से सम्मानित रूबी कुमारी शिक्षक मध्य विद्यालय सरौनी प्रखंड बौसी जिला बांका को भी सम्मानित किया गया।

शिक्षा के तौर तरीकों पठन-पाठन के तौर तरीकों से नामी-गिरामी हस्तियां से भी घन्यबाद एवं प्रोत्साहन मिला. इसके अलावा सुमन सिंह प्रधानाध्यापिका प्रोजेक्ट बालिका उच्च विद्यालय चांदन को शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट भूमिका और पूर्व में मुख्यमंत्री से सम्मानित को भी जिला प्रशासन के द्वारा सम्मानित किया गया. श्वेता सुमन शिक्षक उच्च विद्यालय चंगेरी मिजार्पुर , हेमलता इंटर शिक्षक प्रोजेक्ट विद्यालय चांदन ,सुरभि रानी प्रधानाध्यापिका मध्य विद्यालय कुल्हड़िया अन्ना लकड़ा वार्डन कस्तूरबा विद्यालय चांदन, मंजू दास टोला, सेवक मध्य विद्यालय नावाडीह को भी सम्मानित किया गया.

शिक्षा जगत में उत्कृष्ट कार्य हेतु दस महिलाओं को जिला प्रशासन के द्वारा सम्मानित किया गया.

एसडीएम डॉ प्रीति डीसीएलआर पारुल प्रिया, वरीय उप समाहर्ता स्वाति ,एडीएम माधव कुमार सिंह, डीडीसी महफूज आलम डीपीओ एसएसए निशीथ प्रवीण सिंह आदि प्रमुख रूप से मौजूद थे.

समस्त जिलेवासियों को रंगों और भाईचारे का त्योहार होली की हार्दिक शुभकामनाएं

पुतुल कुमारी

पूर्व सांसद

बांका

समस्त जिलेवासियों को रंगों और भाईचारे का त्योहार होली की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रदीप कुमार गुप्ता

निवर्तमान मुखिया

ग्राम पंचायत

कटोरिया

जिला- बांका

समस्त जिलेवासियों को रंगों और भाईचारे का त्योहार होली की हार्दिक शुभकामनाएं

आई.सी.डी.एस, बांका

समस्त जिलेवासियों को होली की हार्दिक शुभकामनाएं

रविशंकर कुमार

कार्यपालक अभियंता
डीआरडीए बांका

समस्त जिलेवासियों को होली की हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ लक्ष्मण पंडित

एम.बी.बी.एस.
एम.एस. सर्जरी
सदर, अस्पताल, बांका

समस्त जिलेवासियों को होली की हार्दिक शुभकामनाएं

संजय कुमार किस्कु

जिला मत्स्य
पदाधिकारी
बांका

समस्त जिलेवासियों को होली की हार्दिक शुभकामनाएं

कुमार रंजन

खनिज विकास
पदाधिकारी
बांका

समस्त जिलेवासियों को होली की हार्दिक शुभकामनाएं

वैद्यनाथ सिंह

जिला
निबंधन
पदाधिकारी
बांका

समस्त जिलेवासियों को नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

अवधेशकुमार

जिला खनन
निरीक्षक, बांका

संजय प्रसाद

जिला खनन
निरीक्षक, बांका

समस्त जिलेवासियों को नव वर्ष, मकर संक्रांति एवं गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

अरुण कुमार

M.V.I
बांका

समस्त जिलेवासियों को होली की हार्दिक शुभकामनाएं

अजय कुमार

सहायक अभियंता
डीआरडीए
बांका

समस्त जिलेवासियों को होली की हार्दिक शुभकामनाएं

उत्तम कुमार

बांका

समस्त जिलेवासियों को होली की हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ. सरयू प्रसाद यादव

अध्यक्ष कुसाहा
वन समिति
जिला- बांका

समस्त जिलेवासियों को होली की हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ बलराम मंडल

D.E.H(Redg no 23631
रजि नं-23631
ग्राम - दुधारी
जिला- बांका
9939992228

समस्त जिलेवासियों को होली की हार्दिक शुभकामनाएं

आचार्य रघुनंदन शास्त्री

आवासीय मार्शल
एकेडमी, खेसर, बांका,
मो.:8002850364

समस्त जिलेवासियों को होली की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रतिज्ञा कुमारी

प्रोपराईटर
इंडियन गैस एजेंसी
बांका

समस्त जिलेवासियों को होली की हार्दिक शुभकामनाएं

बेबी कुमारी घोष

वार्ड पार्षद
वार्ड नं-11
नगर परिषद
बांका

समस्त जिलेवासियों को होली की हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ मौलेश्वरी सिंह विद्याभूषण

M.H.M.B.B.S.
(Darbhanga) R.M.P.H.
(Patna), D.C.P. (Ranchi)
Regd. No. 16261 दुधारी
बांका, मो. 9955601568